व्यंजना

2019-20

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित "A" + ग्रैड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2019-20

डॉ. थानसिंह वर्मा डॉ. अनुपमा कश्यप डॉ. सुनीता मैथ्यु डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव

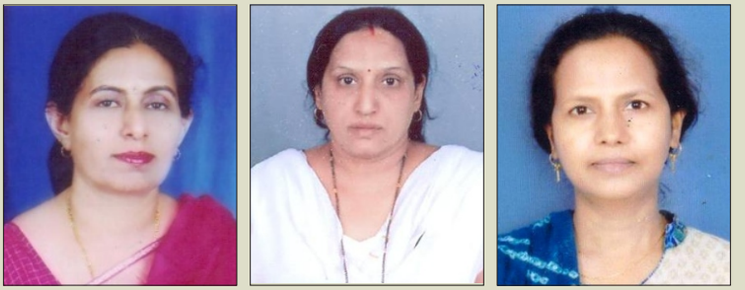

डॉ. तरलोचन कौर डॉ. ज्योति धारकर डॉ. संजू सिन्हा

प्राचार्य एवं छात्रसंघ के पदाधिकारी 2019-20

बायें से - छात्रसंघ उपाध्यक्ष कु. प्रगति अग्रवाल, अध्यक्ष कु.शफिया परवीन, छात्रसंघ प्रभारी
डॉ. एस.एन. झा, प्राचार्य एवं संरक्षक डॉ. आर.एन. सिंह, सचिव कु. किरण साव

महाविद्यालय वार्षिक स्नेह सम्मेलन 2019-20

प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह, मुख्य अतिथि मान. मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू जी का स्वागत करते हुए

छात्र संघ प्रभारी डॉ. एस.एन. झा, मुख्य अतिथि मान. मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू जी का स्वागत करते हुए

मान. मंत्री श्री ताम्रध्वज साहू एवं विधायक दुर्ग श्री अरुण वोरा पुरस्कार वितरण करते हुए

महाविद्यालय के छात्रों द्वारा पंथी नृत्य प्रस्तुत करते हुए

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा समूह नृत्य की प्रस्तुति

महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा नाटक की प्रस्तुति

गीतिविधियाँ - 2019-20

श्री ताम्रध्वज साहू, (लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व) मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन एवं विधायक श्री अरूण वोरा महाविद्यालय में सर्वोच्च अंक अर्जित करने हेतु तामस्कर स्वर्ण पदक प्रदान करते हुए

महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति

विज्ञान एवं प्रौद्योगिक विभाग नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित इंस्पायर इटर्नशिप साईंस कैम्प का आयोजन महाविद्यालय में किया गया। इसी कैम्प के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in

व्यजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2019-20

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित
'A' + ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक
डॉ. आर. एन. सिंह
प्राचार्य

संपादक मंडल

डॉ. थानसिंह वर्मा

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. सुनीता मैथ्यु

डॉ. प्रशान्त श्रीवास्तव

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. संजू सिन्हा

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय 03

02. कविता - नहीं मार पाओगे तुम - रवीन्द्रनाथ टैगोर 04

03. Relevance of Gandhi - Dr. Suchitra Gupta, ... 06

04. गाँधी और स्वदेशी - प्रियम वैष्णव 08

05. गांधी अतीत नहीं भविष्य भी है - चुम्मन लाल मिरझा, ...10

06. गाँधी जी पर महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं की पुरस्कृत कविताएँ 14

07. वैज्ञानिक चेतना और साहित्य - गौहर रज़ा का व्याख्यान - 20

08. भारत में संसदीय कार्यविधि की झलक -डॉ. (श्रीमती) वेदवती मण्डावी 26

09. प्रकृति व इतिहास की क्रीड़ा स्थली - पूर्वी उड़ीसा - प्रियम वैष्णव, ... 29

10. अंतरिक्ष कार्यक्रम के पितामह -डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा 35

11. महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं की कविताएँ 38

12. छत्तीसगढ़ी लोकगाथा-भर्तृहरि का प्रभाव - प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान 55

13. जनसंख्या विस्फोट - डॉ. आई.एस. चन्द्राकर, ... 57

14. Positive thinking Bears Positive Results - Dr. Abhishek Kumar Misra 61

15. प्रकृति से समृद्धि - वैष्णवी याज्ञिक 63

16. लघु कथा - किसान का गधा-दीक्षा साहू, ...65

17. सोशल मीडिया और समाज - आशीष देवांगन, ...66

18. अपने अतीत को भूलिए नहीं - प्रिंस कुमार कुशावाहा 69

19. छत्तीसगढ़ी का साहित्यिक परिवेश और भविष्य - लोमश जायसवाल, ...71

20. शताब्दी स्मरण.....76

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

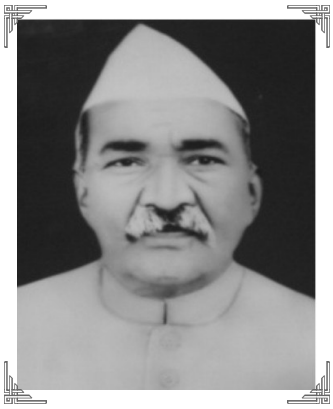

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पढ़े । नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ । इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये । ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नही मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े । शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया । ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था । तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया । स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे । शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

2019-20

नहीं मार पाओगे तुम

यह लड़ाई ईश्वर के ख़िलाफ़ लड़ाई है,
जिसमें भाई भाई को मारता है

जो धर्म के नाम पर दुश्मनी पालता है
वह भगवान को अर्ध्य से वंचित करता है

जिस अंधेरे में भाई भाई को नहीं देख सकता है
उस अंधेरे का अंधा तो स्वयं अपने को नहीं
देख सकता

जिस उजाले में भाई भाई को देख सकता है
उसमें ही ईश्वर का हँसता हुआ चेहरा
दिखाई पड़ सकता है

जब भाई के प्रेम में दिल भीग जाता है,
तब अपने-आप ईश्वर को प्रणाम करने
के लिये हाथ जुड़ जाते हैं ।

कवि - रवीन्द्रनाथ टैगोर
अनुवादक - मोहनदास करमचंद गाँधी

150 बरस के गाँधी

''जब तक विनम्रता और सीखने की इच्छा न हो तब तक कोई ज्ञान अर्जित नहीं किया जा सकता ।''

2019-20

Relevance of Gandhi

Dr. Suchitra Gupta, (Deptt. of English)

72 years after independence, Gandhi is being remembered with all zeal and fervor. Through out India in all government institutes Gandhi's 150th birth anniversary is being celebrated In the schools and colleges of Chhattisgarh every month a programme on Gandhian values and ideologies is being organized for the students, as per the orders of the government. Why? What led to this resurgence of the celebration Gandhian ideologies and values when all around we see a surge in violence, inequality, greed, hatred, divide, animosity, intolerance, disharmony, corruption, durg addiction and every other things which do not match with Gandhian ideology.

'Dandi Salt March" the most popular civil disobedience call made by the Mahatma on 12the March, 1930, celebrates its 90th anniversary this year. This historic march is a brilliant example of Gandhi's fight for truth and justice through non-violence. Gandhi understood that truth cannot be achieved by inificting harm and pain to the opponent. In his autobiography "My Experiments with Truth" Gandhi gives a very detailed analysis of truth. He adopted the policy of truth and non-violence in his struggle for freedom against the mighty British and he succeeded. He broke the Salt Law through non-violence and succeeded in exposing the satanic rule of the British. He went to the extent of punishing himself to expose the wrong. Gandhism minus morality is a farce. Forceful strikes, pretentious sequel fasts and misguided protests shows how the world has strayed from Gandhi's truth and non-violence.

" Simple living and high thinking" best defines Gandhism. Gandhism

appears to he simple to everyone but practicing it in day to day life is difficult. Remaining faithful, tolerant cooperation movement in the middle after satyagrahis indulged in violence at Chauri Chaura police station. Gandhi believed that truth empowers whereas lies weaken person. This principle of truth fulness to self and to the world is essential for students in the current context to excel in future life.

The world today is in the grip of terrorism, violence and naked dance of death, Gandhian idea of non-violence was never more relevant than it is today.

The secular ideologies of Gandhi are the dire need of today Gandhism means being tolerant towards all religious. Tolerance in society will help in neutralizing the ethnocentric bias in the glove that is taking place day by day on the day on the basis of religion, caste, region etc.

Gandhian concept of cleanliness, untouchability equality, literacy, self-reliance, self-control, self sustenance are the major national drives that are functioning at national level.

We have still miles to go to attain what Gandhi professed, the India of his dreams - a peaceful, self reliant India.

Gandhi and Gandhism are always more than what we know. His political contribution offered us Independence but his ideologies continue to enlighten India and the world. Gandhian ideology is the midas touch to eradicate the social, political, ethical, spiritual ills rampant in society. Gandhi and his ideology are both temporal and timeless and shall continue to inspire and guide the future generation on the righteous path.

000

गाँधी और स्वदेशी

प्रियम वैष्णव, एम.ए. (इतिहास) चतुर्थ सेमेस्टर

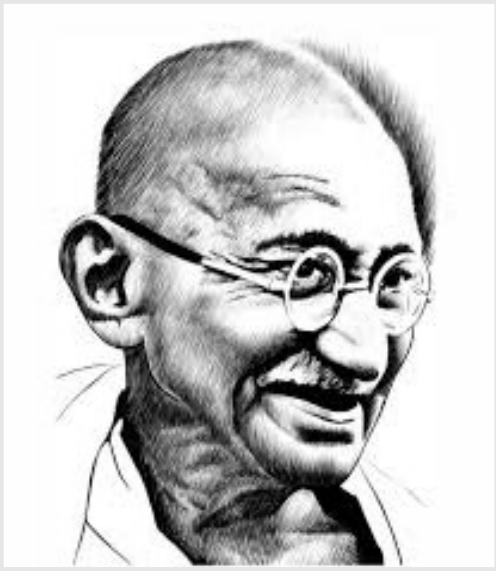

मोहान दास करमचंद गाँधी भारत के युगप्रवर्तक विचारकों में से एक हैं । जिन्होंने ना केवल अपने विचारों से अपितु अपने कर्मों के द्वारा समाज में आदर्श स्थापित करने का कार्य किया । महात्मा गाँधी धर्म, राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य, अस्पृश्यता, नैतिक आचरण यथा - सत्य, अहिंसा व स्वावलम्बन जैसे अनेक विषयों पर अपने विचार रखे । इन सब में एक तारतम्यता थी कि इन सब विचारों की जड़ गाँधी जी भारत भूमि को मानते थे । उन्होंने सारी समस्याओं का एक ही तरीके से निराकरण माना था - वो था - स्वदेशी ।

गाँधी जी ने प्रारम्भ से ही स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया व स्वांवलम्बन का पाठ पढ़ाया । दक्षिण अफ्रिका में रहते हुए उन्होंने नाई, धोबी व कुछ नर्सो का चिकित्सकीय कार्य सीख लिये । भारत आगमन के पश्चात् उन्होंने अंग्रेजों द्वारा भारत का किया जाने वाला आर्थिक शोषण देखा । भारत की भयंकर दरिद्रता को देख वे चकित रह गये व एक निर्णय पर पहुँचे कि भारत की दरिद्रता का एक कारण यह है कि भारतीय अब स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर रहे हैं ।

इस समस्या के समाधान के लिये उन्होंने 1920 में स्वदेशी आंदोलन प्रारम्भ किया व मानव जीवन की प्रत्येक आवश्यक सामग्री को स्वयं भारत में निर्माण करने की बात कही । देखते-ही-देखते स्वदेशी आंदोलन, सम्पूर्ण भारत में फैल गया । इन आंदोलनकारियों का गाँधीजी द्वारा प्रदान किया गया सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्र था - चरखा।

गाँधी जी ने खादी व चरखा के माध्यम से ब्रिटिश अर्थतंत्र को जड़ से हिला दिया । गाँधी जी ने ग्रामों में उत्पादित वस्तुओं के प्रयोग करने को कहा। उन्होंने कहा कि भारत के ग्राम प्राचीन काल से आत्म निर्भर हैं, वे मात्र आवश्यक वस्तुओं जो वहाँ (ग्राम में) उपलब्ध न हो, उसी के लिये ही बाहरी दुनिया पर निर्भर हैं ।

उन्होंने चरखा को इसका प्रतीक माना, जो गति का, परिवर्तन का, विकास का सूचक है । उन्होंने उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक सभी को चरखा चलाकर अपनी आवश्यकता के अनुसार सूत कातने को कहा । उन्होंने खादी या खद्दर को जनमानस का सर्वाधिक प्रिय विषय बना दिया । इस तरह खादी ब्रिटिश हुकुमत के विरोध, का प्रतीक बन गया ।

गाँधी जी का स्वदेशी मात्र खादी, चरखा या अर्थतंत्र तक सीमित नहीं था । वे सम्पूर्ण भारतीय जीवन का स्वदेशीकरण करना चाहते थे । उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति, समाज, उद्योग सभी का स्वदेशी करण करने की बात कही । गाँधी जी ने शिक्षा का भारतीयकरण कर लोगों

को रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करने को कहा । उनकी शिक्षा पद्धति में प्राचीन भारतीय धर्म-दर्शन के साथ-साथ विज्ञान व वाण्जिय की उन गतिविधियों पर ध्यान दिया गया है, जो मानव जीवन के लिए आवश्यक है । शिक्षा के प्रसार के लिये उन्होंने जगह-जगह विद्यालय प्रारम्भ किये, जहाँ लोगों को मानवीय मूल्यों के साथ-साथ स्वदेशी, अहिंसा, सत्याग्रह, चरखा आदि की भी शिक्षा व प्रशिक्षण का कार्य किया जाता था ।

गाँधी जी स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी स्वदेशी पर बल देते थे । उनके अनुसार - ''शाकाहारी जीवन व्यक्ति को निरोगी रखता है ।'' उन्होंने आधुनिक चिकित्सकीय विज्ञान पर अविश्वास प्रकट कर प्राचीन आयुर्वेद का प्रयोग किया व अपने जीवन के अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का हल इसी भारतीय पद्धति के माध्यम से किया ।

गाँधी जी इन भौतिक वस्तुओं के स्वदेशी-करण के साथ-साथ व्यक्ति के आत्मिक, नैतिक जीवन का भी स्वदेशीकरण करना चाहते थे । अंग्रेजों द्वारा जिन भारतीयों का पूर्णतः पाश्चात्यीकरण कर दिया गया था उन्हें गाँधी जी ने पुनः भारतीय मूल्यों की महानता का भान कराकर पश्चिम के मोह का परदा हटा दिया ।

गाँधी जी ने स्वदेशी का ऐसा अस्त्र अपने हाथ में लिया, जिससे पश्चिम की धूर्तता पूर्ण नीति भारतीय जनता के समक्ष प्रत्यक्ष खड़ी हो गयी । उन्होंने स्वदेशी व आत्मनिर्भरता के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया ।

आज भारत गाँधी जी के उस स्वदेशी उद्योग व आत्मनिर्भरता के पाठ का विस्मरण कर चुका है । आवश्यकता इस बात की है कि आज भारत पुनः उस आत्मनिर्भर स्थित को प्राप्त करे व स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग व उत्पादन पर बल दे जिससे पुनः भारत का ग्राम समृद्ध हो व भारत पुनः सोने की चिड़िया के रूप में विश्व पटल पर प्रतिष्ठित हो ।

ooo

गांधी अतीत ही नहीं, भविष्य भी है

चुम्मन लाल मिरझा, बी.एससी. II (सीएस)

''गाँधी अतीत ही नहीं, भविष्य भी है
इतिहास नहीं, वो कल भी है
सिर्फ जड़ नहीं, वो फल भी है ।
जीवन का पाठ पढ़ाकर चला गया वो बूढ़ा लाठी वाला ।''

समय आज भी अपनी उसी नियत गति से चल रहा है, जैसा कल चल रहा था और आने वाले कल में भी अपनी गति को बनाए रखेगा । कल हालांकि बीत गया पर जीवन में उसका महत्व खत्म नहीं हुआ । मैं उसी कल की रखी हुई नींव पर भविष्य का महल सजा रहा हूँ । आज हूँ, और कल को संजोया रखना चाहता हूँ । इस परिवर्तनशील और प्रगतिशील युग में हर व्यक्ति प्रगति की बुलंदियों को छूना चाहता है और ऐसा हो भी रहा है, पर अतीत को भूलकर वर्तमान की जोश में भविष्य में जीना सर्वथा सही नहीं है । भविष्य की चाह में अपने अतीत को भूलना, उसे तुच्छ समझना संभवतः आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मूर्खता हो सकती है । आज आजादी मिले 100 साल भी नहीं हुए हैं पर उसकी अहमियत को हम भूलते जा रहे हैं। आज वृक्ष का फल जड़ की सुघड़ता को भूल रहा है, पर जड़ को आज भी उसकी नादानियों पर प्यार आता है, और इसीलिए उसे हर पल नया जीवन देता है ।

आज की पीढ़ी यह समझती है कि इतिहास तो बस इतिहास है वो अपने समय में ही प्रभावी थी । वर्तमान में वे मात्र तुच्छ तर्क से अधिक कुछ नहीं । पर यह सत्य है - मतकर गुमान ए परिंदे । घड़ियों के परिवर्तन पर वे अनुभव बूढ़े हैं पर कमजोर नहीं।

पूरे विश्व में ऐसे कई महापुरुषों ने जन्म लिया जो उसी इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके विचारों तथा सिद्धान्तों का पालन उन्होंने अपने जीवन पर कर जिस महात्मा की उपाधि से सुशोभित हुए । यही आदर्श जीवन का मार्ग है ।

उन्हीं में से एक हैं गाँधी जी जिनके समग्र जीवन सिद्धान्त पर अगर हम चलें तो निश्चय ही उनके विचारों के ओज से जिस प्रकार इतिहास जगमगाता दिखाई देता है भविष्य भी जगमगाएगा । क्योंकि - गाँधी सिर्फ इतिहास ही नहीं भविष्य भी है ।

सिर्फ इतिहास नहीं गाँधी - ''वो सिर्फ हवा का झोका नहीं जो सिर्फ आया और बीत गया कभी पुकार कर तो देखो वो आपके अंदर ही मिलेगा ।''

कुछ समय पहले कहा जाता था कि गाँधी के विचार सिर्फ किताबों में सिमट कर रह गये है। नयी पीढ़ी सिर्फ गाँधी का नाम याद रखेगी पर यह बात गलत साबित हुई दिखाई दे रही है । आज वह विश्व में हिंसा तथा आतंकवाद को खत्म करने का प्रभावकारी विकल्प के रूप में सामने उभरकर आ रहा है । तकनीक से लेकर मैनेजमेंट तक गाँधी के विचार उपयोगी साबित हो रहे हैं ।

7 जनवरी 2008 को नासिक के केन्द्रीय जेल में एक कैदी ''लक्ष्मण तुकाराम गोले'' ने महात्मा गाँधी की आत्मकथा 'सत्य के मेरे प्रयोग' पढ़कर अपने अपराधों को कबूल कर लिया ।

मिश्र के कई राजनैतिक दलों ने मिलकर गाँधीवाद से प्रभावित होकर पूरी तरह अहिंसक 'काफियाँ आंदोलन' चलाया ।

गाँधीजी को आज पूरी दुनिया आशा भरी नजरों से देख रही है । उनके विचारों से पूरी दुनिया अपनी अपनी समस्याओं का हल खोज रही है ।

जो यह सिद्ध करती है कि गाँधी सिर्फ इतिहास ही नहीं, अपितु भविष्य की अनुपम कल्पना है ।

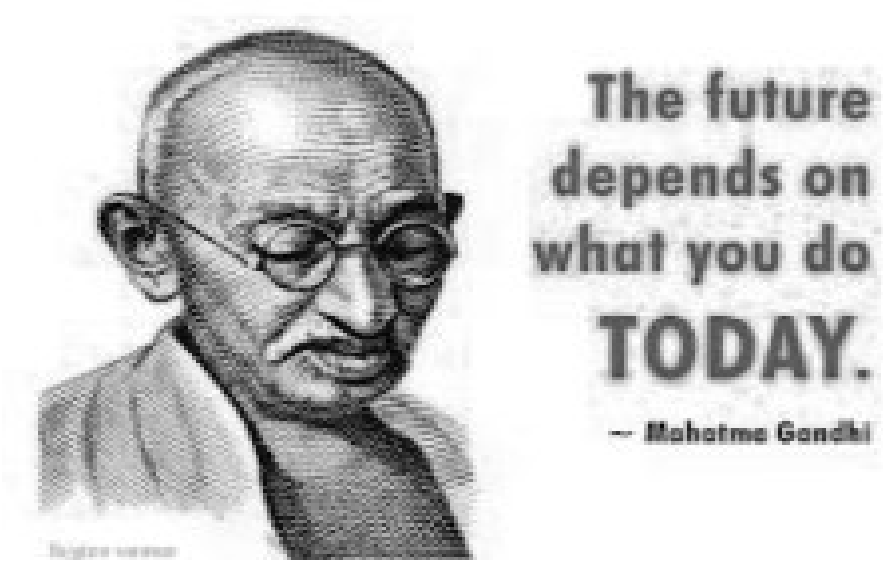

भविष्य में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : - गाँधीजी को न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में उनके नेतृत्व के लिए अपितु उनके नियमों, सिद्धान्तों तथा उनके आचरण के लिये भविष्य में याद किये जायेंगे। गाँधी दर्शन के मूल में सत्य अहिंसा, सादगी, अस्तेय, अपरिग्रह, श्रम और नैतिकता है । जहाँ से स्थानीय स्वशासन, स्वदेशी, विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टीशिप, स्वावलम्बन, सहअसित्व, शोषणमुक्त व्यवस्था और सहयोग - सद्भाव तथा समता पर आधारित समाज व्यवस्था का अनुभव होता है ।

ये ऐसे विचार हैं जो, तात्कालिन समय में एक श्रेष्ठ समाज निर्माण की नींव बनी तथा यही भविष्य निर्माण का आधार है । उनके नशामुक्ति का सिद्धान्त पूरे समाज को परिवर्तित कर सकता है । वक्त की पाबंदी पूरे क्रिया चक्र को बदलने की शक्ति रखती है ।

न बुरा कहो न, बुरा सुनो, न बुरा देखो । बुराई के समूल नाश के लिये तत्परता का संदेश आज भी दे रही है। उनके कल के विचारों से हम आज बुराई रहित समाज का निर्माण कर सकेंगे । उनके विचारों पर अमल करने की जितनी आवश्यकता कल थी उससे भी कहीं ज्यादा आज है ।

भविष्य में अहिंसा परमोधर्मम् :-

गाँधी जी ने अहिंसा को सबसे बड़ा धर्म माना है। आज का युग विज्ञान के विस्फोट का युग है । आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि इसके सिर्फ एक दुरुपयोग से पूरी सभ्यता नष्ट हो सकती है । आज का मानव अत्यन्त उग्र है वह कुछ भी कर सकता है। आज एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की तरक्की देख कर जल रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की प्रगति सहन नहीं कर रहा है, विभिन्न राष्ट्रों के रिश्तो में खटास भी विश्व युद्ध को न्यौता दे सकता है । अगर गाँधी जी की अहिंसा रूपी विचारधारा अपना ली जाये तो जिस प्रकार इतिहास में नर संहार टला था वैसे ही भविष्य में भी खतरा टल सकता है । अगर विश्व युद्ध हुआ तो समस्त विश्व को नष्ट होने से कोई नहीं रोक सकता। अतः गाँधीजी की विचारधारा अहिंसा परमोधर्मः ही विश्व को इस संकट से बचा सकती है ।

स्वच्छता के प्रणेता :-

गाँधी जी की स्वच्छता प्रेम कौन नहीं जानता । वास्तव में भारत में स्वच्छता के प्रणेता उन्हीं को माना जाता है । औद्योगीकरण, नगरीकरण के इस समय में हमने जितना विकास नहीं किया उससे ज्यादा अपने पर्यावरण को प्रदूषित किया है, जबकि यही हमारे जीवन का आधार है । आज

परिस्थितियाँ ऐसी हो चली है कि देश के कुछ शहरो में सांस तक लेना मुश्किल हो गया है । ये तो बस अभी के हाल हैं, भविष्य की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतः अपने जीवन की सुरक्षा हेतु हमें गाँधी जी के वही स्वच्छ भारत का सपना याद आता है और वास्तव में यहीं हमें अस्वच्छता रूपी दानव से बचा सकता है ।

वर्तमान में पूरे विश्व में जनसंख्या विस्फोट सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है । सुविधाओं की अपर्याप्तता तथा स्वच्छता में लापरवाही कभी भी महामारी फैला सकती है ।

गाँधीजी ने इस समस्या को अपने घर की समस्या मानी तथा देश की गंदगी को अपने घर की । अतः उनका ध्येय था कि मेरे इस घर की सफाई मेरी खुद की जिम्मेदारी है ।

समस्त बीमारियों के इस प्रकार निरन्तर फैलने का कारण है गंदगी, और उपाय है स्वच्छता। जब गाँधी जी ने इसके प्रति जन जागृति शुरू की तो उनके पास सब कुछ था परन्तु उन्होंने कभी कोई बाह्य आडम्बर नहीं किया, मात्र एक जोड़ी धोती में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दिया। पर आज का समय ऐसा नहीं रहा है लोग रंग-रूप खूबसूरती के पीछे भाग रहे हैं । आवश्यकता से अधिक चीजों को बटोरने में लगे हैं । संचय अहम हिस्सा बन गया है वर्तमान मानव के।

भविष्य की कल्पना करें तो भविष्य आडंबरो की नगरी से ज्यादा कुछ नजर नहीं आता । अतः इस समस्या का समाधान सिर्फ एक ही है - सादा जीवन उच्च विचार और यही भविष्य को अंधकार में जाने से बचा सकती है।

एक कुशल जननायक :- समाज ऐसा हो चला है कि हमेशा उसे एक आगे ले चलने वाला चाहिए, पर वर्तमान जननायक ऐसे हो चले हैं जिनके कथनी और करनी में कोई मेल नहीं । आज उनकी सोच ''जन सेवा न रहकर - स्वसेवा'' हो गया है । बात कटु है पर सत्य है । आज के नेता जनता को इंसान नहीं सिर्फ एक वोटर मानते हैं। पाँच साल के लिये एक बंद महल की चाबी के अतिरिक्त कुछ नहीं । भ्रष्टाचार की कोई सीमा ही नहीं । ऐसे में एक श्रेष्ठ प्रजातांत्रिक राष्ट्र की कल्पना संभव नहीं है । परिस्थितियाँ इतनी गंभीर हो चली है, जो जनता के प्रतिनिधि बन हमारा प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, उनको चंद सिक्कों में खरीदा जा सकता है । अगर वर्तमान ऐसा है तो भविष्य की कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में एक श्रेष्ठ प्रजातांत्रिक राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती।

हमें आज भी उस बूढ़े आदमी की आवश्यकता है, जिनके एक आह्वान पर पूरा राष्ट्र पीछे चल पड़ता था, जिसके एक उपवास से पूरी ईस्ट इंडिया कंपनी थर्रा जाती थी । सत्याग्रह एक आंदोलन न होकर एक पुनीत व्रत था पर वर्तमान नेता सत्याग्रह भूल रहे हैं, हिंसा का सहारा ले रहे हैं ।

यही कारण है कि आज भी हमें उस बूढ़े व्यक्ति की याद बरबस ही अपने राष्ट्र के भविष्य को सोचकर आता है, क्योंकि :-

गाँधी इतिहास ही नहीं भविष्य भी है ।

स्वशासन पंचायती राज एवं ग्राम सुराज :- भारत गांवों का देश है। भारत की 75 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है, अगर गाँव विकसित हो जाये तो राष्ट्र खुद प्रगति पथ पर बहुत दूर निकल जायेगा । ग्राम सुराज का उद्देश्य सिर्फ भौतिक ढांचे को ही विकसित करना नहीं था बल्कि ग्रामीणों को सभी चीजों में आत्मनिर्भर बनाया था । स्वशासन ही ग्राम सुराज का उद्देश्य था इसी आधार पर पंचायती राज की भूमिका सामने आयी और ग्राम पंचायत निर्मित हुआ ।

वर्तमान में भारत एक लोकंतात्रिक देश है पर आज आजादी के 70 साल बाद भी देश के कई हिस्सों में इसकी जड़ें सामान्य जन तक नहीं पहुँच पाई है । अतः उनके सम्पूर्ण विकास के लिये गांधी जी का यही ग्राम सुराज व स्वशासन का विचार उन्हें मुख्यधारा से जोड़ सकता है । जिस प्रकार इतिहास में स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने स्वतंत्रता आन्दोलनों को चरम सीमा तक पहुँचाया वैसे ही लोक सुराज पूरे राष्ट्र को विकास की बुलंदियों तक पहुँचा सकता है ।

सांप्रदायिक सद्भाव की नीति :- भारत विभिन्नताओं का देश है । यहाँ विभिन्न जाति, धर्म साम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं, सब में आपसी प्रेम और सहयोग ही राष्ट्र को आगे ले जा सकता है, किसी एक जाति, धर्म, सम्प्रदाय में यह क्षमता नहीं कि वो अकेले अपने दम पर राष्ट्र को विकास पथ पर आगे ले जा सके । इसमें सबका सहयोग आवश्यक है । ये एकता देखने को मिला 100 साल पहले आजादी की लड़ाई में, जहाँ किसी ने, न जाति पूछी न धर्म । सब सिर्फ राष्ट्र की आजादी चाहते थे। जाति, धर्म से परे राष्ट्रभक्ति पर जोर दिया । गाँधी जी कट्टर सनातनी हिन्दूवादी थे पर उन्होंने सभी जाति, धर्म, साम्प्रदायों का सम्मान किया, दीन-दुखियों, दबे-कुचले लोगों को हृदय से लगाया । उनके लिये एकता राजनैतिक एकता भर नहीं थी, वह आत्मीय एकता थी । उन्होंने कहा था -

''धर्म में जबरदस्ती का कोई स्थान नहीं है वो तो आचरण है, त्याग है, समर्पण है । उन्होंने कहा - कोई धर्म पूर्ण नहीं । अपने धर्म की विसंगतियों को दूर कर सबको गले लगाकर आगे बढ़ें ।''

200 साल पहले हमारी यही छोटी-छोटी लड़ाइयाँ हमारी गुलामी का कारण बनी थी अगर वर्तमान में जाति, धर्म के नाम पर जो झगड़े हो रहे हैं, वो भविष्य में न हो तो हमें जाति, धर्म का बंधन तोड़ मिलकर चलना होगा ।

धैर्य का प्रतीक सत्याग्रह :- वर्तमान समय में मानव अत्यन्त क्रोधी हो गया है उसे सत्याग्रह पर कोई विश्वास नहीं है । जिससे विभिन्न प्रकार के दंगे, झगड़े व सांप्रदायिक हिंसा बढ़ती जा रही है । जिस प्रकार गाँधी जी अपनी सत्य माँगों के लिये अपना धैर्य का परिचय देते हुए सत्याग्रह करते थे भविष्य को भी इसी की आवश्यकता है ताकि हिंसा खत्म हो । अहिंसक गाँधी सिर्फ इतिहास का ही नहीं, भविष्य का भी 24कैरेट खरा सोना है ।

गाँधी जी सिर्फ एक इतिहास नहीं हमारे लिये उज्जवल भविष्य के विचारों का सार है । उक्त वाक्यों से मेरी अभिलाषा मात्र इतनी है कि जिन विचारों का प्रयोग गाँधी जी ने किया और महात्मा कहलाए, भविष्य के लिये कितना लाभकारी है, उपयोगी है, के महत्व को प्रतिपादित करना है। क्योंकि ये वर्तमान का आज, कल के इतिहास की ही देन है । हम ऐसी परिस्थितियों से गुजर रहे हैं जो पूर्व इतिहास में भी आ चुके हैं जिनका सफल निराकरण किया जा चुका है । हमारा इतिहास उन उक्त विशेषताओं को सीने में लिये हमारा इंतजार कर रहा है । दुनिया गोल है, हम जहाँ से शुरुआत करते हैं, अंत में वही पहुँच जाते हैं, जो संकट कल आया था वो भविष्य में भी हमारे पूर्वजों ने हमें पहले ही दे दिया है ।

बीते हुए लोग सिर्फ इतिहास ही नहीं सूझबूझ और अनुभव का आगाज थे । उनको भूलना शायद हमारी सबसे बड़ी गलती हो सकती है ।

गाँधी जी सिर्फ इतिहास ही नहीं भविष्य भी हैं उनका जीवन एक आदर्श, एक आदर्श व्रत है । उन्होंने जो सिद्धान्त दिए है, जिन पर वे स्वयं चले हैं वो किसी भी पुरुष को महात्मा बना सकता है । समस्याओं को सुलझाने का ही तरीका गाँधीगिरि आज भी समाज को सुधारने में अहम योगदान दे रहा है ।

आज कहा जाता है ''वो इतिहास है जो बीत गया, ये भविष्य है'' । पर मत भूलो कि तुम भी उसी इतिहास से ही आये हो । उनका देशप्रेम, स्वदेशी उनके सिद्धान्त , सादा जीवन, कमजोरों का साथ, स्वच्छता ही सेवा, उनकी शिक्षा नीति, हरिजन हिताय कार्य, उनका पूरा जीवन एक इतिहास नहीं बल्कि एक सुनहरे भविष्य की सीढ़ियाँ हैं, जिस पर चलकर हम अपने साधारण जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। इतिहास के ज्ञान से भविष्य में चमत्कारिक प्रयोग किये जा सकते हैं और यही मेरी अभिलाषा है मैं चाहूँगा कि बापू ने जिन सिद्धान्तों के बदौलत इतिहास रचा उनका उपयोग करते हुए हम एक नये कल की रचना करे क्योंकि - **गाँधी सिर्फ इतिहास ही नहीं भविष्य भी है।**

(हेमचंद यादव विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता में सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त निबन्ध)

गाँधी एक विचार है !

जितेन्द्र कुमार, एम.ए. II सेमेस्टर (हिन्दी)

आओ अपनाएं गाँधी को, गाँधी एक विचार है !
मानवता की खुशबू बिखराए जो, गाँधी वह बयार है।

आँख के बदले आँख से दुनिया अंधी हो जाएगी
हिंसा के अंधकार में मानवता बंदी हो जाएगी
मन वचन और कर्म से हिंसा की राह छोड़ें
अमन के रास्ते चल खुशियों से नाता जोड़ें
अत्याचार से लड़ना है तो, अहिंसा उत्तम हथियार है ।
आओ अपनाएँ गाँधी .....

स्वदेशी अपनाएं तभी, राष्ट्र सबल होगा अपना
आत्मनिर्भर भारत का पूरा होगा तब सपना,
रोजगार हो हाथों में, तो हुनर दम दिखाएगा,
गाँधी जी के सपनों को, स्वर्ण पंख लग जाएगा
स्वावलंबन से होगा आत्मविश्वास का संचार है।
आओ अपनाएं गाँधी .....

विकास की अंधी दौड़ से, जहरीला हुआ, धरा समन्दर
नाच रहे हैं लालच के वश, उस्तरा लिये कई बंदर
पर्वत, नदियों, वनों का और नहीं अब शोषण हो
विनाश के मुहाने खड़ी प्रकृति, अब तो इसका पोषण हो
हर जरूरत पूरी होगी तेरी, पर लोभ नहीं स्वीकार है
आओ, अपनाएँ गाँधी को, गाँधी एक विचार है ।

जो जीवन में खुशियाँ भरता था

कु. देव श्री साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

घर की चार दीवारी में कुछ ऐसी सोच भी पलती थी
घर परिवार ये कभी न टूटे, इसी सोच से सूरज ढलती थी
इसी सोच को लक्ष्य मानकर, कोशिश भी बड़ी प्यारी थी,
एक ही घर का क्या कहूँ, घर घर की बात निराली थी ।

रिश्तों के हर इक धागे को माँ बापू ने पिरोया था
झगड़े की कड़ियों को देखकर, बाबा चुपके-चुपके रोया था
पर एक सोच भी ऐसा था, जो जीवन में खुशियाँ भरता था
कभी भी ये परिवार न बिखरे, उन गुणों को लेकर चलता था ।

साजिश तो थी बड़ी-बड़ी पर रिश्ते भी कमजोर न थे
घर परिवार के मुखिया थे वो अनुभव भी कमजोर न थे
घर परिवार के महत्व को बताना
हर एक सदस्यों के साथ मधुर रिश्तों को समझना
सुख-दुख में परिवार की उपयोगिता बताना,

सब कुछ उसने किया था ,
मानो घर के सभी सितारों को एक नया रूप दिया था
लाना था उनको हर घर में, आधुनिकता के गहरे सोच से
कोई सदस्य बिखर न पाये, करना था सबकुछ होश से ।

दोनों पीढ़ी की कदमताल को ध्येय में रखकर चलना था
पीढ़ियों का झगड़ा स्वतः खत्म हो, यही सोच को लेकर बढ़ना था ..
उसी मुखिया के दृढ़ निश्चय को सोचकर, ये कलम भी आज बोले
और अंत में बस यही लिख पाय, क्या वह शख्स नाकाम हुआ ... ???

गाँधी कितना महान

अमित टण्डन, बी.ए. II

गाँधी जी के संदेशों में आँधी है तूफान है,
गाँधी जी ने कर्मों से रचा ये हिन्दुस्तान है ।
उनके निर्देशों पे ही आज दुनिया चलती है,
उनके ही आलेखों में सच्चाई झलकती है ।।

सत्य अहिंसा के अनुगामी वे सत पथ के राही थे,
अपने अंदर लिए जगत को विचारों के संग्राही थे।
अतीत से वर्तमान तक भविष्य में भी जानेजाएंगे,
अपने विचारों के चलते युग परिवर्तक माने जाएँगे ।।

भाई-चारे की भावना को जग-जगमें बिखराया है,
क्या होती है मित्रता यह सबको सिखलाया है ।
नैतिकता की शिक्षा से अपना व्यक्तित्व संवारा है,
कर्तव्यों की परिपाटी से देश को स्वयं सुधारा है।।

आजादी के लिए जिये, वे जीवन न्यौछावर किया,
मन में दृढ़ निश्चय रखने संघर्षों को पार किया।
अंहकार ना आई कभी भी ऐसा उनका व्यक्तित्व था,
विश्व को एक कुटुम्ब बनाया ऐसा उनका कर्म था ।

अपने दुख को धारण करके,
गाँधी ने सुख सींचा था
अमीर-गरीब के भेदभाव को,
हाथों में धर खींचा था ।

खादी कपड़े पहन के जिसने
स्वदेशी स्वीकार किया ।
जीवन-मरण के इस खेल में
अंग्रेजी बेड़ियाँ पार किया ।।

लाठी पकड़ के चलते थे,
सबको चलना सिखाया है ।
सत्य कर्म के पथ पर आगे,
नेकी की राह दिखाया है ।।
आज भी जिनके संघर्षों से देश बागबान है,
भारत माता का ये बेटा, गाँधी कितना महान है।।

बापू ! अब है ऐसा संसार

ज़ैनब खातून, एम.ए. II सेमे. (इतिहास)

बापू ! अब है ऐसा संसार
जिसे देख शायद तुम भी
हो जाते शर्मसार ।
जिस सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाकर,
देशभक्ति का भाव जगाकर तुमने
इस देश को आजाद कराया था
आज देश के लोगों ने केवल इसे
अपने स्वार्थ के लिए अपनाया है ।
जाति-धर्म का भेद मिटाकर तुमने
एक सबल भारत बनाया था
आज देश के लोगों ने
जाति-धर्म के नाम पर
न जाने क्यूँ हाहाकार मचाया है ।

बापू ! अब है ऐसा संसार
जिसे देख तुम भी
हो जाते शर्मसार ।
जिस स्वच्छता को तुमने अपनी
आदत में अपनाया था
आज नेताओं ने केवल उसे
अपने वादों से झुठलाया है ।
देश की कुरीतियों से लड़कर
तुमने नारी को सशक्त बनाया था
आज फिर उसकी अस्मत पर
लोगों ने नजर गड़ाया है ।
बापू अब है ऐसा संसार
जिस देख शायद तुम भी
हो जाते शर्मसार ।

वह खो रहा विचार बापू!

प्रतिक्षा तिवारी, एम.एससी. III (फिजिक्स)

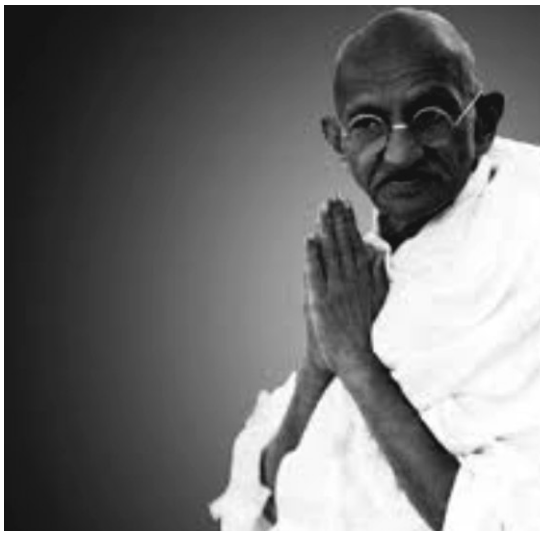

लिखे है खुद से मैंने अहिंसा के गीत
गाया हैं इसे हर, कण्ठ ने होकर भूलकर जगरित
श्वेत-पत्र पर लिखे मैंने एकता की सीख
हस्यास्पद हो चुका है हर गीत हर गीत ।
खुद की वाणी खोकर,
हम दूसरों को बोलना सिखलाते हैं
असत्य हृदय में रखकर बापू!
सच्चाई के गीत गाते हैं ।
वह पथ खाली है, हे बापू !
जिस मार्ग पर आना-जाना था
जिन विचारों के लिए लड़ना था
जिन विचारों के लिए मर जाना था ।
लिखे थे आपने हे बापू !
यह बात की हम सब एक हैं,
देखो पहली धरा के, रंग रूप अनेक हैं।
रंग-रूप, नर-नारी, बड़ा-छोटा
जाति-धर्म की व्याख्या हम बतलाते है

भूमि के रंग का अंतर, बता
विचारों का मतभेद बताते हैं
हर जन अपनी इच्छा से आज
सत्य की परिभषा बतलाते हैं
हाथ में तलवार लिए अहिंसा के गीत गाते हैं ।
हम सो चुके हैं हे बापू!
हम खो चुके हैं हे बापू !
जीवित वह विचार है
जो करता रहा हिंसा का संहार है ।
वह खो रहा विचार हे बापू !
हे बापू ! जिसमें, जीवन का सार है ।

गाँधी जी की जीवन गाथा

जय कुमार वर्मा, बी.ए. - I

गुजरात के पोरबन्दर में,
एक घर में खुशियाँ आई थी ।
करमचन्द गाँदी जी के घर,
किलकारियाँ उनकी सुनाई थी ।।

सम्बन्धियों के चेहरों पर रौनक,
तारों जैसी टिमटिमाई थी ।
माता पुतली बाई के आँगन भी
खुशी से झूमी गाई थी ।।

मोहनदास नाम दिया,
नाम बड़ा निराला था ।
कृष्ण की मीरा के जैसे,
पिया सत्य का प्याला था ।।

माता की कहानियाँ सुनते,
जिज्ञासु इनका चंचल मन था ।
बात-बात में प्रश्न करते,
यह राष्ट्रपिता का बचपन था।।

14 वर्ष की अल्पायु में ही,
इनकी शादी गई रचाई थी ।
मन-मस्तिष्क सब सुख खो बैठे,
जब कर्म की लौ लगाई थी ।।

स्वतन्त्रता के जो काम आये
प्रारम्भ हुआ वो अध्याय ।
वकालत पढ़ने बापू जा,
अंग्रेजों के गढ़ हो आये।।

न्याय के लिए गाँधी जी,
अफ्रीका जब देश धाये ।
समय ने बदला फिर करवट एक,
हुई अपमानजनक, घटना एक ।।

गाँधी जी के जीवन का,
वह मोड़ बड़ा निराला था
भारत को उसका राष्ट्रपिता,
गांधी मिलने वाला था ।।

सन् 17 के चम्पारण से
हुआ राजनीति में अभ्युदय ।
बापू के पहले सत्याग्रह से ही,
अंग्रेजों की हुई पराजय ।।

क्या शक्ति, क्या अभिव्यक्ति थी,
भारत की जनता दौड़ पड़ी।
निडर अकेला आगे चला वो,
जनशक्ति पीछे दौड़ पड़ी ।।

राष्ट्रभावना जन-जन में भरा,
करो या मरो का नारा देकर ।
भागी अंग्रेजी राज तब,
भारत को स्वतन्त्रता देकर ।।

स्वतन्त्र भारत में खुशियाँ आई,
पर समय का खेल बाकी था ।
जो अंग्रेजों से न हो सका
वह खेल होने वाला था ।।

भारत विभाजन का प्रश्न लेकर,
गोड़से ने चलाई गोली थी ।
हुआ उस महानायक का अन्त,
जिसने स्वतंत्रता के दीप जलाये।।

हे-राम कहते हुए, तब
ली बापू ने अन्तिम बिदाई।
उनके विचारों से हमने,
आज भी है अलख जगाई ।।

सत्य अहिसा का पुजारी,
भेदभाव दूर करने वाला ।
किसी को कुछ कहने से पहले ,
स्वयं करके देखने वाला ।।

क्या कहें आज हम, जग को उनकी गाथा ।

–व्याख्यान

वैज्ञानिक चेतना और साहित्य

गौहर रज़ा

क्या ब्रह्मांड ने 14 सौ करोड़ साल इसलिए सृजन में लगाए कि हम एक दूसरे के खिलाफ जंग करें

धर्म अंधविश्वास तथा रूढ़ियों को चुनौती देते हुए विज्ञान और तर्क पर अपने विश्वास को बनाए रखना महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक जिम्मेदारी का कार्य है। देश में इस कार्य को जाने माने वैज्ञानिक और कार्यकर्ता गौहर रज़ा बखूबी निभाते आ रहे हैं। हम सभी के लिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति, मनुष्य की उत्पत्ति और उसके भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं और जानकारी आवश्यक है। हमें वैज्ञानिक चेतना और साहित्य विषय पर उनकी विद्वता पूर्ण व्याख्यान को सुनने का अवसर मिला। साइंस, साइंटिस्ट के साथ जब व्यक्ति अपने उसूलों पर विज्ञान के साथ समाज को बदलने के लिए किले की भांति अडिग रहता है तो समझ लीजिए विज्ञान की जीत निश्चित है। हम सभी उपस्थित लोग उनके वैज्ञानिक ज्ञान से अभिभूत तो हुए ही हैं साथ ही कोशिश है कि उनके कहे बातों को आप तक पूरी जिम्मेदारी के साथ हम पहुंचा सके कि दुनिया, मनुष्य और भविष्य को लेकर उनकी चिंताएं कैसी हैं । (सम्पादक)

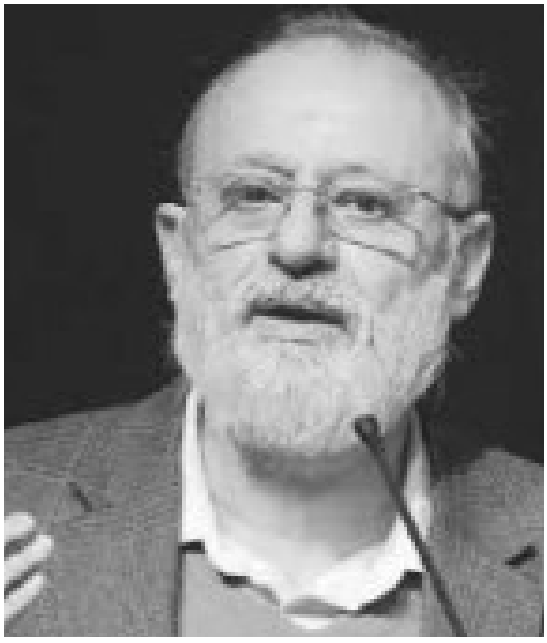

दोस्तों,

मेरे उम्र के इस पड़ाव में मेरी मुलाकात ऐसे लोगों से होती है जो या तो मेरे उम्र के होते हैं, जिनकी चेहरों में झुर्रिया आ चुकी होती है या फिर ऐसे लोगों से जिनकी गर्दन झुकी हुई होती है वे लोग उम्र के अंतिम पड़ाव में अपनी महत्वकांक्षाओं और अहंकार में या फिर टूटे हुए सपने के कारण जी रहे होते हैं। जब बच्चों के पास आता हूं तो उनके चेहरे पर खूबसूरत रोशनी और आंखों से दुनिया बदल देने के ख्वाब देखता हूं।

बहरहाल मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ भी नहीं है सारी चीजों को आपके अध्यापक/ खूबसूरती के साथ बता सकते हैं। मैं सिर्फ अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता हूं। आज सबकी जिम्मेदारी है कि बच्चों को बेहत्तर बनने के लिए पुराने लोगों के अनुभवों पर सवाल खड़ा करें। इसका मतलब यह नहीं कि पुरानी पीढ़ी का आदर न करें। अगर आप बेहत्तर नहीं होंगे तो आसपास के हलातों और पूरी मानवता का विकास रूक जाएगा। और पुरानी नस्ल की जिम्मेदारी है कि वह आने वाले नस्लों को सब कुछ बताएँ और यह भी बताएँ कि भविष्य में जो काम होना है या आगे नहीं बढ़ सका उसे कैसे पूरा किया जा सकता है? लेकिन देखा यह गया है कि बच्चों से सवाल करने का अधिकार पुरानी पीढ़ी द्वारा छिन लिया जाता है और

यह कह दिया जाता है कि चुप रहो, तुम बहुत सवाल करते हो। और अगर आप आगे बढ़ना चाहते हैं और आपको रोका जा रहा है तो आपको इस बंधन को तोड़ना होगा और इसके लिए संघर्ष करने की जरूरत होगी।

मैं चाहता हूं कि आप कल्पना करें कि जब एक समय कुछ भी नहीं था। और यह कल्पना बड़ी मुश्किल बात है। एक वक्त (टाईम) ऐसा भी था कि कुछ भी नहीं था। फिर इंसान भी नहीं था। जीवन भी नहीं था और हमारा सोलर सिस्टम भी नहीं था। ब्रह्मांड भी नहीं था। ना दूरी थी और ना ही किसी चीज को करीब कह सकते थे। ना प्रकाश था। ना अंधेरा था। यहाँ तक कि वक्त भी नहीं था। और यह इमेजिन करना बहुत मुश्किल है। कुछ भी नहीं था के जवाब में अधिकतर मुझे जैसे कोई छोटे वर्कशाप में कहा जाता है कि, अंधेरा था। उनकी भाषा में वहाँ अंधेरा तो था लेकिन एक प्राइमोडियल एटम (प्राथमिक कण) था। उसमें सारे ब्रह्माण्ड की एनर्जी थी। और वह फटा और तब इस ब्रह्मांड की घड़ी ने टीक टीक करना शुरू किया। तब पैदा हुआ वक्त। तब पैदा हुई दूरियां और तब पैदा हुआ तरह तरह के प्रकाश। शुरूआत में भयंकर प्रेशर और भयंकर टेम्परेचर था। इस बीच में एक स्पेस था जिसमें मैटर और एंटी मैटर पैदा हुए। टेन लेस टू पावर माइनस फार्टी सेकंड। लगातार मैटर और एंटी मैटर को खत्म कर रहा था। और एंटी मैटर मैटर को खत्म कर रहा था। यह एक रस्साकशी थी। जो दोनों के बीच में चल रही थी। यह एनर्जी धीरे-धीरे फैलती जा रही थी। धीरे-धीरे समय बीतने के साथ ही टेम्परेचर भी कम हो रहा था और साथ ही प्रेशर भी कम हो रहा था। परिणामस्वरूप *मैटर एंटी मैटर से रस्साकशी में जीत गया* तब कहीं बाद में न्यूट्रान, प्रोट्रान और इलेक्ट्रान अस्तित्व में आए। ये आपस में मिले हाइड्रोजन एटम बना। हाइड्रोजन एटम के साथ हीलियम मैटर्स मिले। फिर धीरे-धीरे और टेम्परेचर कम हुआ। फिर गुरूत्वाकर्षण बल पैदा हुआ और उस बल ने कणों को आपस में एकजुट करने का कार्य बखूबी किया। धीरे-धीरे फिर सितारे बने, बाद में ये मैटर फिर आपस में टकराए एक दूसरे से और इस तरह सितारे चमकने लगे। और इन सितारों से बनी लाखों, करोड़ों करोड़ों आकाशगंगाएं। हर आकाशगंगाओं में करोड़ों करोड़ों सितारे। लगभग 6 बिलयन ईयर्स का समय अर्थात 600 करोड़ साल । धीरे -धीरे ये आकाशगंगाएं एक दूसरे से दूर जा रही थी। इनमें से एक खाश मिल्की वे। उसमें चार बिलयन सितारा, उसमें एक छोटा-सा चमकता हुआ सितारा। उस सितारे के चारों तरफ घूमते हुए नौ ग्रह। उन नौ ग्रहों से एक खास ग्रह में एक एक खास सितारा जिसका रंग हरा नीला। उस ग्रह के ऊपर ज्यादातर पानी और थोड़ी-सी खुश्की। उस खुश्की में तरह तरह के कॉन्टिनेंटस। उस कॉन्टिनेंटस में एक खास कॉन्टिनेंटस। उस खास कॉन्टिनेंटस में एक खास देश। उस खास देश में एक खास शहर । उस खास शहर में एक खास कॉलेज। उस खास कॉलेज में एक खास कमरा, कमरा के हाल में एक बूढ़ा (गौहर रज़ा) बच्चों के साथ साइंटिफिक टेम्पर पर बात कर रहा है।

लगभग 13.79 मिलियन का समय इस ब्रह्मांड ने तय किया है। लगभग 1400 करोड़ साल। क्या इस धरती में हम इसलिए हैं कि आपस में धर्मों में, मुल्कों में और जातियों में बंटने के लिए संघर्ष करें। या फिर धरती पर इसलिए हैं कि हम एक दूसरे से नफरत करें। क्या ब्रह्मांड ने 1400 करोड़ साल इसलिए सृजन में लगाए कि हम एक दूसरे के खिलाफ जंग करें और एक दूसरे के खिलाफ न्यूक्लीयर बम गिराएं। क्या हम इसलिए हैं कि हम देश के औरतों के ऊपर पर और दलितों के ऊपर हमले करें। ब्रह्मांड में जो राज छिपे हैं हम उसे जानने की कोशिश करें और ब्रह्मांड में विकास का जो रास्ता अपनाया है उसे समझने की कोशिश करें। यह फैसला हममें से हर एक को अलग-अलग लेना होगा। तब हम उन लिए गए फैसलों को एक सामूहिक तरीके से उपयोग में ला सकेंगे और पूरे ब्रह्मांड में यदि रेत को इकट्ठा कर लें और उसको गिन भी ले तो उसमें से हम एक सवाल पूछने के बाद सिस्टेमेटिकली आंसर ढूंढने का प्रयास करते हैं। यह क्षमता पूरे ब्रह्मांड ने हमें दी है। अगर हम इसे इस्तेमाल नहीं करेंगे तो नेचर का जो कान्सेप्ट है हम उसके विरूद्ध चले जाएंगे। इसलिए सवाल पूछना बहुत जरूरी है।

मैंने हर वक्त यह जानने की कोशिश की है कि इंसान ने सवाल कब पूछना शुरू किया? हम अफ्रीका के जंगलों से निकले, तो क्या हम उस समय सवाल पूछने की क्षमता को हासिल कर चुके थे? मुझे कुछ नहीं मिला और इस सवाल का जवाब ढूंढने के बावजूद भी मुझे कोई

जवाब नहीं मिला। जाहिर है ऐरिथमेटिक साइंस हो, फिजिक्स हो, हिस्ट्री हो लिचटरेचर हो जवाब नहीं मिला। और हम इस तरह सवालों का सिस्टोमेटिकली जवाब ढूढेंगे। सवाल यह कि कोई भी घटना कैसे घटती है और चीजें क्यों घटती है। वॉय (क्यों) से पूछे जाने वाले सवाल ने भगवान और मानवता के रास्ते खोल दिए। प्रारंभिक रूप में यह कि सूरज क्यों निकलता है - भगवान की मर्जी। पौधे क्यों उगते हैं - भगवान की मर्जी। आसमान का रंग नीला क्यों है - भगवान की मर्जी लेकिन किसी ने यह सवाल पूछा होगा कि सूरज कैसे निकलता है? तब उसका जवाब भगवान की मर्जी और अल्लाह की कारस्तानी नहीं कह सका। तब उसका जवाब मुश्किल था। फूल क्यों खिलते हैं और कैसे खिलते हैं का जवाब अलग अलग है। मैंने ऐसी बहुत कोशिश की कि साइंस की कोई ऐसी परिभाषा गढ़ी जाए जिसमें सबकी सहमति हो। साइंस और साइंस टेंपर में एक चीज तलाशी कि साइंस कैसे सवाल पूछता है और दूसरी ओर सारे धर्म कैसे सवाल पूछते हैं। मैं यह नहीं चाहता कि आप सभी मेरी बात मान लें कि एक बड़े साइंटिस्ट आए थे और अच्छी अच्छी बातें बताई थी। मेरा यह मानना कतई नहीं है कि मैं क्या समझता हूं लेकिन अगर आपकी धारण धार्मिक है तो मैं उसे आहत ना करूं या उसे हटाने की कोशिश ना करूं और यह कतई नहीं करूंगा। मैं सिर्फ यह चाहता हूं कि आप सोचना सीखे और सवाल पूछना सीखें। इस तरह पूरे व्याख्यान का यही मकसद है।

धर्म में यह होता है कि कुछ सवाल पूछे जा सकते हैं और कुछ नहीं। लेकिन विज्ञान के अंदर सभी सवाल जरूरी होते हैं। कोई भी सवाल पूछा जा सकता है और उसका कोई भी जवाब तलाश किया जा सकता है। जब शुरूआत में लोगों ने पूछा होगा कि जिंदा और मुर्दा चीजों में फर्क क्या है। यह लोगों को अजीबोगरीब लगी होगी कि कोई कैसे जीता है और कैसे मर जाता है? एक जवाब आया कि जब मैटर के अंदर आत्मा पहुंच जाती है तो चीज जिंदा हो जाती है और मैटर के अंदर से आत्मा निकल जाती है तो आदमी मर जाता है। अर्थात मैटर के बाहर भी कुछ होता है और इस तरह उसे आत्मा या सोल का नाम दिया। एक कान्सेप्च्यूल सवाल है कि लोग क्यों मर जाते हैं क्यों जिंदा हो जाते हैं। यह खूबसूरत कान्सेप्च्यूल मॉडल था। और जितना डेटा उस समय हमारे पास था उस सारे डेटा को एक्सप्लेन किया जा सकता था। दूसरा सवाल कि धरती का आकार कैसा है? और सूरज कैसे निकलता है? उसका भी खूबसूरत जवाब था कि धरती सिक्के की तरह चपटी है और आसमान छतरी की तरह है और उस छतरी में सितारे, चांद, सूरज सारे अपनी धुरी में मंडराते रहते हैं। एक तरफ से दूसरी तरफ। यह भी जरूरी था इंसान की जरूरत को पूरा करने के लिए कोई बाहर नहीं गया था।

धरती के ऊपर एक कान्सेप्च्यूल मॉडल हमने बनाया एक ऐसा मॉडल जो हमारे ख्यालों का था और उसमें डेटा फिक्स किया गया। लेकिन जब कैसे सवाल पूछा तो इसमें लगातार बदलाव आए। धरती को दबाने के बाद धूल इसलिए कि नया डेटा आया। बाद में नया डेटा मिलने लगा। धीरे-धीरे धरती के चपटी होने की बात गलत होने लगी तथा उसके गोल होने की बात समझ में आने लगी। जब सभ्यताएं बढ़ी तो इजिप्ट से लेकर चीन तक जिसे हम भारत कहते हैं वहां तक सभ्यताएं थी। जब चांद तारे अलग अलग जगहों से निकल रहे हैं, जो हो ही नहीं सकता था अगर धरती चपटी हो। इस तरह नया डेटा नया आब्जरवेशन और इस आब्जरवेशन ने पुरानी धाराणाओं को धाराशाही कर दिया। अगर धरती ब्रह्मांड के केंद्र में थी और उसके चारों तरफ चांद तारे सितारे थे। इस तरह पुराने मॉडल की चीजें भी बदलने लगी। कोई भी इंसान या जीव जिंदा कैसे होता है और मर कैसे जाता है। उसमें बदलाव आया कि नहीं आत्मा से अलग कुछ हो रहा है कि दिल जो पंप होता है जिसमें खून का जाना बंद हो जाता है तो आदमी मर जाता है। इस तरह हम आगे बढ़े और अब हम जानते हैं कि डीएनए की डिसेंटीग्रेशन ही मौत है। हमारे पास कोई एवीडेंस नहीं है कि आत्मा होती है साइंस के अलावा।

उसी तरह जब धरती ब्रह्मांड केन्द्र में था वह केंद्र से हटकर सूर्य का चक्कर लगाने लगा। यह निहायत ही कान्सेप्च्यूल मॉडल है। फिर परेशानी खड़ी हुई कि धरती केन्द्र में नहीं है और आसमान तो कुछ नहीं होता है तो कौन -सा ऐसा चीज है जो इस निजाम को चला रखा है। तब एक दिमाग पैदा हुआ न्यूटन। न्यूटन ने अपनी बात कही बड़ी ही साधारण से इक्वेशन को बनाकर । वह था, जी इज इजीक्वल टू एमवन इनटू एमटू बाय आर इस्कवेयर। यह

दुनिया की सबसे खूबसूरत चीज वहीं एटम और ब्रह्मांड में क्या हो रहा उसे प्रदर्षित करता है। पूरे ब्रह्मांड में जो घट रहा तीन एल्फाबेट और दो नंबर सिद्ध करते हैं कि ब्रह्मांड स्टेटिक है इसका कोई केन्द्र नहीं है। बैलेंस में इसलिए है कि उनके बीच गुरूत्वाकर्षण बल काम करते हैं। न्यूटन भी गलती करते हैं। अगर पूरा ब्रह्मांड जी इज इजीक्वल टू एमवन इनटू एमटू बाय आर इस्कवेयर से चलता है तो इसे अपने आप में कोलेप्स कर लेना चाहिए। पर इसका कोई प्रमाण नहीं।

50-70 साल पहले एक और साइंटिस्ट ने कहा कि ब्रह्मांड कोलेप्स नहीं करता फैलता जा रहा है। जितनी दूर आकाशगंगा है वह उतना ही एक्सीलीरेट हो रही है। और इस तरह पहली बार एक्सपेंडिंग यूनिवर्स का मॉडल अपनाना पड़ा। कि जब दो कारें एक दूसरे से दूर जा रही हैं और उनका स्पीड पता है और एंगल पता है तो समझ सकते हैं और केलक्यूलेट कर सकते हैं कि कब एक साथ हो लेंगे। और जब हमने यह केलक्यूलेट करना शुरू किया तो हमें पता लगा कि पूरा ब्रह्मांड एक पाइंट एक नुक्ते के ऊपर डायमेंशन लेस है। एनर्जी की फार्मूला 1400 करोड़ साल पहले का है। मैंने यह कहानी इसलिए सुनाई कि यह कहानी आपके दसवें क्लास के फिजिक्स मैथेमेटिक्स में है। कि अब आप सोचना शुरू करें मेरे साथ कि जो सारे धर्मों में नॉलेज क्या है? और साइंस में नॉलेज क्या है? तभी हम विज्ञान को समझ सकेंगे। इसी तरह हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना सकेंगे।

इस तरह पता चलता है कि विज्ञान में सबकुछ सच नहीं होता है बल्कि जैसे-जैसे नई खोज होती जाती है नई थियोरी और नये मॉडल आते हैं पुराने मॉडल ध्वस्त होते चले जाते हैं। और इस तरह विज्ञान में नया सच पैदा होता है। धर्म का जो सच है वह जमा हुआ (फ्रोजेन) सच है। जब गैलिलियों ने और उसके पहले बूरनो और उसके पहले कापरनिकस ने यह कहा कि धरती शायद अपने धुरी पर घूम रही है। तो चर्च ने उसके साथ क्या किया? बूरनो को जला दिया और गैलिलियों को कैद कर लिया। इसलिए कि जो हमेशा का सच था कि धरती केन्द्र में है और सूर्य उसका चक्कर लगा रहा है। वह सच हमेशा के लिए सच था, उसके ऊपर सवाल नहीं उठा सकते थे। और अगर उस पर सवाल उठा रहे हैं तो आप पूरा धर्म और धार्मिक ढांचे के ऊपर सवाल उठा रहे हैं। इस तरह चर्च परेशान हो गया और एक तरफ गैलिलियों को कैद कर लिया और ब्रूनो को जला दिया। हमारे बीच में भी बहुत से लोग ये कहेंगे कि यूरोप था ही बुरा उसने साइंटिस्टों के साथ बुरा किया। लेकिन क्या हमारे यहां ऐसा नहीं होता है। आर्यभट के साथ क्या किया? जब उसने कहा कि - कि राहू-केतु कुछ नहीं होते तो हमने उसके साथ भी वही किया।

आर्यभट की किताबें जला दी और उसके खिलाफ लगातार चुगली की गई। आज भी मठाधीशों की दुकान हमारे देश में राहू केतु को लेकर चल रही है। सिर्फ यह हमारे देश ही में नहीं हुआ अलहसान से लेकर अलबुरनी तक अरब की घाटियों में साइंटिस्टों के साथ भी वही किया गया जो और अन्य दूसरी सभ्यताओं ने किया। **साइंस में यह होता है कि हमें अपने पूर्वजों की बातों को गलत साबित करते हुए नई व्याख्या करनी होती है या फिर नई तरीके से रखने की कोशिश होती है। अगर आप ऐसा नहीं कर रहे हैं तो साइंस नहीं कर रहे हैं । साइंस का मतलब ही है कि आप कोई नई बात कर रहे हैं।**

धर्म के अंदर हम पूर्वजों की बात याद करते हैं और पूरी तरह से याद कर लेते हैं और आत्मसात कर लेते हैं। वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तब हम वहां ज्ञानी हैं। साइंस में हम तब ज्ञानी होते हैं जब हम पुरानी बातों को गलत साबित करें। साइंस के अंदर चमत्कार की कोई जगह नहीं है। और धर्म बिना चमत्कार के नहीं चलता है। यानी जब तक ब्रह्मांड के ऊसूल टूटते नहीं तब तक धर्म, धर्म नहीं हो सकता है। जब तक मोहम्मद साहेब सूरज को रोक नहीं लेते क्योंकि नमाज अदा होना है या फिर एक रात में सात आसमान में जाकर वापस नहीं आ जाते तो धर्म पोशिबल नहीं है। रामचंद्र जी जब हनुमान को संजीवनी लाने बोलते हैं और वह पूरा पहाड़ लेकर नहीं आ जाता तब तक धर्म नहीं है। लॉ ऑफ फिजिक्स का टूटना जरूरी है । कहते हैं कि गणेश प्लास्टिक सर्जरी के प्रतीक हैं। इस तरह साइंस में कोई गुंजाइश नहीं है चमत्कार का। इसलिए धर्म में हाथी का सिर मनुष्य में लगा दिया गया। क्राइस्ट में यह चमत्कार है कि मुर्दे को जिंदा कर दें या सलीब पर जब चढ़ाया गया तो अगले दिन ही

पुर्नजीवित हो उठे। साइंस में जब कभी झगड़ा उत्पन्न होता है तो क्या हम न्यूटन के पास जाते हैं या फिर आईंस्टीन के पास जाते हैं नहीं ऐसा कुछ भी नहीं होता है।

हम लेटेस्ट नॉलेज को इकट्ठा कर परखते हैं और उसे सच की कसौटी में कसते हैं। कौन से पेपर छप रहा है और कौन सा पेपर रोका गया है उस पर जाकर झगड़ा समाप्त होता है। पर तीन तलाक पर झगड़ा हुआ तो कहां जाएंगे हम मुहल्ले के मुल्ला के पास जाएंगे और नहीं हुआ तो ऊपर और जाएंगे शहर के मुफ्ती से पूछेंगे। या फिर आगे जाकर अरब जाएंगे वहां किसी से पूछेंगे। यानी धर्म में अथॉरिटी होती है। यानी धर्म में जिसने ज्ञान हासिल कर लिया धर्म का उसकी बात आखिरी बात होती है। एक बार अगर आइंस्टीन ने ई इजीक्यूवेल टू एम सी स्केवेयर की इक्वेशन दे दी तो कोई उसको गलत साबित करेंगे या सही। अगर मैं कहूं कि न्यूटन ने अपने सूत्र में गलती कर दी और उसमें एक अंक या शब्द जोड़कर इसे प्रुफ कर दे या फिर आइंस्टीन के सूत्र में गलती निकालकर डेल्टा जोड़ दूं और इसे प्रूफ कर दूं, तो मेरे साथ क्या होगा? अगला नोबल प्राइज मेरा है। लेकिन अगर मैं यह कह दूं कि रामचंद्र जी अयोध्या में पैदा नहीं हुए थे दुर्ग में पैदा हुए थे तो क्या होगा? (उनके जवाब में दर्शकों ने जवाब दिया लिंचिंग!) वो कहते हैं कि बदले में वापस घर नहीं जा पाऊँगा। अगर मैं कहता हूं जीसस ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस से पढ़ाई की और वे आदमी को जिंदा नहीं कर सकते थे लेकिन बहुत अच्छे डॉक्टर थे तो मेरे साथ क्या होगा? यानी हो सके तो मुझे जान गंवानी होगी। लेकिन मैं कहूं कि मोहम्मद पैगम्बर साहेब अल्लाह के पास जाने से पहले चांद में नहीं रूके तो मेरे साथ क्या होगा? यानी एके फार्टी सेवन! उल्टे जब साइंस में कोई अपने पूर्वज को गलत साबित करता है तो क्या होता है हम सभी जश्न मनाते हैं। सेलिब्रेट करते हैं। जितने बड़े साइंटिस्ट को गलत साबित करते उतना बड़ा जश्न होता है लेकिन धर्म का विरोध करने पर हमें जला दिया जाता है मार दिया जाता है। रास्ता आपको चुनना है कि आप इस देश को साइंस की दिशा पर ले जाएंगे या अंधविश्वास के रास्ते ले जाएंगे। क्या आप कभी ये सवाल उठाएंगे कि औरतें ही साड़ी क्यों पहनती हैं मर्द क्यों नहीं? सोचिए 400 साल 500 साल बाद लोग हैरत में नहीं देखेंगे कि अजीब लोग थे औरतों के कपड़े अलग और मर्दों के कपड़े अलग।

औरतों को अपने बाल छोटे रखने पर एतराज सहना पड़ता था। लड़कों को कान्वेन्ट स्कूलों में पढ़ाया जाता था और बहनों को कम फीस देकर सरकारी स्कूलों में पढ़ाया जाता था। घर में कोई आ जाए तो चाय बनाने के लिए लड़की को ही किचन में जाना पड़ता था और अगर किचन में जाकर कोई लड़का रोटी बेल ले तो उसकी मर्दांगिनी पर सवाल खड़े कर दिए जाते थे। कि जैसे आज हम हैरत से सोचते हैं कि कभी इंसान भी गुलाम थे उन्हें चैन में बांधकर जानवरों की तरह रखा जाता था। ऐसे राजा और नवाब होते थे कि किसी को भी कत्ल कर देते थे। कोई लॉ नहीं था कोई रूल नहीं था कोई कांस्टीट्यूशन नहीं था। तैस में आ गए तो मरवा दिया और खुश हो गए। अगर साइंटिफिक दृष्टिकोण रखते हैं तो सवाल उठाना लाजिमी होता। औरतों को सिंदूर लगाना और माथे पर बिंदी लगाना इस पर भी बुर्का क्यों लगाना चाहिए और खिजाब भी इस पर भी सवाल उठाना होगा। तीन तलाक खत्म होना चाहिए या फिर नहीं खत्म होना चाहिए इस पर भी सवाल उठाना चाहिए। इसके बाद भी हमें अगर साड़ी पसंद है जींस पसंद है या बुर्का पसंद है तो वह साइंटिफिक दृष्टिकोण कहा जा सकता है।

ये सब जानने के बाद कि क्या हम पुराने मान्यताएं को छोड़ने को तैयार है या नहीं, यह है सांटिफिक दृष्टिकोण। अगर हम इन चीजों के लिए तैयार नहीं हैं तो समझना चाहिए कि देश भी इन चीजों के लिए तैयार नहीं है। जिस देश में साइंटिफिक दृष्टिकोण नहीं है वहां प्रक्षेपण तो हो सकता है लेकिन साइंस कतई कामयाब नहीं हो सकता है। किसी देश की सोच को अच्छी करने के जरूरत होती है कि उस देश के लोगों में सही साइंटिफिक दृष्टिकोण पैदा किया जा सके। महत्वपूर्ण बात यह कि साइंटिफिक दृष्टिकोण बिना लिटरेचर के पैदा नहीं हो सकता। यदि हमारे जबानों में, नज्मों में कहानियों में, गानों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं है तो सच्चा समाज पैदा नहीं कर सकते हैं। बड़े लेखक प्रेमचंद से किशनचंद तक, शहादत हसन मंटो से चुगतई तक, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ से लेकर साहिर लुधियानवी तक इन लेखकों के अंदर साइंटिफिक दृष्टिकोण था।

सवाल यह भी कि इन लोगों में उस समय की

दृष्टिकोण थी आज के साइंटिफिक दृष्टिकोण के लिए नई पीढ़ी को नए बदलाव के लिए लिखना होगा। साइंटिफिक दृष्टिकोण जमा हुआ फ्रोजन दृष्टिकोण नहीं हो सकता है। आज वस्तुगत परिस्थितियों के अनुसार हमें लिटरेचर लिखने की जरूरत है। अगर हमारे लेखक, आर्टिस्ट इस काम को नहीं करते तो अच्छा साइंटिफिक दृष्टिकोण पैदा नहीं हो सकेगा। वो खुश हो सकते हैं कि मैंने ये किताब छाप दी। ये कहानी छाप दी ये कविता छाप दी वो खुश हो सकते हैं। जो अच्छा साहित्य नहीं भी हो सकता है। ये जिम्मेदारी उठानी होगी। इसलिए जिसे साइंस करना है साइंस करे लेकिन खूबसूरत साइंस करे। आइंस्टिन के अनुसार इक्वेशन खूबसूरत नहीं है तो इसे खूबसूरत करें। जिन्हें लिटरेचर करनी है उन्हें साइंटिफिक दृष्टिकोण अपनाना ही होगा और ये बड़ी रस्साकशी होगी। एक तरफ वो लोग होंगे जो रूढ़िवादी परम्पराओं को समाज के अंत तक पहुचाने की कोशिश करेंगे वहीं दूसरी ओर इस तरह बाबाओं की दुकानें चलेगी। और पिछले 25-30 साल में देश में बाबाओं की अच्छी फसल हुई है। वहीं दूसरी तरफ मुझे नई नस्लों से बड़ी उम्मीद है जो आप लोग यहां बैठे हैं आप लोगों से उम्मीद करता हूं कि आप संघर्ष करेंगे साइंटिफिक दृष्टिकोण को लागू करने के लिए और इन सारी धर्म के दुकानों को तहस नहस कर देंगे। तभी हमारा देश उस रास्ते में चलने लगेगा जिसके लिए हमने आजादी का रास्ता अपनाया है।

नेहरू पोलटिशियन थे साइंटिस्ट नहीं थे लेकिन दुनिया को साइंटिफिक दृष्टिकोण देकर गए। देश में पॉलटिक्स और बाबाओं का भयंकर गठजोड़ हो गया है। आज के नेता बाबाओं के पैर छूकर बड़े हो रहे हैं। पिछली जनरेशन के नेता भटनागर और होमी जहांगीर के सोबत में राजनीति करते थे। सीबी रमण की सोबत में पॉलिटिक्स कर रहे थे। और मैं नई नस्लों को कहना चाहता हूं कि आप सवाल उठाएं कि जिन नेताओं ने आशाराम और रामरहीम के पांव छुए है वो अगली नस्लों से अपनी गलतियों के लिए माफी मांगे। ये माफी आपको मनवानी होगी। हमारी नस्लों ने अपना काम किया है। अब आपको अपने हिस्से का काम करना निहायत लाजिमी है, और मुझे यकीन है कि आप एक नई दुनिया बनायंगे जो जरूर खूबसूरत होगी।

(पिछले 3 अक्टूबर 2019 को महाविद्यालय में जाने माने वैज्ञानिक, लेखक, कवि और चुनाव में उपयोग में आनेवाले ईव्हीएम के जानकार गौहर रज़ा ने वैज्ञानिक चेतना और साहित्य विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया। जिसका संपादित अंश यहां उल्लेखित है। (सम्पादक)

भारत में संसदीय कार्यविधि की एक झलक

डॉ. (श्रीमती) वेदवती मण्डावी (अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग)

''स्वंतत्रता के पश्चात भारत में पूर्व प्रचलित लोक- तांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप संसदीय लोकतंत्र को अपनाया गया है । यह एक सहभागी प्रणाली है जिसमें जनता, संसद् एवं सरकार की अपनी अपनी जिम्मेदारियाँ होती है । इसकी रचना एवं कार्य पद्धति नागरिकों को सामाजिक न्याय और मूलभूत मानवधिकार उपलब्ध कराने के लिये हुई है ।अतः आम लोगों की अपेक्षायें और आकांक्षाओं इससे जुड़ी है । संसदीय प्रणाली में विधानमण्डल जन प्रतिनिधियों के माध्यम से लोक भावनाओं और आकांक्षाओं का निरंतर गतिशील बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है । अतः लोक सदनों की कार्यवाही को सशक्त एवं अर्थपूर्ण बनाने तथा इनकी प्रतिष्ठा, गरिमा एवं मर्यादा की रक्षा करने का दायित्व भी जन प्रतिनिधियों का होता है, क्योंकि जनता अंतिम रूप से संप्रभु है ।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए संसदीय व्यवस्था में कुछ कार्यप्रणाली एवं नियमों का पालन किया जाता है । इन नियमों का बीजारोपण प्राचीन भारत में हो चुका था, किन्तु 1919 के परिषद् अधिनियम से उसका विस्तार निरन्तर जारी है । जनप्रतिनिधि राजनीतिक दल के माध्यम से संवैधानिक संस्थाओं के कार्यकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान करते हैं ।इसके अतिरिक्त प्रश्नकाल, शून्य काल, स्थगन प्रस्ताव, याचिका, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव, विश्वास एवं अविश्वास प्रस्ताव, संकल्प, राज्यपाल/ राष्ट्रपति अभिभाषिता, विधेयकों पर चर्चा आदि महत्वपूर्ण कार्य विधियाँ है । इन विधियों या प्रणलियों के माध्यम से

जनप्रतिनिधि सार्थक पहल करके लोकप्रियता बनाये रखने में सक्षम हो सकता है । संक्षिप्त में इस कार्यप्रणाली की जानकारी प्रस्तुत है : -

प्रश्नकाल - विधानमंडलों की कार्यवाही का पहला घंटा प्रश्न पूछने और उत्तर देने के लिये नियत है । इसे अवधि को प्रश्नकाल कहते हैं। यह विधान मण्डल का सबसे रोचक काल होता है। उसका उद्देश्य सरकार की खामियाँ अथवा प्रशासन के गलत कार्यों को उजागर करना होता है। प्रश्नकाल का समय 1 घंटा होता है । प्रश्न काल में सदस्यों को किसी भी विषय पर प्रश्न पूछने का अधिकार है । कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर सभी प्रश्नों का उत्तर देना मंत्रियों के लिए अनिवार्य है ।

वर्तमान में सदस्यों को चार प्रकार के प्रश्न पूछने का अधिकार है (अ) तारंकित (ब) अतारंकित (स) अल्प सूचना (द) पूरक प्रश्न । तारंकित प्रश्न कोई भी सदस्य यदि अपने प्रश्न का उत्तर मौखिक चाहते हैं तो प्रश्न से पहले * या चिन्ह बना देते है अतः इन्हें तारंकित कहा जाता है ।इन प्रश्नों के उत्तर प्रायः संक्षिप्त में होते हैं। अतारंकित प्रश्नों के उत्तर लिखित मुद्रित रूप में दिया जाता है । कोई भी सदस्य एकदिन में चार प्रश्न तारंकित एवं अतांरकित प्रश्न पूछ सकता है । प्रश्न पूछने की अवधि कम-से-कम दस और अधिकतम तीस दिन निर्धारित की गई है । दस दिन से कम अवधि की सूचना वाले प्रश्नों को अध्यक्ष की अनुमति से पूछा जा सकता है। प्रश्नों की ग्राह्यता के विषय में पीठासीन अधिकारी को स्टॉफ .. विवेक से निर्णय लेने का अधिकार है । राज्य सभा में एक दिन में 20 तारंकित प्रश्न पूछे जा सकते हैं। वही म.प्र. तथा कई विधान मंडलों में 10 प्रश्न और 101 तक अतारंकित प्रश्न कार्य सूची में आ सकते हैं । तारांकित प्रश्नों में पूरक प्रश्न पूछ सकते हैं ।

शून्य काल - प्रश्न काल के तुरन्त बाद दोपहर 12 बजे प्रारम्भ क्षेत्रों में शून्यकाल का समय एक घंटा निर्धारित है किन्तु कभी-कभी वहाँ से अधिक समय तक चल सकता है । शून्य काल शब्द का प्रयोग करने का कारण ऐसा माना जाता है कि शून्य काल 12 बजे से प्रारंभ होता है और 12 बजे का उपनाम शून्य काल है । सदन में 1960 के दशक में शून्य काल प्रारम्भ हुआ। जैसे सार्वजनिक महत्व के अत्यंन्त महत्वपूर्ण अविलम्बनीय विषयों को सदन में रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। लोकसभा के प्रक्रिया नियम 377 के अन्तर्गत कोई भी सदस्य अध्यक्ष की पूर्व सहमति प्राप्त कर के कोई भी मुद्दा सदन के ध्यान में ला सकता है ।

आधे घंटे की चर्चा - प्रश्न काल के किसी प्रश्न से संतुष्ट न होने पर आधे घंटे की चर्चा के माध्यम से मामले को आगे बढ़ाया जाता है ।

ध्यानाकर्षण - कोई भी सदस्य लोक महत्व के विषय पर समाज का ध्यान आकृष्ट करने के लिये बैठक के डेढ़ घंटे पूर्व सचिव को सूचना देकर प्रश्न पूछ सकता है। ऐसी सूचना की चार प्रतियाँ सचिव को देता है । सभापति ध्यान आकर्षण के अधिक आठ सूचनाओं को स्वीकार करता है । ध्यानाकर्षण की सूचना की प्रक्रिया संक्षिप्त होते हुए भी उपयोगी होता है ।इसके माध्यम से सदस्य जनहित की समस्या को सदन में बहुत आसानी से उठा सकते हैं ।

अविश्वास प्रस्ताव - संविधान के अनुसार मंत्री परिषद सामूहिक रूप से विधान मंडल के प्रति उत्तरदायी होते हैं । वे तब तक पदास्थ रहते हैं, जब तक उन्हें विधानमंडल का विश्वास प्राप्त होता है । अतः विरोधी पक्ष किसी नीति से असहमत हों तब अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से सभा की राय का पता लगा सकता है ।

निंदा प्रस्ताव - निंदा प्रस्ताव अविश्वास प्रस्ताव से भिन्न है । निन्दा प्रस्ताव में उन आरोपों का उल्लेख किया जाता है जिन पर वह आधारित है । यह प्रस्ताव सरकार की कुछ नीतियों या कार्यवाही के कारण निंदा करने

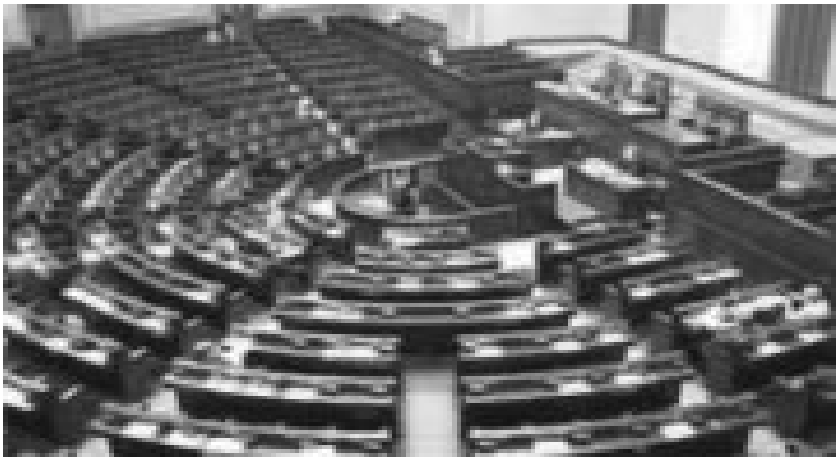

के प्रयोजन से लाया जाता है ।

विश्वास प्रस्ताव - नियमों में विश्वास प्रस्ताव का प्रावधान नहीं है । अतः विश्वास प्रस्ताव को साधारण नियमों के अन्तर्गत लिया जाता है । कभी-कभी राज्यपाल सरकार गठन करने हेतु बहुमत सिद्ध करने हेतु समर्थको की सूची मंगवा सकता है । जैसे 2019 में कर्नाटक एवं 20 मार्च 2020 में म.प्र. के कांग्रेस सरकार को फ्लोर टेस्ट करने कहा गया ।

स्थगन प्रस्ताव - इसे 'काम रोको प्रस्ताव' भी कहा जाता है । इस प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य अविलम्बनीय लोक महत्व के किसी विषय की ओर सरकार का ध्यान तत्काल आकृष्ट करने के लिये किया जाता है । संसदीय व्यवहार में स्थगन प्रस्ताव इसलिये महत्वपूर्ण है कि इसके द्वारा सभा की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को जो पूर्व से कार्य सूची में है उसे स्थागित कराकर इस नये विषय पर चर्चा इस प्रस्ताव के माध्यम से हो सकती है । स्थगन प्रस्ताव पूर्व निर्धारित सूची में नहीं रहता । जैसे वर्तमान में ''कोरोना वाइरस'' संबंधी सुरक्षा के संबंध में सदन में स्थगन प्रस्ताव लाया जा सकता है ।

संसदीय विशेषाधिकार - संसदीय विशेषाधिकार भी ब्रिटिश परम्परा की देन है । जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं निर्भयता पूर्वक कार्य संपन्न करने हेतु कुछ उमुक्ति प्रदान किया गया है । उसे संसदीय विशेषाधिकार कहते हैं । ये विशेषाधिकार दो प्रकार के हैं - व्यक्तिगत एवं सामूहिक । संविधान के अनुच्छेद 105 एवं 194 के अन्तर्गत वाक स्वातंत्र्य एवं न्यायालयीन क्षेत्राधिकार से बाहर रखा गया है। दीवानी प्रकरण में अधिवेशन के 40 दिन पूर्व अथवा बाद में सदस्यों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता । सामूहिक रूप से विशेषाधिकार विधायी सदन में प्राप्त है ।

राज्यपाल का अभिभाषण - आवश्यकतानुसार सत्र के अंत में राष्ट्रपति / राज्यपाल का अभिभाषण होता है। अभिभाषण में सरकार की क्रिया कलापों को रखा जाता है ।

कृतज्ञता ज्ञापन - अभिभाषण के पाश्चात् सत्तापक्ष द्वारा कृतज्ञता के रूप में राष्ट्रपति/राज्यपाल को भाषण के अंत में धन्यवाद दिया जाता है ।

उपरोक्त संसदीय कार्यविधि विधान मण्डलों में अपनायी जाती है । इसतरह केन्द्र एवं राज्यों को सुव्यवस्थित ढंग से उत्तरोत्तर विकास के पथ पर ले जाने का प्रयास किया जाता है ।

प्रकृति व इतिहास की क्रीड़ा स्थली - पूर्वी उड़ीसा

प्रियम वैष्णव, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (इतिहास)

प्रकृति की अनुपम सुन्दरता को धारण किये व इतिहास में कालजयी स्थान रखने वाली धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण नगरी है पुरी । प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शा. वि. या. ताम. स्वा. महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया । भ्रमण के लिये स्थान को लेकर विभाग में मतभिन्नता थी परन्तु पुरी (उड़ीसा) के नाम के प्रस्ताव पर सभी सहमत हो गये ।

विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय सहायक प्राध्यापक, डॉ. ज्योति धारकर व अतिथि व्याख्यता डॉ. अवधेश्वरी भगत व विद्यार्थियों ने मिलकर इस भ्रमण की योजना बनायी व तारीखि 05-03-2020 से 09-03-2020 तक भ्रमण की तिथि निश्चित की गयी। सभी विद्यार्थियों को विभाग द्वारा निर्देशित किया गया कि वे अपने साथ आवश्यक सामग्री ले कर चलें व रेलवे स्टेशन समय से पहुँचें ।

समस्त प्राध्यापक व विद्यार्थी समय पर रेलवे स्टेशन पहुँच गये व ट्रेन में स्थान ग्रहण किया। दुर्ग-पुरी एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय 4:10 मिनट पर दुर्ग स्टेशन छोड़ दी । सभी प्रसन्न चित्त होकर यात्रा पर थे । विभागाध्यक्ष डॉ. पाण्डेय द्वारा शैक्षणिक भ्रमण के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए सभी विद्यार्थियों को भ्रमण के एक-एक स्थलों के बारे में गाईड की तरह निर्देश दिया गया व सभी को आवश्यक शोध सामग्री ट्रेन में ही ऑनलाइन उपलब्ध करा दी गयी । उससे विद्यार्थियों का उत्साह दुगुना हो गया वे सहर्ष इसकी तैयारी में लग गये ।

दिनांक 06.03.2020 दिन शुक्रवार को हमारी ट्रेन पुरी स्टेशन में अपने निर्धारित समय से 2 घण्टे विलम्ब से बजे पहुँची । हम स्टेशन से अपने होटल - होटल विशाल गये जो सर्वसुविधा युक्त विश्रामस्थली साबित हुई। सभी लोगों ने दोपहर को भोजन के बाद महाप्रभु जगन्नाथ के दर्शन की योजना बनाई ।

जगन्नाथ मंदिर -

शाम 4:00 बजे हम मंदिर दर्शन के लिए निकल पड़े । होटल से मंदिर पास था इसलिए हमने पैदल जाने का फैसला किया, जिससे की हम मंदिर के आस-पास की संस्कृति को भी समझ सकें । हर तरफ मिठाईयों व धार्मिक वस्तुओं की दुकानें सजी हुई थी । अस्ताचल सूरज की किरणे भव्य मंदिर के शिखर को प्रणाम कर रही थी ।

श्री जगन्नाथ मंदिर में चमड़े की वस्तुएँ व विद्युत चलित यंत्र (मोबाईल, कैमरा) ले जाना प्रतिबंधित है । हमने मंदिर के बाहर अपनी सारी वस्तुएं जमा की इसके पश्चात् मंदिर में प्रवेश के लिए सिंह द्वार की ओर बढ़े जो की पूर्वाभिमुख है । मंदिर में प्रवेश के लिये अन्य द्वार, अश्वद्वार, गजद्वार है । सिंह द्वार के सामने ही विशाल गरूड़ स्तंभ स्थित है, जिसे कोर्णाक से गंगा वंशीय शासकों ने यहाँ स्थापित किया । सम्पूर्ण मंदिर एक विशाल दिवाल से सुरक्षित किया गया है । मंदिर के अंदर केवल सनातनी हिन्दुओं का प्रवेश है । यह मंदिर कलिंग शैली में निर्मित है, जिसमें भोगमण्डप, जगन्नमण्डप, जगमोहन, देतुल निर्मित है। मंदिर का निर्माण गंगवंशीय नरेश अनंतवर्मन चोडगंगदेव ने 11 वीं सदी में करवाया था । मंदिर का पुनुरूद्धार समय-समय पर होते रहता है। गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा, बलभद्र व सुदर्शन की काष्ठ निर्मित प्रतिमा विराजमान है जिसे देखते ही भक्त अपने समस्त दुःखों को भूल कर अपार शांति का अनुभव करते हैं । कहते हैं कि भगवान की मूर्तियाँ अपूर्ण है व केवल मुख ही पूर्ण रूप से निर्मित है इसलिए चार धामों से यहाँ भगवान केवल भोजन करने आते हैं ।

मंदिर का निर्माण पंचायतन शैली में हुआ है व चूना पत्थर का प्रयोग किया गया है । मंदिर परिसर में ही अनेक मंदिर हैं, जैसे - साक्षी गोपाल, गणेश, दुर्गा, सूर्यमंदिर इत्यादि । हमने मंदिरकी एक विशिष्ट परम्परा को भी देखा, जिसमें पुजारी अपनी पीठ मंदिर की ओर कर मंदिर के शिखर में स्थित अष्टधातु से निर्मित नीतचक्र में ध्वज बदलने जातेहैं, जिसे बढ़ी संख्या में लोग देखने आते हैं । मंदिर से प्रसाद लेकर हम आगे जाने के लिए भगवान जगन्नाथ का आर्शीवाद लेकर निकल पड़े ।

गुंड़ीचा मंदिर :

रथयात्रा के समय भगवान जगन्नाथ अपनी मौसी के यहाँ विश्राम करने आते हैं, जो गुंड़ीचा मंदिर के नाम से विख्यात है । इस मंदिर में श्रीविग्रह तो नहीं है परन्तु लालची ब्राह्मणों द्वारा भक्तों को जगह-जगह परेशान करते का कार्य अवश्य किया जाता है ।

गुड़िचा मंदिर से निकलने के बाद हमें भूख लगी थी इसलिए हमने शुद्ध शाकाहारी, मारवाड़ी भोजनालय में भोजन किया। सभी को निर्देशित किया गया था कि वे अपनी थाली में आन्न का एक कण भी नहीं छोड़ेगे जिसका पालन सभी लोगों ने यथा संभव किया । भोजन के उपरान्त हम सब पुरी के समुद्र तट की ओर बढ़े, जो रात्रिकाल में भी अपनी विशालता व भव्यता को समेटे हुआ था। कुछ समय वहाँ विश्राम कर हम अपने होटल रात्रि विश्राम के लिये आ गये ।

07-03-20

हमने निश्चय किया था कि हम सुबह जल्दी उठकर समुद्र स्नान के लिये जायेंगे । परन्तु समुद्रिय क्षेत्र में मौसम परिवर्तन होते रहता है व सुबह तेज बारिश के कारण हमारे स्नान की योजना असफल हो गयी परन्तु ईश्वर की कृपा से बारिश रूकी और हम कुछ देर के लिए समुद्र में खेलने को गये । हममें से अधिकांश लोगों ने समुद्र पहली बार देखा था, उसकी विशालता ने हम सबको सम्मोहित कर लिया । इसके बाद हम होटल में स्नान के लिए गये व आगे सफर के लिये हमने होटल विशाल से सुखद यादें लेकर विदाई ली ।

रामचण्डी मंदिर -

पुरी से हम कोर्णाक की ओर निकले और उससे पूर्व हम रामचण्डी मंदिर में रुके, जो माँ चण्डी का मंदिर है, जिसमें आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव सहज ही किया जा सकता है। इस मंदिर में व्हेल मछली के जीवाश्म सुरक्षित रखे गये हैं, जिसे देख कोई भी व्यक्ति उस मछली

की विशालता का अनुमान लगा आश्चर्यचकित हो जायेगा।

चन्द्रभागा -

कोणार्क से 4 कि.मी. पहले भारत के सुन्दरतम् व स्वच्छ समुद्र तटों में से एक चंद्रभागा बीच में हम गये। यह बीच बहुत ही सुन्दर व शांति प्रदान करने वाला था, हमने यहाँ कई फोटो खिचाये व सभी ने रेत में चलने वाली गाड़ी में सफर का आनन्द भी लिया । यह बीच आत्मिक शांति प्रदान करने वाला था, यहाँ हमने इसे महसूस भी किया ।

कोणार्क -

चंद्रभागा बीच की सुखद स्मृतियों को साथ लेकर हम उस ऐतिहासिक धरोहर की ओर निकल पड़े जो अपने आप में अनूठा है । कोणार्क अपने सूर्य मंदिर के लिए प्रसिद्ध है । इस भव्य मंदिर को भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण विभाग ने अपने संरक्षण में रखा है । यहाँ प्रवेश के लिये हमने 40 रुपये की टिकट का भुगतान किया ।

यह मंदिर चूना पत्थर से निर्मित है व बहुत ही जर्जर अवस्था में है । परिसर में प्रवेश करते ही नृत्य मण्डप है, जिसमें प्रातः काल नृत्य कर भगवान सूर्य का स्वागत किया जाता था । इसी मण्डप में प्रवेश करने पर सिंह, गज, मानव की प्रतिमा है, जिसमें क्रमशः ये लोग एक-दूसरे को अपने शक्ति के बल पर दबाये हुए हैं। सम्पूर्ण नृत्य मण्डप की दीवारों पर विभिन्न नृत्य मुद्राओं व वाद्य यंत्रों का अंकन है । नृत्य मण्डप के पश्चात मुख्य मंदिर है, जिसमें का गर्भगृह गिर चुका है । कहा जाता है कि इसके शिखर पर

विशाल चुबंक था, जिस कारण समुद्रीनाव दिशा भटक जाते थे इसलिए आक्रांताओं ने उसे गिरा दिया। मंदिर में 12 पहियों का प्रयोग किया गया है जो सूर्य के प्रतीक स्वरूप पुर्ननिर्माण किया गया है । यहाँ चारों तरफ बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं की प्रतिमा स्थापित है । यहाँ अद्भुत शांति का अनुभव हम सबने किया । उस प्राचीन आध्यात्मिक उच्च विचार ने हमें हृदय से आंदोलित कर लिया ।

इसके पश्चात् हम रात्रि विश्राम के लिये भुवनेश्वर के यूथ हॉस्टल में आये जहाँ रात्रि का भोजन के साथ-साथ अनेक सुमधर यादों को अपने जीवन में स्थान दिया ।

08-03-2020

प्रातःकाल उठकर हम सब अपने अंतिम दिवस की यात्रा के लिये तैयार थे परन्तु हमारी गाड़ी निर्धारित समय पर न आ सकी जिससे हमारी उत्साह में थोड़ी कमी हुई परन्तु आगे वह दुगुनी गति से पूर्ण होने वाली थी । गाड़ी के आने के पश्चात् हमने आगे यात्रा प्रारम्भ की ।

उदयगिरी-खण्डगिरी -

भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण स्थलों में से एक स्थल है उदयगिरी-खण्डगिरी की गुफायें । यहाँ 15 रुपये प्रवेश शुल्क है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है। ये दोनों पहाड़ियों में स्थित गुफायें जैनमुनियों के लिए बनवायी गयी थी । उदयगिरी में ही स्थित है प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण स्त्रोत कलिंग राज खारबेल का हाथी गुफा अभिलेख, जिसमें सर्वप्रथम भारत शब्द का उल्लेख किया गया है । इसी पहाड़ी पर दो मंजिला ओपन थियेटर जैसी मुनि-विश्राम स्थली है, जिसमें विभिन्न जानवरों, युद्धो व मुगलों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गयी है । यहाँ हमें अनेक ज्ञानवर्धक बातें पता चली, पहाड़ों पर चढ़ने का अनुभव व आनन्द प्राप्त हुआ । यहाँ स्थित अन्य गुफाओं के अभिलेखों का भी हमने अध्ययन किया । खण्डगिरी में तीर्थकरों की मूर्तियों के साथ-साथ उनके कुल देवियों का भी अंकन किया गया था।

नंदन कानन -

उदयगिरी में हमने नाश्ता कर नंदनकानन उद्यान की ओर प्रस्थान किया, जहाँ प्रवेश शुल्क 50 रुपये था । हम सभी ने समय की कमी की वजह से यहाँ केवल बंदर व पक्षियों , हिरण, नीलगाय की विभिन्न प्रजातियों को बस देखा । विशाल, भव्य जानवरों को देखने का सुखद अनुभव इस बार हमें नहीं मिल पाया ।

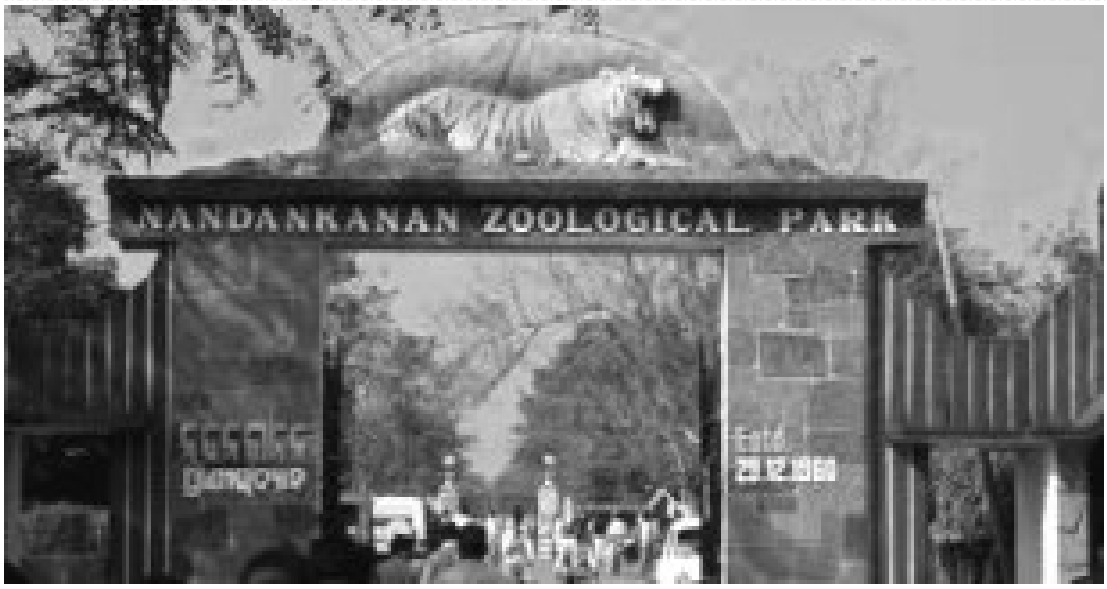

शिशुपाल गढ़ -

अब हम एक ऐसे स्थान के लिये रवाना हुए, जो इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है परन्तु पयर्टन की रुचि से आने वाले लोग वहाँ जाना पसन्द नहीं करते । हमारे विभागाध्यक्ष ने वहाँ जाने का निर्णय किया, जहाँ खारवेल की राजधानी थी । गाँव के भीतर किले की दीवारों के कुछ अवशेष थे परन्तु हमें तो वो 13 स्तम्भ खोजने थे, जो खुदाई से प्राप्त हुए थे । आस-पास के लोगों से पूछने पर हमें वह स्थान मिला जहाँ प्रसिद्ध कलिंग युद्ध हुआ था व खारवेल का राजप्रसाद था । यह स्तम्भ अपनी विशलता के साथ अपने पुराने गौरवमयी इतिहास को लेकर खड़े हैं। परन्तु सरकार द्वारा इन्हें संरक्षित करने का प्रयास नहीं किया गया है ।

चौसठ योगिनी मंदिर - शिशुपाल गढ़ से निकल कर हम चौसठ योगिनी मंदिर की ओर बढ़े । गाँव से बाहर शांत वातावरण में यह मंदिर स्थित है । यह जिसमें बहुत सुन्दर स्थान है । मंदिर आकार में अन्य चौसठ योगिनी मंदिरों की अपेक्षा कम है । यहाँ प्रवेश द्वार पर जय-विजय रक्षा कर रहे हैं । अंदर दीवारों से चारो तरफ 60 देवियों की प्रतिमाएँ है व केन्द्र में एक चबूतरे पर 4 देवियों की प्रतिमाएँ है जहाँ तांत्रिक विधि सम्पन्न की जाती थी । यहाँ हमें तंत्र विद्या व उससे जुड़े तत्वों के बारे में जानकारी हुई ।

राज-रानी मंदिर -

राजा-रानी मंदिर भुवनेश्वर के सबसे सुन्दरतम मंदिरों में से एक है । यह मंदिर एएसआई के संरक्षण में है। यहाँ प्रवेश शुल्क 15 रुपये है । इस मंदिर में पूजा नहीं

होती। प्रवेश द्वार नाग कन्याओं की प्रतिमाएँ हैं बाहरी दीवारों पर जानवरों, नृत्यांगनाओं, सामान्य मानव जीवन देवपुरुष का अंकन किया गया है । इस समय तक भुवनेश्वर का मौसम खराब होने लगा था व थोड़ी-थोड़ी बारिश शुरू हो गयी थी ।

मुक्तेश्वर मंदिर – राजारानी मंदिर से निकलकर हम मुक्तेश्वर महादेव के मंदिर में गये जो कंलिग शैली में निर्मित है । इसका प्रवेश द्वार सबसे अधिक अलंरकृत है व अपनी सुन्दरता से मंदिर की आध्यात्मिकता में चार चांद लगाता है। मंदिर प्रागंण में अनेक मंदिर हैं, जो शिव को समर्पित हैं। परिसर में ही एक तालाब है जहाँ मछलियों को हमने भोजन दिया व आनन्द की अनुभूति ली । परिसर के बाहर ही उड़ीसा सरकार का विक्रय केन्द्र था, जहाँ से सभी ने कुछ न कुछ चीजें अवश्य खरीदी ।

लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर की आत्मा लिंगराज मंदिर में बसती हैं । इस विशाल मंदिर में चमड़े की वस्तुएँ व विद्युत उपकरण ले जाना मना है । मंदिर कलिंग शैली में निर्मित है यहाँ नृत्य मण्डप, मेला प्रागंण, जगमोहन व देतुलका निर्माण किया गया है । मंदिर का अभिषेक होने के कारण शिवलिंग काफी जीर्ण हो गया है । मंदिर परिसर में ही अनेक देवी-देवताओं के मंदिर हैं । मंदिर में गैर-हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है इसलिए लार्ड कर्जन ने इसके चारों तरफ दीवार बनावाई जिससे वे मंदिर को न देख सकें । मंदिर के बाहर एक विशाल जलकुण्ड है । जो पानी ना होने की वजह से खराब स्थिति में था ।

इसके पश्चात् हम दुर्ग आने के लिए भुवनेश्वर रेल्वे स्टेशन की ओर निकले । वहाँ पहुँचकर हमने रात्रि भोजन किया व पुरी-दुर्ग एक्सप्रेस में बैठने का इंतजाम किया । ट्रेन अपने निर्धारित समय पर चली और हम सबने सफर के अंतिम पड़ाव का भरपूर आनन्द लिया । अगली सुबह तक हम ट्रेन में ही थे । मौज-मस्ती करते हुए अपने गुरु के चरणों में रहकर हमने सफर को पूरा किया था । ट्रेन दुर्ग स्टेशन दोपहर के 12:00 बजे पहुँची । सबने एक-दूसरे को होली की बधाई दी । गुरुजनों का आर्शीवाद लिया व सुखद स्मृतियों के साथ अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान किया ।

अंतरिक्ष कार्यक्रम के पितामह

डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक (भौतिकी)

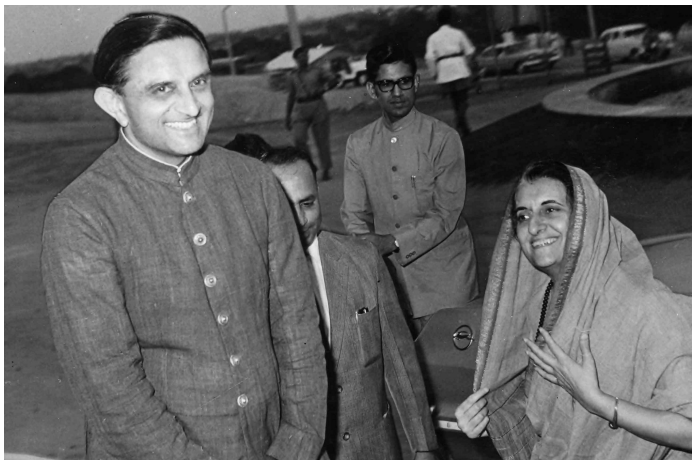

डॉ. विक्रम अम्बालाल साराभाई - किसी भी राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे देश में भी अनेक वैज्ञानिक हुए जिन्होंने अपने योगदान से अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की तथा उनकी उपलब्धियों से भारत को सफलता के नये आयामों तक पहुँचाया । इनमें से एक वैज्ञानिक जिन्होंने भारत को अंतरिक्ष तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके कारण उनको भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का पितामह माना जाता है। ऐसे सृजनशील वैज्ञानिक एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी को हम डॉ. विक्रम भाई साराभाई के नाम से जानते हैं इन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को दिशा प्रदान की तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुंसधान संगठन इसरो की स्थापना की। विज्ञान के पुरोधा डॉ. विक्रम साराभाई ने विविध क्षेत्रों में संस्थाओं का निर्माण किया तथा साथ-ही-साथ भारत की डॉ. अब्दुल कलाम जैसे कोहिनूर हीरे को निखारने में अहम भूमिका निभायी । डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने साक्षात्कार में कहा था कि वे इस क्षेत्र में नये थे डॉ. साराभाई ने उनमें खूब दिलचस्पी ली और उनकी प्रतिभा को निखारा । वे एक महान वैज्ञानिक के साथ-साथ समाज सेवी भी थे । उन्होंने दूरदर्शन को अंतरिक्ष से जोड़ने का प्रयत्न किया जिसके कारण वे सदैव स्मरणीय रहेंगे । आज दूरदर्शन की समस्त कार्य प्राणाली अंतरिक्ष विज्ञान पर आधारित है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में दूरदर्शन द्वारा शिक्षा, कृषि, मौसम पूर्वानुमान में मदद मिल रही है ।

जीवन परिचय :-

विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919को अहमदाबाद गुजरात में हुआ था । इनके पिता का नाम श्री अम्बालाल साराभाई तथा माता का नाम श्रीमती सरला साराभाई था । इनके पिता कपड़े के प्रसिद्ध व्यापारी थे । इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा घर पर प्राप्त करने के साथ तकनीकी, भाषा विज्ञान की शिक्षा विशिष्ट रूप से प्राप्त की। इन्होंने इंटर मीडियट तक विज्ञान की शिक्षा गुजरात से पूरी की तथा इसके पश्चात 1939-40 में सेंट जोंस कॉलेज कैम्ब्रिज से ट्राइयोज प्राकृतिक विज्ञान में डिग्री प्राप्त की । द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने पर वे भारत लौट आये और बैंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में सर सी.वी. रमन तथा होमी जहाँगीर भाभा के साथ अंतरिक्ष विज्ञान पर कार्य करने लगे ।

शोध कार्य : विक्रम साराभाई सर सी.वी. रमन के मार्गदर्शन में ब्रह्माण्ड विकिरण पर अनुसंधान करने में लग गये ।इन्होंने अपना पहला शोध पत्र भारतीय विज्ञान अकादमी की पत्रिका में प्रकाशित कराया जिसमें कास्मिक

किरणों का समय रूपान्तर के बारे में बताया । सन् 1940-45 के बीच इन्होंने बंगलौर एवं कश्मीर हिमालय में उच्च स्तरीय केन्द्र के गाइगर मूलर गणकों पर कास्मिक किरणों पर समय परिवर्तन का अध्ययन किया। सन् 1942 में अंतरिक्ष किरणों की तीव्रता पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया । इसके पश्चात सन् 1445 में में वे. कैम्ब्रिज एवं कैविन्डश प्रयोगशाला में कास्मिक किरणों पर शोध जारी रखा । आपको सन् 1947 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा कास्मिक किरणों पर शोध के लिए डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया । इसके पश्चात् वे भारत लौट आये और अपने अनुसंधान में लगे रहे। उन्होंने अपने अनुसंधानों से निष्कर्ष निकाला कि मौसम विज्ञान परिणाम कास्मिक किरण के दैनिक परिवर्तन प्रेक्षण पर पूर्ण रूप से प्रभावित नहीं होता । साथ ही साथ यह भी बताया कि अवशिष्ट परिवर्तन विस्तृत एवं विश्वव्यापी है और यह सौर क्रिया कलापों के परिवर्तन से सम्बन्धित है। उन्होंने सौर तथा अंतरग्रहीय भौतिकी में अनुसंधान के नये क्षेत्रों के सुअवसरों की कल्पना की थी । विक्रम साराभाई ने 86 वैज्ञानिक शोध पत्र लिखे तथा 40 संस्थानों का निर्माण किया । जिसके कारण उन्हें संस्थान निर्माता भी कहा जाता है ।

एक मौलिक विज्ञानी के अनुसार विक्रम साराभाई का उद्देश्य जीवन को स्वप्न बनाना एवं उस स्वप्न को वास्तविक रूप देना था ।

संस्थाओं का निर्माण 15 नवम्बर 1947 को अहमदाबाद में विक्रम साराभाई ने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला की नींव रखी तथा इस प्रयोगसाला में 1965 कर निदेशक के रूप में कार्य करते हुये अंतरिक्ष कार्यक्रम को गति प्रदान की । सन् 1955 में कश्मीर के गुलमर्ग, त्रिवेन्द्रम तथा कोड़ाईकनाल में अंतरिक्ष अध्ययन केन्द्र स्थापित किये । 15 अगस्त 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना की । इसरो के अध्यक्ष के रूप में रोहिणी, मेनका उपग्रह प्रेक्षेपित किये गये।

इनके द्वारा स्थापित संस्थाओं का विवरण निम्नलिखित है -

1. भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला अहमदाबाद
2. भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद
3. सामुदायिक विज्ञान केन्द्र अहमदाबाद
4. दर्पण एकेडमी फार परफार्मिंग आर्ट : - इस संस्था का निर्माण साराभाई ने अपनी पत्नी मृणालिनी साराभाई (प्रसिद्ध नृत्यांगना) के साथ मिलकर किया । इन दोनों से एकमात्र पुत्री मल्लिका साराभाई का जन्म हुआ ।
5. विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र त्रिवेन्द्रम
6. फास्टर-ब्रीडर टेस्ट रियक्टर कल्पकम
7. वैरियवल एनर्जी साइक्लोट्रान प्रोजेक्ट कोलकाता
8. इलेक्ट्रानिक कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि. हैदराबाद

पुरस्कार/सम्मान :

1. डॉ. विक्रम साराभाई को 1962 में शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
2. सन् 1966 में विज्ञान एवं अभियांत्रिकी क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया ।
3. सन् 1972 में डॉ. विक्रम साराभाई को मरणोपरान्तक पदम विभूषण से भी सम्मानित किया गया ।

30 दिसम्बर 1971 में डॉ. विक्रम साराभाई कोहेल्सिअन कैसल त्रिवेन्द्रम (केरल) में निधन हो गया । इस महान वैज्ञानिक के सम्मान में त्रिवेन्द्रम स्थित थुम्बा इक्वेटोरियल राकेट लांचिग स्टेशन और सम्बन्धित अंतरिक्ष संस्थाओं का नाम बदलकर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र रखा गया । इनके द्वारा 'इसरो' की स्थापना कर भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों ने एक के एक बाद सफलतायें प्राप्त कर नयी उँचाईयों को छुआ । इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर भारत को सम्मान दिलाया, साथ ही साथ देश के पहले सेटलाईट लांच आर्य भट्ट में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । विक्रम साराभाई के व्यक्तित्व का उल्लेखनीय पहलू उनकी रूचि की सीमा का विस्तार और ऐसे तौर तरीके थे जिनके बल पर उन्होंने अपने विचारों को संस्थाओं में परिवर्तित कर दिया ।

डॉ. विक्रम साराभाई आज सशरीर हमारे बीच भले ही न हो, परन्तु इनको परमाणु ऊर्जा, भौतिक विज्ञान, औषधि निर्माण, वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान को भारत कभी भी भुला नहीं सकता । डॉ. साराभाई का जीवन विश्वभर के विद्यार्थियों और युवा वैज्ञानिको के लिये प्रेरणा का अनमोल स्त्रोत है ।

उनके प्रेरणादायक विचार हम सबको उर्जान्वित करते रहते है। डॉ. विक्रम साराभाई के अनुसार -

1. मेरा यह मानना है कि जिस व्यक्ति के पास समय के लिये सम्मान नहीं है, और समय की भावना नहीं है, वह कम हासिल कर सकता है ।
2. केवल अनुभव के लिये कोई बड़ा महत्व नहीं दिया जाना चाहिए ।

सन्दर्भ – 1. साइटिफिक वर्ल्ड ISSN. 2394-3734
2. विकीपीडिया श्रोत
3. विज्ञान प्रसार
4. इसरो श्रोत

हमर छत्तीसगढ़

शीतल सेन एम.ए. II सेमेस्टर (हिन्दी)

कइसे करौं बखान संगी मय, हमर छत्तीसगढ़ के
अइसे जादू हे संगी ईहां के माटी मा
बिसरा जाबे, परदेश तंय ।
बटकी मा बासी, अउ चिमटी मा नून,
इहां के गीत ला संगी, तय कान दे के सुन
सुआ, ददरिया, करमा, पंथी
हमर धरोहर हमर संस्कृति ।
सरगुजिया, लरिया, बस्तरिया, अउ खल्टाही
ईंहा भाखा-बोली तोर मन ला संगी, बड़ मिठाही
ठेठरी, खुरमी, कुसली, पपची अऊ सोहारी
जेला देख के तोर मुँहु मा, पानी आ जाही ।
डोंगरगढ़, सिरपुर, राजिम अऊ सिया-दाई के
देख सुघहर दृश्य ला तोर मन हरसाही ।
बिहनिया के फरा, अउ रात के बासी
खाथे इंहा के जम्मो बासी ।
इहां के सब्बो परब तिहार ... मा
सजथे सुघ्घर हमर छत्तीसगढ़ महतारी ।
अरपा पैरी अउ महानदी के धार
करके दर्शन संगी करै जोर के हाथ
कइसे करौं बखान संगी मय हमर छत्तीसगढ़ के ।
अइसे जादू हे संगी, ईहां के माटी मा
बिसरा जाबे, परदेश तँय+ ।

माँ

ज़ैनब खातून, एम.ए. II सेमेस्टर (इतिहास)

आखों में दर्द छुपा के
मिलती हो सबसे मुस्कुरा के
ममता की मूरत हो तुम
खुदा की बनाई इक खूबसूरत-सी मूरत हो तुम ।।

जहां की रचनाकार हो तुम,
माँ! कुम्भकार हो तुम
मुस्कुरा के हर परिस्थिति को सम्भाल लेती हो,
माँ! इक खूबसूरत अदाकार हो तुम ।।

अपनी ममता से इस समाज को गढ़ती हो तुम
माँ! एक कलाकार हो तुम
अपनों के लिए अपनी पूरी जिन्दगी कुर्बान कर
देती हो,
माँ! जहाँ में भगवान का अवतार हो तुम ।।

छोटे से सपने

रंजना चन्द्रकार, बी.एससी. III

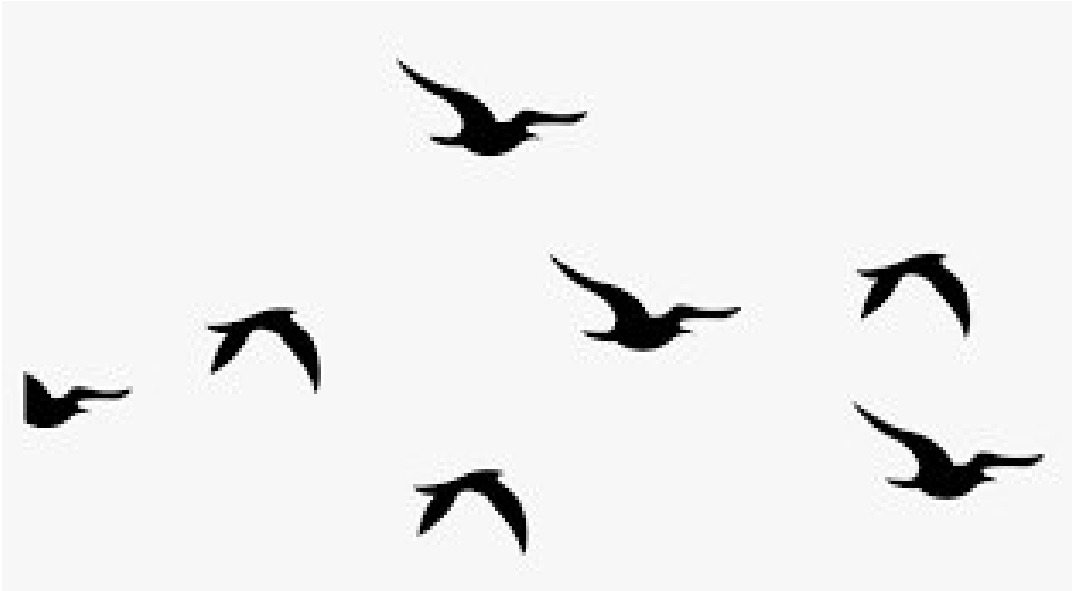

छोटे से सपने हैं,
छोटी-सी उड़ान,
लफ़्ज़ों में नहीं बयां
इतना हो सम्मा
न।
चाहे आए आंधी या
आए तूफान, अपनों
के खातिर छू लेंगे आसमान ।

अर्जुन के तीर-सा साधेंगे बाण,
दे मारेंगे वहाँ जहाँ
हो अभिमान ।
चढ़ती आँधी भी थम जाएगी
ऐसा करेंगे उत्थान
आज नहीं तो कल, पर
बनाएंगे अपनी पहचान ।

जब सपने हुए मेरे पूरे

मानसी यदु, बी.एस.सी. II (भूगर्भशास्त्र)

जब वो पहली बार तेरा खत आया

इस भटके हुए राही को राह मिल पाया

जो वर्दी पहन के दिखलाया

माँ-बाप के आँखों में गरब नजर आया

पूरे परिवार को जब जेब में समेट रख पाया

तो भारत माँ का बेटा कहलाने का महत्व समझ आया

सीने पे खाके गोलियाँ जो मैं मुस्काया

तो जीने का सलीका आया

जो शहादत के बाद शहीद कहलाया

तिरंगे में लिपटा मैं लौट आया

सबकी नम आँखों ने मुझे बतलाया

मैंने सपना अपना पूरा कर दिखाया

मैंने सपना अपना पूरा कर दिखाया ।

फिर एक नई शुरूआत करते हैं

आकांक्षा साहू, बी.एस.सी. I

चलो आज फिर एक नई शुरूआत करते हैं

हवाओं से हम भी बात करते हैं

पुरानी यादों को भूलकर

चलों आज फिर एक नई शुरूआत करते हैं ।

गलतियों को माफ करते

अच्छाईयों को अपनाते हैं,

मस्ती-मस्ती में ही सही चलो फिर

एक नई शुरूआत करते हैं ।

गुजरते गये हैं, कई लम्हें

क्या खोया, क्या पाया

सब भूल - बिसार करते हैं,

चलों आज फिर एक नई शुरूआत करते हैं ।

ख्वाहिशें हर पल हमारे अंदर घर करते

उन्हें पाने के लिए कोशिश हम करते हैं,

उन्हीं कोशिश के लिये ही सही

चलो आज फिर एक नई शुरूआत करते हैं ।

क्या तुझमें कम क्या मुझमें कम

इन सब की फ्रिक छोड़

लाईफ का एक नया चेप्टर ओपन करते हैं

चलों फिर आज एक नई शुरूआत करते हैं ।

कबीर दास के उल्टा बानी

भूपेश कुमार, एम.ए. II सेम. (हिन्दी)

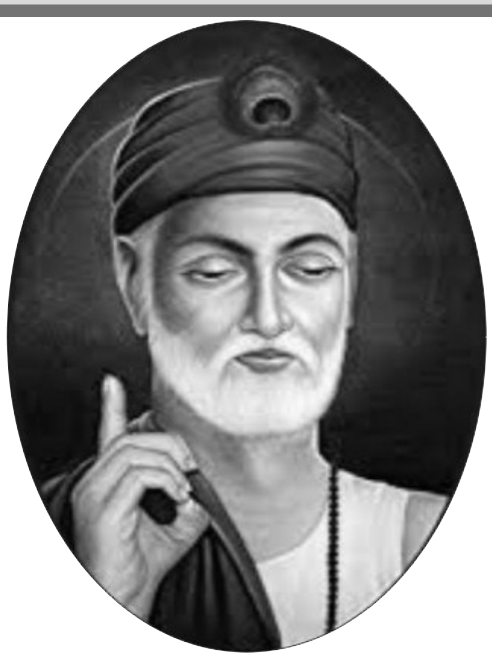

ये कबीर दास के उल्टा बानी
ऐदे बरसे ला कमरा, अउ भिजेला पानी जी...।

बूझो-बूझो गोरखनाथ अमृत बानी
ऐदे बरसे ला कमरा, अउ भिजेला पानी जी...।
बूझो-बूझो .....

कौंवा के डेना पिपर करे बासा,
मुसुवा के बिला म बिलाई होय नासा जी ...।
बूझो-बूझो .....

तरि हे हंउला उपर पनिहारिन
लइका के गोदी में खेले महतारी जी .... ।
बूझो-बूझो .....

बांधे ला घोड़ा, भागेला खूंटा,
चढ़के नगाड़ा बजावत हे डंडा जी ....।
बूझो-बूझो .....

भागे कुकुर भूँके ला चोर,
मरगे मनखे झीकत हे डोर जी .....।
बूझो-बूझो .....

पहली रे पूत पाछे भई माई,
चेला के गुरु लागे पाईं जी .....।
बूझो-बूझो गोरखनाथ अमृत बानी जी ।

नाचा मया पिरित के सुघ्घर साँचा

अंबिका मरकाम, एम.एससी. II सेमेस्टर (भौतिक शास्त्र)

हँसी ठिठोली अउ मया, पिरित के हावय सुघ्घर साँचा
जेन ला कहिथन हम अपन छत्तीसगढ़ के नाचा
अगुवा के निकलथे दू झन जोक्कड़
टेड़गा लउठी ला धर के हँसवाथे
संग मा पाछू आथे परी ओखर
मन पसन्द गीत मा नाच के सब ला मोहाथे
अऊ जब होथे अध रतिहा, तब गम्मत के बेरा आथे
हाँसत-हाँसत देखइया मन के
पेट पिरा जाथे
दाऊ मंदराजी के सपना आय येहा
जेमा हमर संस्कृति हा बसथे
अब कहाँ पाबे नंदावथे नाचा
लोगन मन येला देखे बर तरसथे
छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य आय, अऊ बड़ सुघ्घर हे येखर ढाँचा
छत्तीसगढ़ के संस्कृति बसथे वो हरय हमर नाचा
हँसी ठिठोली अउ मया पिरित के हावय सुघ्घर साँचा
जेन ला कहिथन हमन अपन छत्तीसगढ़ के नाचा ।

अपन मुड़ी मा बोझा उठाय बर परही

कुलेश्वर जायसवाल, एम.एससी. II (बायोटेक्नोलॉजी)

अंगरेजी तंय पढ़े हस तक का बड़े बात हे
विदेशिया के बोली भाषा तोला भात हे ।
महतारी भाखा बोले बर तोला नई आत हे
अउ जेन ल आथे ओ ह बोले बर लजात हे ।

सबके धियान रखइया संगी हवय मोर गाँव
गुरतुर हबय बोली भाखा जेखर छत्तीसगढ़ी नाव ।
अपन मुहुँ ले तोला अउ कतका मय बताँव
फोरिया के देख लव आँखी म छत्तीसढ़िया आंव ।

चुप रेहे म काही नइ मिलय, मुड़ उठाय ल परही
दूसर के भरोसा ले अब, उबराय ल परही ।
अपन मुड़ी म बोझा, आज उठाय बर पर ही ।

हम हावन सबके हितवा जी

लेविश कुमार, बी.एससी II (इतिहास)

घाम घरि के दिन म
बासी गजब सुहाते जी ।

नून मिरचा अउ गोंदलि संग
पसिया बने पियाथे जी ।

आमा चटनी के अमसुर
नुनझुर म बने खवाथे जी ।

हरन हम छत्तीसगढ़िया
पेज म तन जुड़ाथे जी ।

ठंडा मतलब बोरे बासी
ईहि हरय हमर जलपान जी ।

खाथन बटकी-हड़िया-हड़िया
गाँव देहात के पहचान जी ।

गाँव-गली म खेलथन भौरा बाँटी
मैदान कहाँ ले पाबो जी ।

झूठ लबारी ल नई जानन,
हावन सबके हितवा जी ।

दुख पीरा महतारी ल बताथन
नई हावन परबुधिया जी ।

छोटे-बड़े के नाम लेवईया,
दाई-दादा के दुलरवा जी ।

अंधियार म दिया जलाइया
फैलावत हे उजियारा जी ।

भेद भाव ल नई जानन
दया मया के संगवारी जी ।
बोली हमर छत्तीसगढ़ी
हावन हमन छत्तीसगढ़िया जी ।

दोस्ती

मोहनदास, बी.एससी. II (कम्प्यूटर साइंस)

घर के दरवाजों से गाँव के गलियारो तक
सड़क से लेकर मैदानों तक
चलती थी गाँव के नदी में एक कश्ती
है वो तो तेरी-मेरी दोस्ती ।

हंसी ठिठोली की बातों से
जोरों की ठहाकों तक
बागों की बहारों से
मेढ़ों के कांटो तक
बरसाती के पानी से, ठण्डी की महीनों तक,
जिसके फसाने में थी फँसती
है वो तेरी मेरी दोस्ती ।

फसलों की बाली से लेकर
सूरज की लाली तक
कृष्ण रात की सन्नाटों से लेकर
चिड़ियों की मनमानी तक
खुशियों की चाहत से लेकर
घबराहट की आहट तक
जिसे देख दुनिया थी जलती
है वो तो तेरी मेरी दोस्ती ।

कमरे के अकेलेपन से लेकर
सपनों के मयखाने तक
आँखों की अटखेली से लेकर
लबों की फुसफुसाहट तक
जिससे थी दुनिया चौकती
है वो तो तेरी मेरी दोस्ती ।

आँचल भावे की कविताएँ

एम.एससी. II सेमेस्टर (भौतिक)

अब होना है जुदा

होना है अब जुदा
फूलों को खुशबुओं से
ख्वाबों को नींद से

होना है अब जुदा
चाँद को रात से
सूरज को दिन से

होना है अब जुदा
यादों को तेरी यादों से
हाथों को तेरे हाथ से

होना है अब जुदा
अतीत को वर्तमान से ।

लौट कर जरुर आयेगा

किसी ने अपनी माँ से वादा किया था
कि वो लौट कर जरुर आयेगा
फिर चाहे वो तिरंगे में लिपट कर आए
या तिरंगे को हाथ में ले कर आए

लिख पाता वो भी जवाब
हर उस चिट्ठी का अगर बँदूक में
उँगलियाँ उसकी सारी फँसी ना होती ।

तू लड़ के जीत

सुनीता, एम.ए. III सेमे. (राजनीति)

ना शर्म कर
ना सर झुका
गगन को छू
और गीत गा
सितारा बन, और मुस्कुरा
तू लड़ के जीत
तू बढ़ के जीत
सारी हदें मिटाकर जीत
हर जुल्म को मिटाकर जीत
तू इंकलाब के गीत गा..
तू वह पहन जो तेरा मन हुआ
ना कर सहन
तू बन प्रचंड
चट्टान बन
शर्म छोड़, तन के चल
सड़क पर चल या घर पर चल
जमीन को स्वर्ग बनाती चल .....

मेहनत का फल

अमित टण्डन, बी.ए. II

मेहनत का भी फल मिलता है
आज नहीं तो कल मिलता है
कोशिश से हर कुछ संभव है
पत्थर से भी जल मिलता है ।

मेहनत का फल तब मिलता है
कठिन प्रश्न का हल मिलता है
जहाँ की उपजाऊ मिट्टी में
परिश्रम से स्वर्ण मिलता है ।

विश्वास से भुजबल मिलता है
किस्मत से सदा छल मिलता है
सत्य सुमार्ग के लक्ष्यों में ही
मेहनत का शुभ फल मिलता है ।

एक अजब-गजब सी लुका-छिपी

युगांश सांवरिया, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (पी.सी.एम.)

यूँ शांत चली आयी है
अपनी नटखट चालों से
धीरे-धीरे कदम बढ़ाई है
मन में कुछ सोच विचार लिये
थोड़ा-सा वो हमें देखती
छिपकर आगे बढ़ी चली आयी है ।
सामने रखे पात्र से
कुछ मुर्रे उठाकर खायी है
हम जरा-सा तुझे देखते
तू पेड़ के पास चली आयी है
कुछ कदम चलकर हम आगे आये
तू तो पेड़ पर चढ़ आयी है

हम जरा-सा क्या बैठते
अब तेरी हिम्मत दुगुनी हो आयी है ।
तू अब तो घर के अन्दर
धीरे-धीरे कदम बढ़ायी है
उसके बाद जो हमने उसे देखा
सोचा वह अब अन्दर न आयेगी,
यह अजब-गजब सी लुका-छिपी
हमें हमेशा तेरी याद दिलायेगी ।।

महूँ जाहूँ पढ़े बर

दुर्गेश्वरी वर्मा, एम.ए. हिन्दी, एम.ए. II सेमे. (हिन्दी)

महूँ जाहूँ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर
दुनिया के संगे संग, आघू महूँ बढ़े बर ।

सुने हंवों गुरुजी नाच-नाच के पढ़ाथे
सब्बो संगी बतावत रहीन बड़ मजा आथे
स्कूल के मजा पाए बर, नव रीत चलाए बर ।

महूँ जाहूँ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर
दुनिया के संगे-संग आघू महूँ बढ़े बर

स्कूल म मैं पढ़िहौ-लिखहौ, और ज्ञान ला पाहौं
भूख कहुँ लागही त मधियान भोजन म खाहौं
पोस्टिक भोजन खाए बर, गियान के जोत जलाए बर

महूँ जाहूँ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर
दुनिया के संगे-संग आघू महुँ बढ़े बर।

भईया के संग म जाहूँ अऊ भईया के संग म आहूँ
मोर ऊपर तुँहर करे करम ला कभु नहीं भुला हूँ
मोरो जिनगी सँवारे बर, दू कुल के मान बढ़ाए बर
महूँ जाहूँ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर
दुनिया के संगे-संग आघू महूँ बढ़े बर।

का पिरा ला बतांव

जितेन्द्र कुमार, एम.ए. II सेमे. (हिन्दी)

मनखे हा बसगे परिया दइहान
गउ हर किंजरथे गली खोर
दुध पियत ले सबो हर हमर
छोड़ागे तहाँ ले न तोर न मोर।

नरवा ना पानी आवय नहीं
भुइयाँ मा माते हे छेदा छेद
भुइयाँ के पानी घलो अटांगे
किसान के फूटहा भाग ला देख ।

ची लम्बे ची अउ टप्पा बिसरागे
बांटी भौरा ह घलो नंदागे
गिल्ली-डण्डा ह सुहावय नहीं
पबजी खेलई म दिन ह पहागे ।

मोटू पतलू छोटे भीम का आगे
बबा के कहानी ह घलो थिरागे
का बिपत ला बताओं मैं हा
मोबाइल के फांदा में लइका फंदागे ।

चले हम शिष्ट ढूंढने

सुनीता, बीएस.सी II

अपशिष्टों के ढेरों में चले हम शिष्ट ढूंढ़ने
जैसे विशाल समंदर में तिनके तैरते
अब तो बस रह-रह यही करने
अपशिष्टों के ढेरों में चले हम शिष्ट ढूंढ़ने

राह अंधेरी घनी, है बादल
बस जुगनू का सहारा लेते
हाथी के साहस से अब
खुद में ये श्वास भरते
मानो कीचड़ की बाढ़ों में,
कोई कमल का फूल ढूंढने ।

श्मशानों की सन्नाटों में
आवाजों की गूँज सुनने
आंधी के आगे झुककर उसको ये बतलाने
तुझसे हारने नहीं, आये हम तुझको हराने ।
मानो मरुस्थल की झुंझलाहट में,
कोई पेड़ का ठौर ढूढने
अपशिष्टों के ढेरों में चले हम शिष्ट ढूंढने ।

मोमबत्ती जला देना

राहुल कुमावत, एम.ए. II सेमे. (राजनीति)

मोमबत्तियाँ जला देना
हुआ आज कुर्बान मैं
राजनीतिक की रोटियाँ पका लेना
मेरे इस बलिदान पे
दिखावे का नंगा नाच दिखा देना
किसी चौराहे पर
हाथों में ले तस्वीर हमारी
झुंड बना श्रद्धांजलि मना लेना
मरते हैं हम सीमाओं पर
तुम एक दिन का स्वांग रचा लेना

मेरी भी यह अभिलाषा है
पुलवामा की ठिठुरन या
रेगिस्तान की भीषण गर्मी में
इन सीमाओं पर डटकर अपनी
दिखाओ देशभक्ति जरा ।।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा में भर्तृहरि का प्रभाव

प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान (सहायक प्राध्यापक, संस्कृत)

भर्तृहरि संस्कृत साहित्य में एक महान नीतिकार कवि के रूप में प्रसिद्ध है। भर्तृहरि एक प्रतापी सम्राट, प्रजा वत्सल, कला प्रेमी और संस्कृत के महान कवि एवं वैयाकरणी थे । भर्तृहरि के शतकत्रय अत्यन्त प्रसिद्ध हैं जिनमें उन्होंने जीवन में कई पक्षों को अपने पद्यों के माध्यम से व्यक्त किया है । वे शतकत्रय इस प्रकार हैं - 1. नीति शतक, 2. श्रृंगार शतक, 3. वैराग्य शतक।

इसके साथ उन्होंने एक वैयाकरण ग्रंथ की भी रचना की जिसे हम 'वाक्य पदीयम ' के नाम से जानते हैं। यह संस्कृत साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध है ।

इस प्रकार भतृहरि अपने ग्रन्थों के माध्यम से जनमानस को अपने अनुभवों तथा ज्ञान से प्रभावित करते हैं । उनके शतक त्रय उपदेशात्मक हैं । प्रत्येक शतक में सौ-सौ श्लोक हैं । तीनों ही ग्रंथ अपने विषय के अद्‌भुत ग्रंथ हैं। जो उनकी विद्वता और अनुभव का परिचायक है। इसी प्रकार उनकी वैयाकरण ग्रन्थ 'वाक्य पदीयम्' भी उनके संस्कृत व्याकरण विषयक ज्ञान को बताता है । इस प्रकार एक महान राजा, महान योगी, विरक्त कवि, संस्कृत के मर्मज्ञ विद्वान भर्तृहरि जी का जीवन लोक जीवन को रंजकता के साथ प्रभावित करता है । भर्तृहरि का जीवन लोक गाथा के रूप में जन-जन को प्रेरित करता है। जनमानस इनकी लोकगाथाओं में स्वयं को जोड़कर देखता है । हिन्दी भाषी क्षेत्रों में आंचलिकता के साथक भर्तृहरि भरथरी के रूप में प्रसिद्ध हैं या भरथरी बाबा के रूप में विख्यात हैं । उनके जीवन वृत्तों के साथ योगी गोरखनाथ के योग व उनके चमत्कार का भी जिक्र इन भरथरी लोक

गाथाओं में दिखाई देता है ।

भतृहरि का जीवन वृत्त -

भर्तृहरि एक प्रतापी राजा, कुशल प्रशासक प्रजावत्सल होने के साथ एक महान कवि, विचारक तथा व्याकरण के मर्मज्ञ थे ।

संस्कृत साहित्य में भर्तहरि को नीतिकार के रूप में जाना जाता है । इनका जीवन वृत्त विविधताओं से युक्त है। लोककथाओं के अनुसार इन्होंने योगी गोरखनाथ से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की थी । कहा जाता है चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य भर्तृहरि के छोटे भाई थे । ये विक्रम संवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य ही थे । इस पर बहुत से

विद्वानों में मतभेद है ।

भर्तृहरि की कथा के दो रूप हमें लोक कथाओं में सुनने को मिलते हैं ।

एक लोक गाथा में कहा जाता है कि भर्तृहरि उज्जैनी के शासक थे । इनके पिता का नाम चन्द्रसेन था । ये अपनी पिंगला नाम की रानी से बहुत प्रेम करते थे, परन्तु रानी से उन्हें प्रेम में धोखा मिलने से वैराग्य धारण करते हुए योगी बन गए ।

दूसरी लोककथा ऐसी है कि जंगल में एक पति के मृत होने पर उसकी पत्नी द्वारा पति की चिता पर प्राण त्याग दिया जाता है । इसे देख राजा को बड़ा आश्चर्य होता है । वे इसकी चर्चा रानी पिंगला से करते हैं । पिंगला कहती है चिता में कूदने की जरूरत ही नहीं, वे तो उनकी मृत्यु का सामाचर सुनकर ही प्राण त्याग देतीं।

राजा इस पर रानी की परीक्षा लेना चाहते हैं और एक दिन झूठा संदेश भिजवाते हैं कि राजा की शिकार के दौरान मृत्यु हो गई । रानी सुनते ही प्राण त्याग देती है । राजा जब यह समाचार सुनते हैं तो उन्हें पश्चाताप और आत्मग्लानि होती है और वे गोरखनाथ के शरण में जाकर संन्यासी बन जाते हैं ।

महान कवि और राजा भर्तृहरि का जीवनवृत्त छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान में लोकगाथा के रूप में गाया जाता है । विशेषकर छत्तीसगढ़ में आज भी भर्तृहरि का जीवनवृत्त लोकप्रिय है। भर्तृहरि को यहाँ भरथरी के नाम से जाना जाता है । भरथरी गीत को छत्तीसगढ़ में योगी गीत भी कहते हैं । छत्तीसगढ़ी भरथरी किसी जाति विशेष का गीत नहीं है । जो भरथरी का गीत गाते हैं वो अपने आपको योगी कहते हैं ।

सुनिले मिरगिन बात
काल मिरगा हे राम
मोला आये हो ओ
एक जोगी ये न
ओ कुदावत हे ओ

भरथरी गायन में छत्तीसगढ़ अंचल का प्रभाव दिखाई देता है । लोकगाथा एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करती है और जहाँ जहाँ पहुँचती है वहाँ की परम्पराओं को ग्रहण करती है । छत्तीसगढ़ी की भरथरी में कई जगह सतनाम का भी उल्लेख आता है -

तैंहर ले ले बटी
सतनामें ल ओ

छत्तीसगढ़ में सतनाम पंथ प्रचलित है। सतनाम का अर्थ है नाम की महिमा । इस तरह धीरे-धीरे सतनाम शब्द का प्रयोग भरथरी गायन में होने लगा ।

छत्तीसगढ़ में लोक कथाओं में राजा भरथरी की कथा बहुत प्रसिद्ध है । छत्तीसगढ़ अंचल में आज भी पुरानी पीढ़ी के लोग भरथरी गायन को पसन्द करते हैं ।

आज भी लोक मंचों में लोककथाओं के माध्यम से भर्तृहरि के जीवन से प्रेरणा ली जाती है । भर्तृहरि जीवन के एक पक्ष को उजागर करते हैं जिससे जनमानस प्रभावित होता है । उनका जीवन के प्रति दृष्टि, संसार की नश्वरता का ज्ञान, उसकी क्षणभंगुरता के प्रति ध्यान जन-मानस को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । जब व्यक्ति जीवन के किसी पक्ष से दुखी और निराश होता है तो भर्तृहरि का जीवन उन्हें कहीं न कहीं जीवन जीने प्रेरित करता है ।

जनसंख्या विस्फोट

डॉ. आई.एस. चन्द्राकर, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल)

पृथ्वी पर जनसंख्या वृद्धि की तुलना 'बम में लगे तार से किया जाता है, जो बारूद तक पहुँचने के पहले तक धीमें और रूक-रूक कर जलता है ।' मनुष्य जाति का प्रारंभिक इतिहास देखें जो जनसंख्या विरल तथा विकास धीमा था। जनसंख्या वृद्धि में प्रथम विस्फोट वैज्ञानिक तथा औद्योगिक क्रांति के युग से प्रारम्भ होता है, इसमें तकनीकी उन्नति ही नहीं सम्बन्धित आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का भी योगदान था । तीन शताब्दी पूर्व जनसंख्या की वृद्धि दर लगभग स्थिर था जो उच्च मृत्यु दर का परिणाम था, जिसके कारण उच्च जन्म दर का प्रभाव भी विफल होता रहा । सम्भवतः 10 वर्ष की आयु पहुँचते-पहुँचते आधे बच्चे मर गये, 50 प्रतिशत जनसंख्या 20 वर्ष से कम आयु की होती थी, वृद्धों की संख्या कम, जीवन क्षय अत्यधिक था ।

In the long run, of course, equilibrium must be reached between birth rates and death rates, this is the problem of the balance of nature. Characteristic of all living thing. But this long term problem that burgeoning population growth in the less developed countries is threatening their economic growth and the imporvement of their populations' well-being and there by end angering the peace of the world.

प्रति एक अरब जनसंख्या वृद्धि में लगने वाला समय 1810 के पूर्व सैकड़ों हजार वर्ष, 1925 तक 115 वर्ष, 1960 तक 35 वर्ष, 1980 तक 20 वर्ष तथा 2000 तक सिर्फ 10 वर्ष रह गया - अधोलिखित तथ्यों से यह विषय और अधिक स्पष्ट होता है ।

पृथ्वी पर यदि उत्पादन तथा उपभोग में समानता

होती तो बिना किसी अभाव के जनसंख्या कई गुना बढ़ सकती थी, किन्तु आज विश्व में अनेक ऐसे राष्ट्र और प्रदेश हैं, जहाँ पर भोजन का अभाव है तथा उनमें तीव्र जनसंख्या वृद्धि आर्थिक स्थिति को सोचनीय बना देगी। अधिकांश विशेषज्ञों का अभिमत है कि विश्व में खाद्य उत्पादन, विशेषकर, जनसंकुल विकासशील राष्ट्रों में बहुत ही कम थी । इस भयाक्रान्तक विचारधारा का अनुमानित प्रतिफल निकट भविष्य में वृहद स्तर पर प्रादेशिक दुर्भिक्ष की सम्भवना ही थी, किन्तु वर्तमान में कृषि वैज्ञानिकों ने खाद्य वैज्ञानिकों ने भावी खाद्य पूर्ति के सम्बन्ध में आशावादी विचार प्रस्तुत किये जिसके पीछे नवीन अत्यधिक उत्पादन देने वाली फसलों की किस्मों के विकास में सफलता तथा भारत, पाकिस्तान, फिलीफाइन्स आदि देशों में गेहूँ, चाँवल की वृद्धिमान उत्पादन का अधिक योगदान प्रतीत होता है। यदि विकासशील राष्ट्रों में नवीन उच्च आशाजनक कृषि परिवर्तन से उत्तम परिणाम प्राप्त करना है तो वहाँ साथ-साथ विस्तृत तकनीकी, आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन भी होना चाहिए । जहाँ ऐसे परिवर्तनों की गति मंद है । विश्व के परम्परागत समाजों में विद्यमान भूख तथा दुर्भिक्ष के भावी खतरे से तुरन्त छुटकारा प्राप्त करने की आशा करना बुद्धिमतापूर्ण नहीं होगा । निःसंदेह आगामी वर्षों में सम्पन्न एवं अधिक विकसित राष्ट्रों में खाद्यान्न पदार्थों के उत्पादन, जनसंख्या विकास से अधिक बना रह सकता है ।

वैज्ञानिक औद्योगिक विकास -

वैज्ञानिक-औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण जनाकिकी परिवर्तन हुए, यह परिवर्तन सर्वप्रथम पश्चिमी यूरोप में हुआ। तत्पश्चात् यूरोपीय अधिवासों में तीव्रता से प्रवेश किया। विकासमान राष्ट्रों में इसका विसरण मन्द गति से हो सका ।

औद्यगिक क्रान्ति एक ही साथ सभी राष्ट्रों में घटित नहीं हुई और न ही अन्तः सम्बन्धित तत्व प्रभावित क्षेत्रों में समान थे, निश्चित ही, इसमें अन्य आर्थिक क्रियाओं की तुलना में विनिर्माण में सुधार अधिक हुआ, परन्तु कृषि, खनन, परिवहन एवं निर्माण सभी पुनः यांत्रित हुए। अपने अगले चरण में एक औद्योगिक क्रान्ति से अधिक यह एक वैज्ञानिक क्रान्ति हुआ, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त - जनस्वास्थ्य, वैज्ञानिक औषधि, इलेक्ट्रानिक, स्व-चालिततता तथा अत्यन्त अभिनव संगणक प्रणाली का विकास एवं प्रयोग सम्मिलित है । यह वैज्ञानिक क्रान्ति का प्रतिफल है कि लगभग 19वीं सदी के बाद जनसंख्या वृद्धि-चक्र में अत्यधिक चढ़ाव आया । सम्पूर्ण प्राविधिक प्रक्रियाओं एवं नई मशीनों का प्रत्यक्ष प्रभाव आश्चर्यजनक था । सामाजिक संरचनागत परिवर्तन भी कम आश्चर्यकारी नहीं थे, इस प्रवाह ने न सिर्फ खेतिहरों अपितु बढ़ते नगरों में एकत्र हुए कारखानों के श्रमिकों एवं साहसियों को आत्मसात किया ।

परिवर्तन के सम्पूर्ण पक्ष साथ-साथ और सर्वत्र समान रूप से घटित नहीं हुए - इंग्लैण्ड में जहाँ औद्योगिक क्रान्ति का शुभारम्भ 1750 ई. में हुआ, लगभग 80 से 100 वर्षों में ही राष्ट्रीय -सामाजिक संरचना परिवर्तित हो गयी। प्रारम्भिक कृषि में सुधार हुआ और घरेलू और बिखरे उद्योगों का नये नगरीय केन्द्रों में वृहत कारखानों के रूप में अधिकाधिक केन्द्रित होने लगा, अधिक सड़कों एवं नहरों के निर्माण से ग्रामीण क्षेत्रों के एकाकी जीवन में कमी आई और मनुष्यों और वस्तुओं की गतिशीलता सरल हुई, तत्पश्चात परिवहन विकास-वाष्पयानों एवं वाष्प रेल इंजनों ने वाणिज्य तथा उद्योगों को पुनः उत्साहित किया । इसी प्रकार व्यापारिक कृषि का भी शुभारम्भ हुआ। विकसित सामुदायिक परिवहन के सहारे यूरोपीय उन्नत कृषि तकनीक विदेशों के नये व उपजाऊ भूमि तक पहुँची , जिससे अतिरिक्त उत्पादन तुरन्त ही यूरोप लौटने लगे, इस प्रकार एक क्षेत्र के विकास से अन्य सभी क्षेत्रों में उन्नति हुई, जो अपनी तीव्रता एवं क्षेत्र की दृष्टि से क्रान्तिकारी थी।

सम्पूर्ण विश्व के सन्दर्भ में जन्म और मृत्यु यही दोनों कारक मनुष्य की संख्या को निर्धारित करते हैं, परन्तु आधुनिक युग के शुभारम्भ से साक्ष्यों की कमी व बिखराव के परिणामस्वरूप यह सुनिश्चित कर पाना सरल नहीं कि विश्व जनसंख्या में वृद्धि के लिए जन्म दर ह्रास या मृत्यु दर वृद्धि अथवा ये दोनों कारक ही उत्तरदायी थे। जनांकिकी

संक्रमण के मानक प्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि एक ह्रासमान मृत्युदर, साधारणतया आधुनिक समाज में वृद्धिदर में उर्ध्व प्रवृत्ति को जन्म देती है, परन्तु मृत्यु दर में कमी स्वमेव एक पहेली है तथा उपलब्ध सांख्यिकी के आधार पर माप करना कठिन है। इसकी अधिक सम्भावना यह है कि 19वीं सदी की पूर्वाद्ध की उल्लेखनीय तीव्र वृद्धि दर, मृत्यु दर में कमी तथा जन्मदर में अधिकता दोनों ही का प्रतिफल थी, क्योंकि अधिकांश आधुनिक पाश्चात्य सभ्यतायें सामान्तयतः दीर्घह्रास की अवसर प्राप्त करने के पूर्व जन्मदर में वृद्धि को प्रदर्शित करती है । निश्चित ही यह विचार जनांकिकी संक्रमण सिद्धान्त के इस निष्कर्ष से मेल खाता है कि पश्चिमी समाजों के आधुनिकीकरण की प्रांरम्भिक अवस्थाओं में जनवृद्धि प्रवृत्ति के लिये ह्रासमान मृत्यु दर अकेला कारक होता है ।

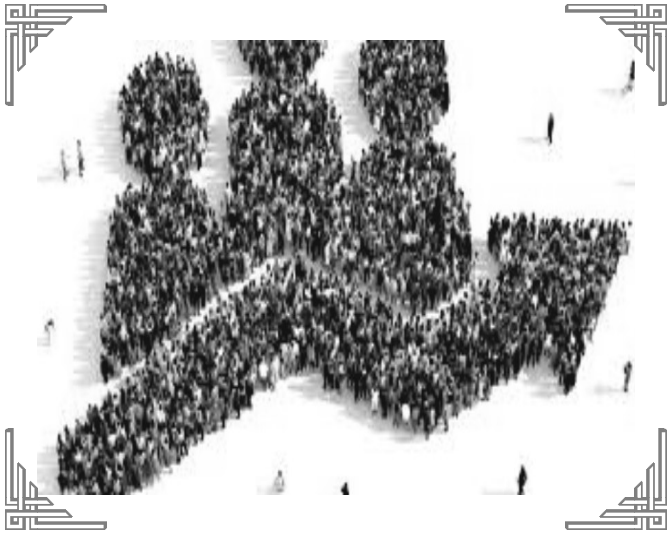

19वीं सदी के मध्य में यूरोपीय समाज में तीव्र वृद्धि के लिये मृत्यु दर में स्थायित्व तथा तीव्र ह्रास वास्तव में एक महत्वपूर्ण कारक है ।

पूर्व कालीन उच्च जननता अब समाप्त हो चुकी है, उत्तम स्वास्थ्य तथा निम्न मृत्यु के लिये अधोलिखित कारकों का अधिक योगदान समझा जा सकता है :- नगर जलापूर्ति की शुद्धता पर अधिक ध्यान देना, नगरीय क्षेत्रों में समुचित मलजल तथा मलमूत्र विसर्जन की समुचित व्यवस्था व्यवस्था, व्यक्तिगत स्वास्थ्य की आदतों में सुधार, अधिक स्नान तथा साबुन की उपलब्धता एवं उपयोग में वृद्धि से वृद्धिमान स्वच्छता, रोगजनक कीटाणुओं को अप्रविदूषित एवं कीटाणुनाशकों के द्वारा पृथक या नष्ट करने की प्रणाली तथा टीकों का सदी के उत्तरकाल में विकास कर रोगों से कृत्रिम प्रतिरक्षा की गई ।उल्लेखनीय है कि आधुनिक पश्चिमी कुछ राष्ट्रों में जन्मदर की सम्भावित वृद्धि आरम्भिक अवधि के पश्चात् सामान्य जनह्रास की लम्बी अवधि आई, क्योंकि इस समय तक समाज अधिक औद्योगिक और नगरीकृत हो चुका था । नवीन नगरीय पर्यावरण में जन्म दर में क्यों कमी आई इसका स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह भौतिक से अधिक एवं सांस्कृतिक कारक था । नगरीय महिलाओं में सन्तान वहन की भौतिक क्षमता में क्षीणता नहीं आई थी अपितु नये सांस्कृतिक विन्यास ने छोटे परिवार की इच्छा के साथ ही बच्चों के समुचित पालन पोषण, जन्य साधनों में वृद्धि की कामना को प्रोत्साहित किया। कृषि भूमि पर अधिक बच्चे उपयोगी होते हैं, परन्तु नगरों में ऐसा नहीं है।

वृद्धि दर में प्रादेशिक विभिन्नता -

आधुनिक युग की द्वितीय जनसंख्या विशेषता मानव समूहों और प्रदेशों में जनसंख्या का महत्वपूर्ण अन्तर पाया जाना है । ऐसे क्षेत्रीय अन्तरों के महत्वपूर्ण आर्थिक एवं राजनैतिक परिणाम थे, जिसके कारण वृहद स्तर पर जनसंख्या का पुनः वितरण सम्भव हुआ । क्षेत्रीय वृद्धि का सबसे बड़ा अन्तर यूरोपीय मूल की जनसंख्या और यूरोपीय लोगों के मध्य दिखाई देता है, इसे विकसित और विकासशील देशों के मध्य अन्तर भी कह सकते हैं । 1850 ई. से भी पहले यूरोपीय जनसंख्या की वृद्धिदर अन्य

देशों की तुलना में कुछ अधिक ही थी । यह तथ्य यूरोप के लिए उतनी सत्य नहीं जितनी विदेशी यूरोपीय समुदाय के लिये थी किन्तु 1850 के पश्चात् जब औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार यूरोपीय समूह में हुआ, अधिक विकसित और अल्पविकसित क्षेत्रों के मध्य जनवृद्धि दर सम्बन्धी विभिन्नता अधिक हो गई । सम्प्रति विकसित समाज की वृद्धि दर तीव्रतर थी । यूरोपीय जनसंख्या में उत्तरोत्तर विकास का मूल कारण मृत्युदर में कमी थी । एशिया का मुख्य भाग चीन तथा भारत ह्रासमान जनसंख्या प्रदेशों में यूरोप के बराबर था । 1750 ई. में अधिक विकसित देशों में विश्व की 21.6 प्रतिशत जनसंख्या थी, परन्तु 1800 में बढ़कर 22.2. प्रतिशत, 1850 में 24.7 प्रतिशत और 1900 में 31.4 प्रतिशत हो गई। इस अनुपात में 1950 के पश्चात् ह्रास प्रारम्भ होता है ।

अल्प संख्यक यूरोपीय लोगों का धरातल पर शासन

यूरोपीय सांस्कृतिक क्षेत्र के अन्दर उल्लेखनीय जनसंख्या वृद्धि के साथ ही तकनीकी कुशलता में वृद्धि के फलस्वरूप इनकी प्राकृतिक संसाधनों की दोहन क्षमता में वृद्धि से अल्पसंख्यक यूरोपीय लोगों का धरातल पर शासन संभव हुआ । इसी आन्तिरिक वृद्धि एवं प्राकृतिक संसाधनों पर आधिपत्य ने यूरोपवासियों को पृथ्वी के दूरवर्ती भागों पर प्रवासित होने के लिये प्रोत्साहित किया । यह प्रवास विरल जनबसाव के क्षेत्रों जैसे - उत्तरी और पश्चिमी अमेरिका, न्यूजीलैण्ड एशियाई रूस तथा अफ्रीका के उत्तरी तथा दक्षिणी प्रदेशों में, यूरोपीय उपनिवेश के रूप में प्रदर्शित होता है। अनुमानतः विदेश-प्रवजक यूरोपियों की कुल संख्या 1 अरब से ऊपर थी, जिसका 60 प्रतिशत अमेरिका द्वारा ग्रहण किया गया । इस वृहत स्तर के स्थानान्तरण से पृथ्वी की जनसंख्या का महत्वपूर्ण पुर्नवितरण ही नहीं हुआ, अपितु जनसंख्या संकेन्द्रण का एक चतुर्थ विश्व केन्द्र तथा श्वेतों का द्वितीय केन्द्र पूर्वी एवं मध्य ऑग्ल अमेरिका भी स्थापित हुआ ।

विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि -

आज अनेक विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि दर सम्पूर्ण इतिहास में सर्वाधिक है । अपने सर्वोच्च विकास अवस्था में इंग्लैंड तथा वेल्स में प्राकृतिक वृद्धि मात्र 14 और स्कैझिडेनविया में 13 व्यक्ति प्रति हजार थी। अधिकांश विकासशील राष्ट्रों में यह वृद्धि दर आज दो गुना हो गई है, जबकि ये देश आर्थिक विकास की अवस्था में ब्रिटेन की उसी अवस्था से निम्न स्तर पर है । इसका मुख्य कारण मृत्यु दर में अत्यधिक कमी है ।

जनांकिकी संक्रमण के द्वितीय अवस्था में जन्मदर ऊँची, परन्तु विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, परिवहन आदि के विकास तथा खाद्यान्न स्थिति सन्तोषजनक हो जाने के कारण मृत्यु दर में कमी हो जाती है, परिणामस्वरूप जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। इसी कारण इस अवस्था को जनसंख्या विस्फोट की अवस्था कहते हैं । जनसंख्या संक्रमण मॉडल की इस द्वितीय अवस्था के अन्तर्गत लगभग सम्पूर्ण तृतीय विश्व आ जाता है, भारत, पाकिस्तान सम्भवतः इस उप-अवस्था के उदाहरण है ।

जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव -

जनसंख्या वृद्धि से न केवल सामाजिक समस्यायें पैदा हो रही है, बल्कि अनेक पर्यावरणीय समस्यायें जन्म ले रही है? जनसंख्या वृद्धि से अनेक मानवीय आवश्यकताओं में असीमित वृद्धि हो रही है, जिससे पृत्वी के सीमित साधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है।

तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण के विभिन्न घटकों पर यथा-जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में असन्तुलन, प्राकृतिक संसाधनों तथा जनसंख्या में असन्तुलन, नगरीय समस्यायें तथा जनसंख्या वृद्धि गरीबी एवं बेरोजगारी की समस्या तथा जनसंख्या वृद्धि तथा ऊर्जा संकट उल्लेखनीय है ।

000

Positive thinking Bears Positive Results

By. Dr. Abhishek Kumar Misra
Assistant Professor (Physics)

In the real sense, our life is the result of our thinking. We become what we sometimes think. It is not untrue to say that man's behavior itself reflects his personality. In snaping behavior his own thinking plays very important role. Once a person becomes the victim of negative mentality he cannot do anything. Some people are found full dependent on their luck/God, then they forget that God also helps them who helps themselves.

In my opinion self-help is the best help, only fools wait for the postman to bring them some good news. I do agree that in long run of life there may be failures and defeats but instead of getting disappointed they could take lessons from failures and march forward, they surely will attain success. Great scientists did several experiments to develop theories, but they did not get success in their first attempt. Life is full of ambitions; it is that playground on which the winners are those who plan toward a target and chase it with full preparation and hope. The ambition and achievement should go hand in hand in nutshell. In the game of life, the victor is all about a positive state of mind. In this connection the following quotes of Walter D. Wintle is most remarkable:

"Life's battles do not always go
To the stronger or faster man,
But soon or late the man who wins is the man who thinks he can."

In the way of success there may be the problems, but no problem exists without solution. There is nothing impossible, impossible itself spells I'm possible.

A man's own faith and belief is surest way to success. A man should start his work with hope and should continue his efforts. The ideal attitude in life is to follow the words with action and put good ideas in practice.

A person's biggest asset is his positive thinking, his sense of fair play and peace of mind. We should make efforts continue and success is sure to be achieved. It is truly said-

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः
न हि सुपतस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

The most important thing in our lives is that we should always be loyal in our duties. There is nothing parallel to our sincerity and honesty. The best pillow to sleep on at night is our clear conscience. You are your best friend, your first guide; the thing we must do is to explore all the boundaries of possibilities.

History is full of examples, how great men achieved success and become great. The holy Bhagavad Gita also gives the message that action is our duty. The Newton's third law of motion also expresses to the same that "For every action there is equal and opposite reaction" so we should always try to do the better actions. It is quite true:
"Give the world best you have, the best will come back to you."

Excellence is an ever-moving target, spend your life in the pursuit of excellence. The following lines are most encouraging in this respect-

जीवन का उद्देश्य नहीं है, शांत भवन में टिक जाना
अन्तिम लक्ष्य वही है, जिसके आगे राह न होगा ।।

A person should always keep analyzing himself and try to move forward by learning his mistakes. One of the most important and considered thing in a person's life is his conduct and behavior. In society it does not matter what you say, but it matters how you say it. One should always remember that the constructive thoughts which lead to the betterment of mankind are met with success and evil thoughts never bear good result so always think positive and do positive. In last according to Albert Einstein-

"If you want to live a happy life, tie it to a goal, not to people or things."

प्रकृति से समृद्धि

वैष्णवी याग्निक, एम.ए. (इतिहास) चतुर्थ सेमे.

पर्यावरण के क्षेत्र में सबसे बड़ा 'टायलर' पुरस्कार जीतने वाले पवन सुखदेव जो वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड के प्रेसीडेंट हैं, उन्होंने अपने एक साक्षात्कार में पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार साक्षा किए।

उनका मानना है, बुनियादी समस्या 'जलवायु परिवर्तन' नाम में है । जिस प्रकार मनुष्य मनुष्य को दिल का दौरा पड़ने पर यह नहीं कहते कि दिल में परिवर्तन हो रहा है, वैसे ही जब जलवायु खराब हुई तो यह क्यों कहना कि जलवायु परिवर्तन है ?

वास्तव में पूरी दुनिया इसको कम आंक रही है, यह केवल 'क्लाईमेट चेंज' नहीं 'क्लाइमेट ब्रेकडाउन' है। वातावरण में हानिकारक ग्रीन हाऊस गैसें बढ़ रही है, उससे धरती का तापमान बढ़ रहा है । सूखा, बाढ़, व तूफान की बढ़ती घटनाएं इसी का नतीजा है । उनका यह भी कहना है कि जहरीले रसायनों व कीटनाशकों से हरियाली को हरितक्रान्ति कहना गलत होगा। इससे भूमि बंजर हो रही है फसलें दूषित हो रही है व लोग इन्हें खाकर बीमार हो रहें हैं ।

इन सबसे बचने के लिये वे ये सुझाव देते हैं कि - किसानों की अपनी जमीनों से प्यार करना होगा व रसायन वाली खेती छोड़नी होगी। हमें अपने आस-पास होने वाले मौसमी फल-सब्जियों व अनाज का इस्तेमाल करना होगा ।

पेड़ जमीन के कपड़े व इंसान के लिए स्वस्थ रहने की ढाल है। यह पर्यावरण को एवं मौसम का हमारे रहने लायक बनाते हैं, अतः खाली जमीन पर पेड़ लगाएं ।

विकास की राह में आगे बढ़ते हुए, हमें प्रकृति को नहीं भूलना है। हमें उसे नहीं भूलना है जो हमसे बिना कुछ माँगे हमारी सारी माँगों की पूर्ति करती है ।

प्रसिद्ध

आध्यात्मिक गुरु- सद्गुरु का कहना है -

''इकोनॉमी एण्ड इकोलॉजी शुड रन टुगेदर'' (Economy and Ecology should run together)

अर्थात् विकास व प्रकृति दोनों को साथ रखकर चलना होगा, ये दोनों एक ही गाड़ी के दो पहियों के समान हैं । इनमें से कोई एक पहिया भी यदि खराब होता है तो गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती । इन दोनों के साथ आने पर ही सतत् पोषणीय विकास संभव होगा व आगे आने वाली पीढ़ी के पास भी उपयोग के लिए पर्याप्त संसाधन होंगे ।

इस 'इकोनॉमी' व 'इकोलॉजी' के संतुलन का अनुपम उदाहरण है, बिहार के भागलपुर जिले का धरहरा गाँव, जिसने राज्यों के समक्ष एक अनूठी मिसाल पेश की है । 'लोक सभा टीवी' की 2017 व ''India.com'' की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार यहाँ पर जब भी किसी लड़की का जन्म होता है तो परिवार में उत्सव मनाया जाता है व परिवार के सदस्य मिलकर इस अवसर पर 10-12 पेड़ लगाते हैं । ये वृक्ष मुख्यतः फलदार, औषधिय गुण वाले व अच्छी किस्म की लकड़ी देने वाले होते हैं ।

इस अनूठी परम्परा का दोहरा लाभ हुआ है, पहला इससे उस परिवार की आर्थिक सहायता होती है, यह

एक प्रकार से उनके लिए बीमा की तरह है। इस पेड़ के फल, औषधियाँ, व लकड़ी बेचकर वे अपनी बेटी की शादी, बच्चों की पढ़ाई का खर्च, चिकित्सा सुविधाएँ इत्यादि आसानी से वहन कर सकते हैं ।

दूसरा इससे पर्यावरणीय स्तर पर भी लाभ हुआ है व कन्या भ्रूण हत्या भी कम हुई है ।

परन्तु क्या प्रत्येक स्थान की सोच धरहरा जैसी है?

भूमि, हवा, पानी, अन्न, ये सभी ऐसे संसाधन हैं, जिनके बिना मनुष्य एक क्षण भी जीवत नहीं रह सकता। यह कल्पना करके ही कितना भयावह लगता है कि 130 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश में लोगों के लिये पीने लायक थोड़ा भी पानी न बचा हो तो ऐसे में एक बूँद पानी के लिए युद्ध छिड़ सकता है, लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो जायेंगे ।

प्रकृति हवा, पानी, जल जंगल जैसी बहुमूल्य सेवा के लिए हमें बिल नहीं भेजती है । इसलिए हम उसकी कद्र नहीं कर रहे हैं । हमें हर क्षण इन सेवाओं के लिए प्रकृति का आभार प्रकट करना चाहिए जिनके बल पर हम स्वच्छ वातावरण में श्वास ले पा रहे हैं, हमारे पास पीने लायक पर्याप्त जल है ।

ये धरती हमें उतना देती है, जिससे हमारी जरुरतें पूरी हों, परन्तु कुछ लालची लोगों के लालच का खामियाज़ा सम्पूर्ण मानव जाति, सम्पूर्ण सभ्यता, पूरी प्रकृति को भुगतना पड़ता है ।

फैसला हमारे हाथ में हैं, संसाधनों का संरक्षण, संवर्धन कर सतत् पोषणीय विकास करना है या आने वाली पीढ़ी को एक अंधेरे से भरा कल देना है ।

''धरती करे पुकार

बंद करो अत्याचार

हे मानव, तुम करो विचार

धरती का कुछ करो उद्धार''

लघु कथा -

किसान का गधा

दीक्षा साहू, बीएस.सी II

एक दिन किसान का गधा कुँआ में गिर गया । वह गधा घंटों जोर-जोर से चिल्ला रहा था किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं । अंततः उसने निर्णय लिया गधा बूढ़ा हो चुका है अतः इसे बचाने से कोई लाभ नहीं और इसलिए इसे कुएँ में ही दफना देना चाहिए।

किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया । सभी ने एक एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर दी । जैसे ही गधे को समझ में आया कि यह क्या हो रहा है वह जोर-जोर चीखा और रोने लगा फिर अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया । सब लोग चुप-चाप कुएं में मिट्टी डालते रहे । तभी किसान ने कुएँ में झाँका तो वह गधा आश्चर्य जनक हरकत कर रहा है । वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था । जैसे-जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी को गिराते गया और ऊपर चढ़ आता । जल्द ही सबको आश्चर्य चकित करते हुए वह गधा कुएँ के किनारे पर पहुँचा गया और फिर उछलकर बाहर आ गया ।

ध्यान रखो तुम्हारे जीवन में भी तुम पर बहुत तरह की मिट्टी फेंकी जाएगी । बहुत तरह की गंदगी तुम पर गिरेगी। जैसे - कोई तुम्हारी आलोचना करेगा, कोई तुम्हारी सफलता से ईर्ष्या के कारण तुम्हें भला बुरा कहेगा । कोई तुमसे आगे निकलने के लिये तुम्हारे आदर्शों के विरूद्ध होंगे ।

ऐसे में तुम्हें हतोत्साहित होकर कुएँ में नहीं पड़े रहना है बल्कि साहस के साथ हिल-हिल कर हर तरह की गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख लेकर उसे सीढ़ी बनाकर बिना अपने आदर्शों का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है ।

सोशल मीडिया और समाज

आशीष देवांगन, एम.एससी. IV सेमे. (रसायन शास्त्र)

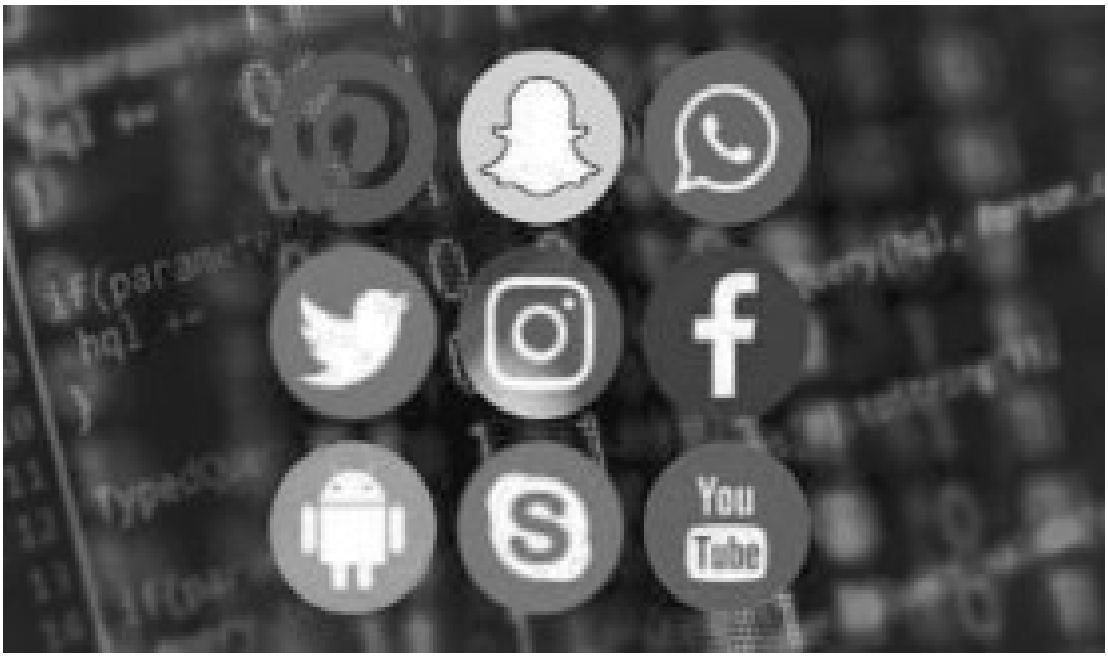

हर नया परिवर्तन अपनी परिधि में असीम संभावनाओं को समेटे होती है और साथ ही उसके अनिवार्य रूप से चिंताएं भी जुड़ी होती है । सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है । कुछ लोग सोशल मीडिया को वरदान की तरह देखते हैं तो वही कुछ अभिशाप की तरह।

सोशल मीडिया वह माध्यम है जो न सिर्फ समाज का होना दावा करता है अपितु प्रत्यक्षता हर व्यक्ति को अपने को सार्वजनिक करने का अवसर प्रदान करता है। सोशल मीडिया समाज के हर व्यक्ति को अपने मीडिया हाऊस का मालिक बना देता है जिससे वह अपनी अभिव्यक्ति, टेक्स्ट, फोटो, वीडियो इत्यादि के माध्मय को प्रस्तुत कर सकता है ।

पहली बात यह कि सोशल का सही अर्थ क्या है। जिसके आधार पर हम यह कहें कि फेस बुक, ट्विटर, यू-ट्यूब, इत्यादि प्लेटफार्म सोशल है । यदि हम परस्पर संवाद को सोशल होने का अर्थ मानें तो यह प्लेटफॉर्म सच में सोशल है । लेकिन अगर सोशल होने का अर्थ समाज की बेहतरी और समाज के विकास से है तो इन प्लेटफॉम को अभी वहाँ तक पहुँचना बाकी है ।

सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ता है। यह आप पर निर्भर करता है कि उसे कैसे देखते हैं या कैसे ग्रहण करते हैं ।

सोशल मीडिया को संचालित करने वाली संस्थाओं के पास अपने यूजर्स के पसन्द-नापसंद, विचार इत्यादि के संबंध में अपार सूचानाएं है, जिनका उपयोग वो विज्ञापनदाता को निर्देशित करने में करती है । यह दो वजहों से खतरनाक है । एक तो हम जो भी अभिव्यक्त कर रहे हैं वह निजी कंपनियों द्वारा अपने उत्पाद निर्धारण में उपयोग

किया जा रहा है, यानी यह ''सोशल'' दरअसल कुछ कंपनियों के स्वार्थ का जरिया मात्र बनकर रह गया है । दूसरी इन साइट्स को संचालित करने वाली संस्था किसी भी विषय को केन्द्र बिन्दु में रख कर हमारे विचारों को प्रभावित करता है ।

इसके अलावा राजनीतिक दल भी सोशल मीडिया के द्वारा समाज को गुमराह कर रहे हैं । कुछ राजनीति दल सोशल मीडिया पर गलत पोस्ट डालकर समाज को गुमराह कर रहे और उन्हें गलत दिशा की ओर ले जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर जो भी चीज 'पापुलर' है उसकी प्रमाणनिकता जाँचे बिना उसे स्वीकार कर लिया जाता है जो बहुत ही आत्मघाती साबित हो सकता है ?

सोशल मीडिया के माध्यम से ही आंतकी संगठन ऐसे युवाओं पर नजर रखते हैं जो आगे चलकर उनके काम आ सकें और उन्हें गुमराह करके आंतक के रास्ते पर चलने पर मजबूर कर देते हैं । यह वही सोशल मीडिया है जिसके माध्यम से आतंकी संगठन आंतकियों को प्रशिक्षण भी प्रदान करते हैं । आज सोशल मीडिया पर अफवाहों का बाजार इतना गर्म है कि कोई भी गलत खबर मिनटों में आग की तरह फैल जाती है जिससे कई बार देश में अराजकता की स्थिति भी उत्पन्न हुई है ।

सोशल मीडिया के कुछ दुष्प्रभाव तथ्यों के द्वारा स्पष्ट किया गया है जो निम्नलिखित है :-

1. आज विश्वभर में हर सेकंड 30,000 युवा अश्लील फिल्में देखते हैं और भारत में 60 प्रतिशत युवा 18 वर्ष से कम आयु में अश्लील फिल्म देखकर बालिग होने का प्रयास करता है जो समाज के लिये हानिकारक है।

2. न्यूर्याक टाइम जरनल के एक रिर्पोट के अनुसार 40 प्रतिशत युवा सिगरेट, शराब और गांजे के लिये सोशल मीडिया से ही प्रेरित होते हैं ।

3. जर्मन विश्वविद्यालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाला हर तीसरा युवा कुण्ठा, अकेलापन और तनाव महसूस करता है ।

4. ट्रेमर रोग जिसमें 24 घण्टे उंगलियाँ काँपती है उसके 55 प्रतिशत मरीज इसी सोशल मीडिया से है ।

5. एक विकार जिसमें यह महसूस होता है कि विश्व में हमारे अलावा हर कोई खुश है उसके 99 प्रतिशत मरीज सोशल मीडिया के आदी हैं ।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की मनोवैज्ञानिक डॉ. सूजैन के अध्ययन के अनुसार आने वाली युवा पीढ़ी जो फेसबुक, यू-ट्यूब, ट्विटर की आदी है वह परस्पर संवाद से भी डरेगी। यानी उन्हें एक तरह का फोबिया हो जाएगा। उपरोक्त बातों से यह लगता है कि सोशल मीडिया के सिर्फ दुष्प्रभाव ही है, किन्तु जब तक दूसरे पक्ष को दृष्टपात नहीं किया जाता निष्कर्ष पर पहुँचना जल्दबाजी ही होगी ।

सोशल मीडिया वह माध्यम है जो हमें जमीनी वास्तविकता से परिचित कराता है । सोशल मीडिया वह माध्यम है जो विविध स्वरों को बिना किसी भेदभाव के एक मंच प्रदान करता है ।

किसी भी युवक (समाज) के भविष्य निर्धारण के लिये दो चीजों की आवश्यकता है । पहला उसका व्यक्तित्व विकसित हो और दूसरा उसे उचित अवसर प्रदान किया जाए। सोशल मीडिया इन दोनों आयामों की पूर्ति करता है। पहले हम यह देखते हैं कि सोशल मीडिया कैसे

व्यक्तित्व विकास में योगदान करता है । भारतीय संस्कृति में किसी व्यक्ति के उज्जवल भविष्य की कामना के लिए स्वस्तिवाचन मंत्र का पाठ किया जाता है जिसमें कहा गया है कि विश्व की सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार हमारी ओर आए ।

सोशल मीडिया विश्व की सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार हमारी ओर लाता है । वह हमारा मन और मस्तिष्क खुला रखता है और जिस व्यक्ति का मन और मस्तिष्क खुला हो उसका भविष्य सकारात्मक दिशा में ही होगा ।

मनोविज्ञान में 'मैक' और 'डि-कोस्टा' के द विगफाइव थ्योरी (The Big 5 Theory) के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व 5 आयामों से मिलकर बना हुआ है 'OCEAN'

O - Openness यानी खुलापन

C - Conscientiousness यानी विवेक - शीलता

E - Exbaverdion यानी बर्हिमुखिता

A - Aggreableness यानी सहमतता

N - Neuroticism यानी मनोविक्षुब्धता

सोशल मीडिया इनमें से 4 आयामों में वृद्धि और मनोविक्षुब्धता में कमी करके व्यक्ति का विकास करता है।

किसी व्यक्ति के भविष्य को सकारात्मक दिशा मिल जाने का अर्थ है कि वो अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। अब्राहम मेस्लो के आवश्यकता के पिरामिड के अनुसार मनुष्य की 5 प्रकार की आवश्यताएं होती है। अगर प्राणीशास्त्री आवश्यकताओं को छोड़ दिया जाए तो सोशल मीडिया शेष चारों आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम है ।

अगर सोशल मीडिया न होता तो क्या स्त्रियाँ अपने खिलाफ हो रहे यौन शोषण के विरूद्ध अभियान चला पातीं? क्या कोई समलैगिंक अपनी पहचान सार्वजानिक कर पाता। क्या कोई समाज के अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति जिसे मुख्यधारा के तेजप्रवाह ने किनारे कर दिया है वह अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर पाता? इन सब का जवाब है नहीं । सोशल मीडिया ने हाशिये पर खड़े व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने का अवसर दिया । भले ही इसे अभिव्यक्ति की अराजकता कह दिया जाए लेकिन वास्तविकता यह है कि यह समाज में अधिक समावेशी हो रहा है ।

सोशल मीडिया ही वह माध्यम है जिसने एक कवि को कविता, एक एक्टर को अपनी एक्टिंग, एक नर्तक को नृत्यु प्रस्तुत करने का पहला और सबसे अच्छा अवसर प्रदान किया । यह सोशल मीडिया ही है जिसने व्यापारी को उसके व्यापारिक विस्तार में मदद की । यह सोशल मीडिया ही है जिसने आज न जाने कितने जुल्मों को बेनकाब कर दिया । मीडिया आज पढ़ाई का सबसे, बड़ा साधन बन चुका है आपको कोई प्रश्न का उत्तर नहीं आता तो आप सोशल मीडिया से पूछिए जवाब तुरन्त मिल जाएगा । सरकार की हर योजना को घर घर तक पहुँचाने का काम भी इसी सोशल मीडिया ने किया है ।

सोशल मीडिया कोई टीवी नहीं है यह टेलीफोन है आप क्या पढ़ना चाहते हैं, आप क्या सुनना चाहते हैं, आप देखना चाहते हैं यह आप पर निर्भर करता है । 'यथा दृष्टि तथा सृष्टि' सोशल मीडिया महज एक माध्यम है । सोशल मीडिया के प्रभाव दुष्प्रभाव दोनों ही हैं लेकिन अगर आप सेब काटने वाले चाकू से अपना नाक काट लें तो दोष चाकू का नहीं, आपकी विकृत मानसिकता का है ।

अगर आप सोशल मीडिया का प्रयोग .... दिल टूटा हुआ .... फलाना सिंह एण्ड 49 अदर्स के लिये करेंगे तो सोशल मीडिया आपके भविष्य को कोई दिशा प्रदान नहीं करेगा । लेकिन अगर आप सोशल मीडिया का प्रयोग अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये अपने व्यापार में विस्तार के लिए और अपने कला के प्रदर्शन के लिए करेंगे तो यह निश्चित ही आपके भविष्य को सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा ।

(महाविद्यालय के वार्षिक स्नेह सम्मेलन के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत निबंध ।)

अपने अतीत को भूलिए नहीं

प्रिंस कुमार कुशावाहा, बी.एस.सी. - II (पी.सी.एम.)

भारतीय धर्म, संस्कृति और सभ्यता का जिन्होंने अध्ययन, अनुभव एवं अवगाहन किया है, उसके मूल तक पहुँचे हैं, उन्होंने इसकी सार्वभौमिकता, विशालता तथा पवित्रता से, इंकार नहीं किया। हमारा दर्शन सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रकाश है, उस प्रकाश का लाभ सभी जातियों ने पाया है । अपना ज्ञान, अपनी साधना और अपनी तपश्चर्या के लाभ हमने संसार को बाँटें हैं उसका लाभ सारा विश्व उठा रहा है । किन्तु हमने अपने प्राचीन गौरव को ही भुला दिया है, अपने आदर्शों से च्युत होकर अपनी सारी भौतिक विभूतियाँ एवं आध्यात्मिक संपदायें खो दीं । समय इन्हें फिर से जाग्रत करने का संदेश दे रहा है, वह युग आ गया हम इस आह्वान को अनसुना कर टाल नहीं सकते ।

हीरे की परख जौहरी को होती है । हम आज जिस अतीत को भूलकर बैठे हैं उसके महत्व को पाश्चात्य मनीषियों ने, कला पारखियों ने समझा और उसकी प्रशंसा की है । इतिहास के अनेक वर्णन, विश्लेषण एवं विज्ञप्तियाँ भरी पड़ी है । उनका अध्ययन करने से आँखे खुल जाती है और अपने सही रूप का पता चल जाता है ।

यदि कोई मुझसे पूछे कि वह कौन-सा देश है, जिसे प्रकृति ने सर्वसम्पन्न, शक्तिशाली एवं सुन्दर बनाया है तो मेरा संकेत भारतवर्ष की ओर होगा । जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं पर गहराई से सोच विचार करने वाली भारतीय संस्कृति के अध्ययन की जरूरत है । अपने जीवन को अधिक पूर्ण, अधिक विस्तृत और अधिक व्यापक बनाने के लिये भारतीय विचार पर्याप्त है । न केवल इस जीवन के वरन् मनुष्य के अनन्त जीवन के पूर्ण वैज्ञानिक विश्लेषण की क्षमता भारतवर्ष में है ।

आध्यात्मिक शोधों और इन तथ्यों का विस्तृत विश्लेषण, जिसकी अभी तक कोई थाह नहीं पा सका, वह सब हमारे वेदों में समाहित है । वेद धर्म के मूल आधार हैं। इसमें मनुष्य की आध्यात्मिकता तथा भौतिक आवश्यकताओं के सभी विषयों का समावेश है । यह ज्ञान अंत में अनेक धाराओं से प्रवाहित होकर बहा, जिससे न केवल यहाँ का आध्यात्मिक जीवन समृद्ध बना, अपतु भौतिक संपन्नता भी अपने ही अनुकूल विशेषण लेकर प्रस्तुत हुई ।

पश्चिमी चीजों को जिन बातों पर अभिमान है, वे सब भारत वर्ष से आयी है और फल-फूल पेड़ पौधे

तक जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, वे भारत वर्ष से ही लाकर यहाँ लगाये गये है । घोड़े, मलमल, रेशम, टीन, लोहा तथा सीसे का प्रचार भी यूरोप में भारतवर्ष से ही हुआ है। इतना ही नहीं ज्योतिष वैद्यक, अंकगणित, चित्रकारी तथा कानून भी भारतवासियों ने ही यूरोपियन को सिखलाया है।

भारतवर्ष केवल हिन्दू धर्म का ही घर नहीं है यह संसार की सभ्यता का आदि भंडार है । यहाँ का जीवन सरल, सहज तथा अति प्राचीन है । श्रद्धा, भक्ति और विश्वास, निश्चय से भरा हुआ यह अपना भारत वर्ष किसी समय ज्ञान-विज्ञान का सम्राट बना हुआ था, यहाँ मनुष्य की शाश्वत आशायें और सांत्वनाएं घनीभूत थी । ऋषियों की गंभीर चिन्तन को हृदयंगम कर पाना भी कठिन है, जिन्होंने इस संसार में विचार और विवेक को जन्म दिया था। वास्तविक जीवन के सिद्धान्तों का अनुसंधान इसी पवित्र भूमि में हुआ । इसलिए सारे संसार ने इसे शीश झुकाया, इसकी अभर्थ्यना की है ।

भारतवर्ष का सम्मान और प्रतिष्ठा का मूल कारण यहाँ का धर्म है । इसे औरों ने भले ही संप्रदाय के रूप में ही क्यों न देखा हो, किन्तु वस्तुतः हिन्दू धर्म का सिद्धान्त है - मानवीय आत्मा के गौरव को प्राप्त करना और फिर उसी के अनुसार आचरण करना रहा है। शास्त्रकार ने लिखा है :-

''श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चाऽवधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।''

अर्थात् सुनो, धर्म का सार यह है कि दूसरो के साथ वैसा व्यवहार मत करो, जैसा तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे प्रति किया जाए, इसको सुनो ही नहीं आचरण भी करो । धर्म का यही स्वरूप सुखद् और सर्वहित में है । इसमें प्राणिमात्र की जीवन रक्षा और सुखोपभोग की व्यवहारिक कल्पना है अपने इसी रूप में हमारा अतीत उज्ज्वल शाँतिमयी रहा है। आज भी सारे विश्व को इसकी आवश्यकता है ।

वे चरित्र और आदर्श जो यहाँ के मानस को संस्कार देते हैं भले ही प्रसुप्त हो, पर अभी भी जीवित है। यदि ऐसा न रहा होता तो हमारा धर्म, संस्कृति तथा सभ्यता कभी की टूटकर बिखर गई होती, जैसा कि और जातियों के साथ हुआ। अपने दृढ़ सिद्धान्तों और पुष्ट संस्कारों के कारण, वह आज भी अटूट और अडिग बनी हुई है ।

अब उन आदर्शों को पुनः जाग्रत् करना होगा । खोये हुए अतीत को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा । उसी से हमारा और समस्त संसार का कल्याण होगा ।

छत्तीसगढ़ का साहित्यिक परिवेश और भविष्य

लोमश जायसवाल, बी.एससी. III (बायो)

यदि हमें किसी समाज या जाति के उत्थान-पतन, आचार-व्यवहार, समभ्यता, संस्कृति आदि को जानना है तो हमें उस समाज से सम्बन्धित साहित्य को जानना होगा, क्योंकि साहित्य में जन-जीवन के विविध रूपों की सहज अनुगूँज जगह-जगह परिलक्षित होती है। संभवतः इसी कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है ।

साहित्य किसी भाषा के वाचिक और लिखित शास्त्र-समूह को कह सकते हैं, जिसमें हित की भावना हो। इसलिए कहा गया है -

''हितेन सह सहितम् तस्य भावः साहित्य ।''

ऋग्वेद संस्कृत में रचित सबसे प्राचीन भारतीय साहित्य है । इसी प्रकार व्यास, वाल्मीकि जैसे पौराणिक-ऋषियों ने महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना की । इसी संस्कृत से उपजी हिन्दी भाषा का साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध है, जिसे समृद्ध बनाने में छत्तीसगढ़ के अनेक साहित्यकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

छत्तीसगढ़ का हिन्दी साहित्यिक परिवेश व उसका विकास -

छत्तीसगढ़ में साहित्य रचना का प्रारम्भ मध्ययुग में गोपाल चन्द्र मिश्र ने किया । इनका जन्म संवत् 1690 के लगभग माना जाता है । इनके पुत्र माखनचन्द्र भी अच्छे कवि थे । 'रामप्रताप काव्य' का आधा भाग पिता ने लिखा था तो शेष भाग पुत्र ने लिखा, ऐसा माना जाता है । गोपाल मिश्र जी ने संवत 1746 में 'खूब तमाशा' की रचना की थी । 'गोपाल मिश्र' को छत्तीसगढ़ का वाल्मीकि कहा जाता है । इनकी प्रमुख रचनाएं - जैमिनी अश्वमेघ, सुदामा चरित, भक्ति चिंतामणि, छंद विलास आदि हैं ।

उत्तर रीतिकालीन काव्यधारा को छत्तीसगढ़ में प्रवाहित करने वाले संस्कृत के कवि 'बाबू रेवाराम' रतनपुरिहा 'गम्मत' व 'रहस' के प्रणेता माने जाते हैं । इनका जन्म सन् 1812 में रतनपुर में हुआ था । बाबू रेवाराम ने दो महाकव्यों सहित 13 ग्रन्थों की रचना की जो संस्कृत, हिन्दी, ब्रज भाषा, मराठी व उर्दू में है । इनकी प्रमुख रचनाएँ - रामायण दीपिका, रामाश्व मेघ, विक्रम विलास हैं । बाबू रेवाराम ने रतनपुर का इतिहास नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ भी लिखा है ।

भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 ई.)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के रचनाकारों में ठाकुर जगमोहन सिंह, जगन्नाथ प्रसाद भानु, मेदिनी प्रसाद पाण्डेय, भारतेन्दु युग के लेखक हैं । साहित्य के गद्य विधाओं का विकास इसी युग से हुआ ।

ठाकुर जगमोहन सिंह ने 'भारतेन्दु मंडल' के तर्ज पर छत्तीसगढ़ में 'जगमोहन मंडल' बनाकर यहाँ के साहित्यकारों को एक सूत्र में पिरोया तथा उन्हें लेखन की सही दिशा प्रदान की । उनका 'श्यामा-स्वप्न' उपन्यास प्रसिद्ध है । **जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'** कवि और अभियोजन के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान के रूप में पहचाना जाता है। अभियोग पर इनका काम 'चन्द्र प्रभाकर' के रूप में प्रसिद्ध है। जिसका उनके जीवन काल में नौ संस्करण देखे गये ।

मेदिनी प्रसाद पाण्डेय हिन्दी के प्रथम शोक गीत रचनाकार माने जाते हैं । उनका जन्म सक्ती रियासत के राजपुरोहित पं. सुखराम के घर 1869 ई. में परसकोल में हुआ था ।

स्व. पाण्डेय ने अनेक शोकगीतों की रचना की जिसके कारण उन्हें हिन्दी काव्य जगत में प्रथम शोकगीत लिखने वाले कवि होने किा गौरव प्राप्त है ।

द्विवेदी युग (सन् 1900-1920ई.) - छत्तीसगढ़ में 20 शताब्दी के आरम्भ में पत्रकारिता के उद्भव के साथ हिन्दी साहित्य ने स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि में

पदार्पण किया। इस युग का आरम्भिक साहित्य राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है । स्वतंत्रता आन्दोलन की राष्ट्रव्यापी धारा छत्तीसगढ़ में भी प्रवाहित हुई। छत्तीसगढ़ में भी आजादी की ज्वाला को धधकाने अनेक साहित्यकारों के कलम चल पड़े। छत्तीसगढ़ के द्विवेदी युगीन साहित्यारों में माधवराव सप्रे, लोचन प्रसाद पाण्डेय, मावली प्रसाद श्रीवास्तव, रामदयाल तिवारी, सुन्दरलाल त्रिपाठी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी प्रमुख हैं। छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के पितामह **'माधव राव सप्रे'** ने 1900 ई. में पेन्ड्रा रोड से 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इन्होंने मराठी के क्रांतिकारी लेखों का हिन्दी में अनुवाद कर अंग्रेजों की नींद हराम कर दी थी, जिसके कारण उन्होंने सलाखों के पीछे भी जाना पड़ा 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी आज हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी के रूप में पहचानी जा रही है ।

लोचन प्रसाद पाण्डेय (जन्म 1886) मुकुटधर पाण्डेय के अनुज थे । इन्होंने 1900 ई. में माधवराव सप्रे जी के साथ 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन किया । 'स्वदेशी और बायकाट' इनका महत्वपूर्ण लेख था । श्री देवी प्रसाद वर्मा 'बच्चू जाजगिरी' ने इनके 15 निबंधों का एक संग्रह संपादन किया है । 1920 में इन्होंने छत्तीसगढ़ के प्राचीन गौरव के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए 'छत्तीसगढ़ प्रचारक मंडली' की स्थापना की थी जो आज भी 'महाकौशल इतिहास' परिषद के नाम से अस्तित्व में है।

मुकुटधर पाण्डेय जी को छायावाद का प्रवर्तक माना जाता है ।इनका जन्म जांजगीर जले के बालपुत्र नामक ग्राम के 30 सितम्बर 1885 को हुआ था । पूजा के फूल, हृदयगान लक्षण, विश्वबोध, स्मृति पुंज प्रसिद्ध है। 'कुररी के प्रति' छायावाद की अमर कृति के रूप में याद की जाती है ।

पं. रामदयाल तिवारी एक समर्थ समालोचक के रूप में जाने जाते थे । इन्होंने हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी लेखन किया है। कलकत्ता, मद्रास, नागपूर के पत्र-पत्रिकाओं में आपके विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित होते थे। आपने राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा', एवं साकेत की समीक्षा की । गाँधी जी के द्वितीय रायपुर आगमन के पश्चात उनसे प्रभावित होकर 'गाँधी मीमांसा'' जैसे ग्रन्थ की रचना की । आपने हमारे नेता, स्वराज्य प्रश्नोत्री जैसी बालोपयोगी पुस्तकें लिखीं ।

पं. सुन्दरलाल त्रिपाठी का जन्म जगदलपुर में हुआ था । वे बंगला संस्कृत तथा अंग्रेजी के भी ज्ञाता थे । 'दैनंदिनी' उनकी चर्चित रचना है । साहित्य लेखन के साथ इतिहास-पुरात्व में भी आपकी रूचि थी । उन्होंने 'उत्थान' मासिक पत्रिका का संपादन किया । त्रिपाठी जी का द्विवेदी युगीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

स्व. पदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी जी तो 'कथा गुरु' के नाम से जाने जाते थे । इनका जन्म सन् 1894 में खैरागढ़ में हुआ था । बख्शी जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी

जी के बाद हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित पत्रिका 'सरस्वती' का कुशलता पूर्वक संपादन किया । मेरा देश, मेरी अपनी कथा, 'हिन्दी साहित्य की ऐतिहासिक समीक्षा', 'मकरंद बिन्दु' 'अन्तिम अध्याय' आपकी कालजयी रचनाएँ हैं । **वामनराव लाखे** छत्तीसगढ़ के प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में से एक थे । इन्होंने माधवराव सप्रे द्वारा संपादित समाचार पत्र के प्रकाशक के रूप में सहयोग किया ।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी **बैरिस्टर छेदीलाल** का जन्म 1886 में अकलतरा में हुआ था । छेदीलाल जी ने 'हालैण्ड के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास' नामक पुस्तक लिखकर खूब यश कमाया । आप गुरुकुल कांगड़ी में इतिहास के प्राध्यापक भी थे ।

मावली प्रसाद श्रीवास्तव की प्रसिद्ध रचनाकार थे । आपकी रचनाएं आपके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो सकी थी, आपके सुपुत्र शंकर प्रसाद श्रीवास्तव ने उसे प्रकाशित कराया । 'महादेव घाट का मेला' में छत्तीसगढ़ के ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती है । आप एक अच्छे निबंधकार रहे हैं ।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र का जन्म सितम्बर 1898 में हुआ था । इनकी लगभग 80 रचनाएँ प्रकाशित हैं । 'तुलसीदास दर्शन' पर इन्हें नागपूर वि.वि. द्वारा डी.लिट् की उपाधि प्रदान की गई । कौशल किशोर, साकेत संत और राम राज्य इनके तीन महाकाव्य हैं ।

गजानन माधव मुक्तिबोध - (14 नवम्बर 1917 - 11 सितम्बर 1964) छायावोदत्तर कविता में साम्यवादी विचारधारा को स्वीकार के चलने वाले मुक्तिबोध 'प्रगतिवाद' के अग्रिम पंक्ति के कवियों में गिने जाते हैं । जन्म श्योपुर कला गवालियर में हुआ किन्तु कर्मभूमि उन्होंने राजनांदगाँव को चुना । बख्शी जी और मुक्तिबोध जी दोनों दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव में प्राध्यापक रहे । ब्रह्मराक्षस का शिष्य, कलाड इथरली, काठ सपना जैसी 47 कहानियों की रचना की । विपात्र लघु उपन्यास तथा चाँद का मुंह टेढ़ा है, 'अंधेरे में' जैसी लम्बी कविता लिए आप जाने जाते हैं । मुक्तिबोध एक अच्छे आलोचक एवं पत्रकार थे । आधुनिक युग के क्रांतिकारी कवियों में निरालाजी के बाद इन्हीं का स्थान हैं।

स्वतंत्रता के बाद नये-भाव बोध तथा नवीन शिल्प के साथ समर्थ रचनाकारों की एक नई पीढ़ी आई, जिनमें श्रीकांत वर्मा, डॉ. प्रमोद वर्मा, विनोद कुमार शुक्ल, प्रभात त्रिपाठी जनकवि डॉ. नन्दूलाल चोटिया, राजेन्द्र मिश्र प्रमुख हैं।

श्रीकांत वर्मा बिलासपुर के रहने वाले थे । उन्होंने

साहित्य तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है । 'माया दर्पण' 'जलसाघर' और 'मगध' उनके प्रमुख काव्य संग्रह है । श्रीकांत वर्मा एक बड़े पत्रकार थे ।

विनोद कुमार शुक्ल जी कवि तथा कथाकार के रूप में जाने जाते थे । 'खिलेगा तो देखेंगे' में उन्होंने गद्य' में एक नया मुहावरा गढ़ने का प्रयास किया । *'वह आदमी या गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह'* उनका काव्य संग्रह है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

प्रमोद वर्मा एक कवि होने के साथ-साथ प्रसिद्ध आलोचक थे । बख्शी सृजन पीठ के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने छत्तीसगढ़ में रचनाकारों की एक समर्थ पीढ़ी तैयार की ।

डॉ. नन्दूलाल चोटिया मंच के कवि के रूप में देश भर में जाने जाते थे । 'वक्त की हवाए', फसल एवं अन्य कविताएँ तथा रोटी एवं अन्य कविताएँ प्रकाशित हैं। गद्य लेखकों में गुलशेर अहमद शानी, रमेश याज्ञिक, शरद कोठारी, लतीफ घोंघी, रामाकांत श्रीवास्तव, परदेशी राम वर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। शानी जी ने तत्कालीन बस्तर के उपेक्षित यथार्थ को 'काला जल' तथा 'शाल वनों के द्वीप' के रूप में चित्रित किया है । रमेश यज्ञिक के यात्री के पत्र, शरद कोठारी के रूस यात्रा के संस्मरण, स्मृतियों के रूप रंग प्रमुख हैं । व्यंग्यकारों में लतीफ घोंघी, प्रभाकर चौबे, विनोद शंकर शुक्ल, विनोद साव प्रमुख है । प्रभाकर चौबे के व्यंग्य 'हंसते है रोते है' व्यंग्य कॉलम प्रसिद्ध है । इसी पीढ़ी में डॉ. राजेश्वर सक्सेना, नारायण लाल परमार का नाम उल्लेखनीय है । इनके बाद की पीढ़ी में कवियों में त्रिभुवन पाण्डेय, ललित सुरजन, रवि श्रीवास्तव, अशोक सिंघई, जीवन यदु, एकान्त श्रीवास्तव, डॉ. आलोक वर्मा, रफीक खान, विजय गुप्त, वेद प्रकाश प्रमुख है । कथाकारों में रमाकांत श्रीवास्तव, लोक बाबू, मनोज रुपड़ा, आनन्द हर्षुल, जया जादवानी, कैलाश बानवासी का नाम आता है । आलोचना के क्षेत्र में डॉ. गोरे लाल चंदेल, जयप्रकाश, सियाराम शर्मा, उषा आठले तथा रामकुमार मिश्र सक्रिय हैं।

इस तरह हिन्दी साहित्य जगत में छत्तीसगढ़ की प्रतिभाओं ने अंचल का नाम स्थापित किया है ।

छत्तीसगढ़ी व लोक साहित्य का परिवेश – छत्तीसगढ़ी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में विपुल लेखन हुआ है। खासकर लोक साहित्य का समृद्ध भंडार छत्तीसगढ़ के बोलियों में भरा पड़ा है ।

छत्तीसगढ़ी पूर्वी हिन्दी की तीन विभाषाओं में से एक है। माना जाता है कि छत्तीसगढ़ी और अवधी का जन्म अर्धमागधी के गर्भ से लगभग 9-10 शताब्दी में हुआ। लेकिन इसका साहित्यक विकास अतीत में स्पष्ट रूप से नहीं हुआ था । छत्तीसगढ़ी का प्रारम्भिक लिखित रूप दंतेवाड़ा के दंतेश्वरी मंदिर 'मैथिल पंडित मिश्र' द्वारा लिखित शिलालेख में मिलता है। परन्तु साहित्यक लेखन की शुरूवात 20वीं शताब्दी में पं. सुन्दरलाल शर्मा ने किया।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक साहित्यकारों में हीरा लाल काव्योपाध्याय, पं. बंशीधर शर्मा, द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र, डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा, लाला जगदलपुरी, केयूर भूषण, हरिठाकुर, कोदूराम दलित, विनय पाठक, लक्ष्मण मस्तुरिया, पवन दीवान, जीवन यदु, दुर्गा प्रसाद पाटकर आदि प्रमुख हैं ।

हीरा लाल काव्योपाध्याय जी ने 1885 में 'छत्तीसगढ़' व्याकरण लिखा। इनकी प्रमुख रचनाएँ शाला गीत, चन्द्रिका, दुर्गायन है ।

पं. सुन्दर लाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। वे छत्तीसगढ़ के गाँधी के रूप में प्रसिद्ध हुए । उन्होंने 18 ग्रन्थों की रचना की । जिनमें छत्तीसगढ़ी दानलीला सर्वाधिक चर्चित रही है । इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं - सीता परिणय, राजीव, प्रेम पीयूष, ध्रुव आख्यान, करुणा पच्चीसी तथा कंस वध है ।

बंशीधर शर्मा का जन्म 1892 में हुआ । इनका उपन्यास है 'हीरू की हिन्दी' । इसे छत्तीसगढ़ी का पहला उपन्यास माना जाता है । इन्होंने नाटक भी लिखा जिसका शीर्षक 'विश्वास का फल' है ।

पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र की रूचि छत्तीसगढ़ के लोक परम्पराओं तथा लोक गीतों में थी । इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं - 'कुछु काहीं', कांग्रेस विजय, आल्हा, गाँधी गीत, सुराज गीत और गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी। **कोदूराम दलित** का जन्म 1910 में हुआ।

दुर्ग जिले के टिकरी गाँव के निवासी थे । इनकी लगभग 800 रचनाएँ हैं। कवि सम्मेलन में हास्य व्यंग्य की छटा बिखरते थे । सियानी गोठ, अलहन, कनवा समधी, हमर देस, कथा-कहानी के साथ छत्तीसगढ़ी शब्द भण्डार और लोकोक्तियाँ प्रमुख कृतियाँ है ।

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में प्राध्यापक थे । 'छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास' प्रमुख ग्रन्थ है। इनके छत्तीसगढ़ी गीतों का संग्रह है - 'अपूर्व' तथा उपन्यास - 'सुबह की तलाश' छत्तीसगढ़ी गीत 'अरपा-पैरी के धार' को राज्य गीत के रूप में मान्यता प्रदान की गई है ।

लाला जगदलपुरी - लाला जगदपुरी जगदलपुर बस्तर के निवासी थे । हिन्दी तथा हल्बी में आपकी रचनाएँ है । 'हल्बी लोक कथाएँ' आपकी महत्वपूर्ण कृति है । जिसके कई संस्करण निकल चुके हैं ।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 'केयूर भूषण' का जन्म 1928 में कवर्धा जिले में हुआ था । वे राजनेता, पत्रकार तथा साहित्यकार थे । लदर (कविता संग्रह), कुल के मारजाद (उपन्यास) कहाँ बिलागे मोर धान के कटोरा,

कालू भगत तथा छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता सेनानियाँ' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं ।

पं. श्याम लाल चतुर्वेदी जी पत्रकार थे । पर्राभर लाई, रामवनवास, भोलवा भोलाराम इनकी कृतियाँ हैं ।

डॉ. विनय पाठक और विमल कुमार पाठक का छत्तीसगढ़ी साहित्य के क्षेत्र में बड़ा योगदान रहा है ।

विनय पाठक जी ने छत्तीसगढ़ी भाषा विज्ञान में शोधकार्य किया । छत्तीसगढ़ी साहित्य और साहित्यकार, 'एकेच साखा एकेच रूख' 'एकादशी अऊ अनचिन्हार' इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं ।

नंद किशोर तिवारी - कवि, नाटककार एवं संपादक के रूप में चर्चित हुए । 'लोकाक्षर' पत्रिका का संपादन कर नये रचनाकारों को प्रोत्साहित किया ।

छत्तीसगढ़ के युवा पीढ़ी में **लक्ष्मण मस्तुरिया** तथा जीवन यदु सर्वाधिक चर्चित कवि हुए । 'मोर संग चलव गा' मैं छत्तीसगढ़या आंव रे, मोर गंवई गांव, इनके प्रमुख गीत हैं। जीवन यदु का 'धान का कटोरा' चर्चित है ।

छत्तीसगढ़ी पुराधाओं में प्यारे लाल गुप्त, लखन गुप्त, कपिल नाथ कश्यप, भगवती सेन, पालेश्वर शर्मा, तथा नारायण लाल परमार भी समादृत हैं । छत्तीसगढ़ी भाषा तथा हिन्दी भाषा के साहित्यकारों की आज एक समर्थ पीढ़ी छत्तीसगढ़ में अपनी रचनाशीलता के साथ सक्रिय है। उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ तथा राष्ट्रीयता चेतना की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है ।

(शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता 2019-20 में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबन्ध)

2019-20 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है । उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है । हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है । इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं ।

राम शरण शर्मा

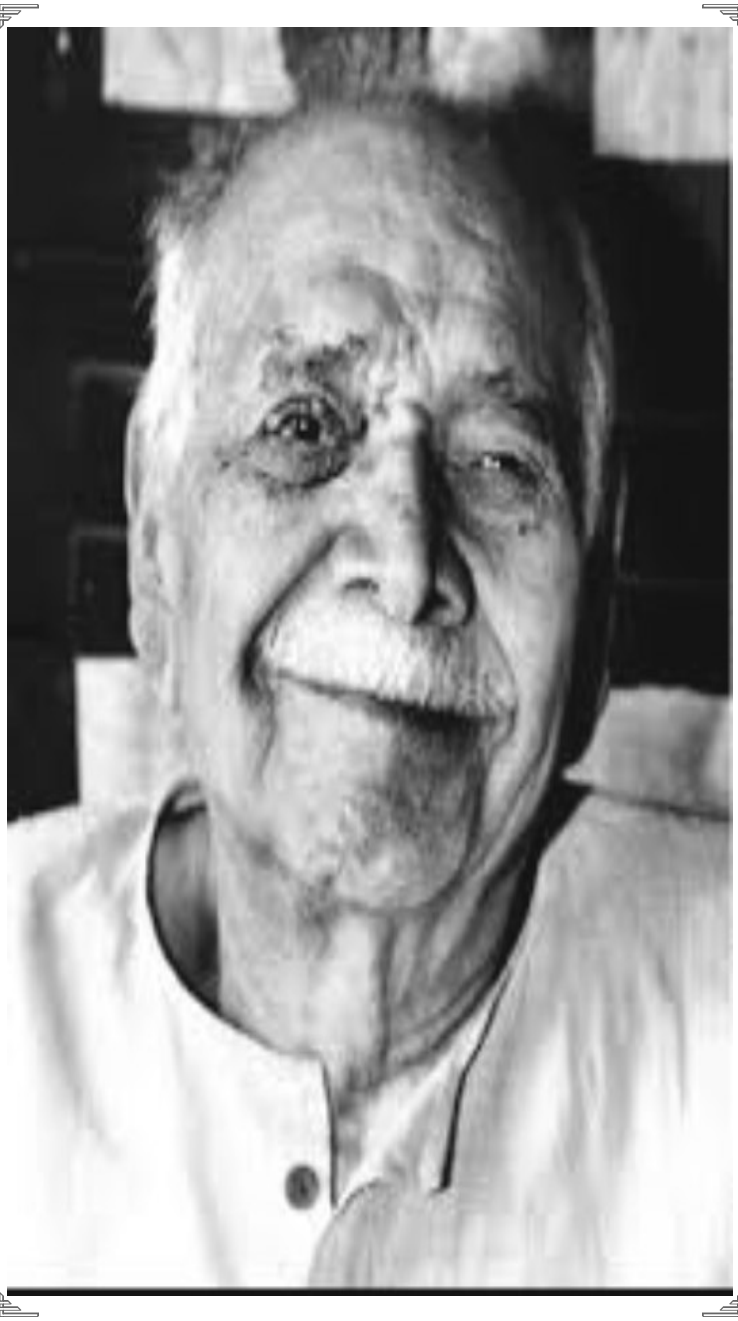

राम शरण शर्मा

(26 नवम्बर 1919 - 20अगस्त 2011)

सुप्रसिद्ध इतिहासकार रामशरण का जन्म 26 नवम्बर 1919 को बिहार, बेगुसराय जिले के बरोंरी नामक ग्राम में एक गरीब परिवार में हुआ था । उनके पिताजी को रोजी-रोटी के लिये काफी संघर्ष करना पड़ा था, बड़ी मुश्किल से मैट्रिक तक की उनकी शिक्षा की व्यवस्था कर पाये । इसलिये आगे की पढ़ाई उन्होंने छात्रवृत्ति तथा ट्यूशन के भरोसे पूरी की । उन्होंने लन्दन वि.वि. से पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की तथा पटना, आरा तथा भागलपुर कॉलेज में अध्यापन किया । वे 1958 से 1973 तक पटना विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफेसर तथा डीन के रूप में कार्य किये। इसी बीच 1972 से 1977 तक वे भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् के संस्थापक चयेरमेन रहे ।

प्रमुख कृतियाँ - प्रचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं, शूद्रों का प्राचीन इतिहास, भारत का प्राचीन अतीत, आर्यों की खोज, भारत में समांतवाद, पूर्व मध्यकालीन भारत का सामंती समाज और संस्कृति तथा प्रारम्भिक भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास उनकी प्रमुख रचनाएं हैं ।

पुरस्कार एवं सम्मान - 1989 में जवाहर लाल नेहरु पुरस्कार, 1987 में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बाम्बे द्वारा केम्पबेल में मोरियल गोल्ड मेडल, भारतीय इतिहास कांग्रेस द्वारा बाइनयन नेशनल एवार्ड और 2001 में उन्हें ऐशियाटिक सोसायटी द्वारा उत्कृष्ट इतिहासकार के लिए हेमचंद राय चौधरी स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया ।

पं. रविशंकर

पं. रविशंकर

(07 अप्रैल 1920 - 11 दिसम्बर 2012)

भारत के सबसे प्रसिद्व सितार वादक पंडित रविशंकर का जन्म 7 अप्रैल, 1920 को पश्चिम बंगाल के एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था । उनके पिता एक प्रख्यात वकील थे । बड़े भाई उदयशंकर उस समय के प्रसिद्ध नर्तक थे यहीं उन्होंने अपने बड़े भाई की मंडली में सितार बजाना शुरू किया । 1938 में पंडित रविशंकर ने अपने गुरु (उस्ताद) अलाउद्दीन खाँ की देखरेख में सितार वादन का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 1950 के दशक में ऑल इंडिया रेडियो के संगीत निर्देशक बने । 1953 में पंडित रविशंकर ने सोवियत रूस की यात्रा की इसके बाद 1956 से यूरोपीय देशों में अनेक कार्यक्रम दिये इससे उन्हें भारत ही नहीं पूरी दुनिया में अपार सम्मान प्राप्त हुआ ।

पुरस्कार एवं सम्मान - भारतीय संगीत को दुनिया भार में प्रसिद्धि दिलाने के कारण उन्हें 1999 में भारत सरकार का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया ।

कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् 2009 में उन्हें पद्म भूषण, तदन्तर पद्म विभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया । साथ ही उन्हें पाँच बार ग्रेमी पुरस्कार से भी नवाजा गया ।

विक्रम साराभाई

विक्रम साराभाई

(12 अगस्त 1919 - 30 दिसम्बर 1971)

महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई का पूरा नाम विक्रम अंबालाल साराभाई था । उनका जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में हुआ था । डॉ. साराभाई अहमदाबाद के एक बड़े उद्योगपति के सुपुत्र थे, उनके पिता अंबालाल साराभाई कई बड़े उद्योगों के मालिक थे । इंटर मिडियट की पढ़ाई के बाद विक्रम साराभाई इंग्लैण्ड चले गये वहाँ उन्होंने कैम्ब्रिज वि.वि. के सेंट जॉन कॉलेज में उच्च-शिक्षा प्राप्त की । लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण वे भारत लौट आये 1947 में उष्ण कटिबंधीय अक्षांश में कास्मिक किरणों की खोज शीर्षक शोध पर उन्हें पी.एचडी .की उपाधि से सम्मानित किया गया । उन्होंने अहमदाबादग में भौतिक अनुसंधान प्रयोग शाला की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना विक्रम सारा भाई की महान उपलब्धियों में से एक है । इन्होंने 86 वैज्ञानिक शोध पत्र लिखे एवं 40 संस्थान खोले ।

सम्मान - उन्हें विज्ञान एवं अभियात्रिकी के क्षेत्र में इन्हें भारत सरकार द्वारा पदम भूषण से सम्मानित किया गया तथा सन् 1972 में उन्हें मरणोपरान्त पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया ।

सितारा देवी

सितारा देवी

(8 नवम्बर 1920, 25 नवम्बर 2014)

भारत की प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना सितारा देवी का जन्म 8 नवम्बर 1920 को कोलकाता में हुआ था । उनके पिता का नाम सुखदेव महाराज था जो एक कत्थक नर्तक और संस्कृत के विद्वान थे । उन्होंने कत्थक नृत्य गुरु लच्छू महाराज से सीखे थे । जब वह 16 साल की थी,तब उनकी नृत्य कला को देखकर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें नृत्य साम्राग्निी कहकर सम्बोधित किया था । उन्होंने अपनी नृत्य कला से भारत और विश्व के विभिन्न भागों में दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया । उन्होंने कई नृत्य प्रस्तुतियाँ देने के साथ कुछ हिन्दी फिल्मों में अभिनय भी किया था जिनमें नगीना, रोटी, वतन और अंजली प्रमुख है ।

25 नवम्बर 2014 को 94 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया ।

सम्मान एवं पुरस्कार - सितारा देवी को उनकी कला और नृत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 1970 में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया । वर्ष 1969 में उन्हें संगीत नाटक अकदामी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।